प्रेरणा स्रोत
स्व. श्री यशवंतजी घोड़ावत

RNI No. MPHIN/2018/76422

बेबाकी के साथ.. सच

माही की गूंज

Email-mahikigunj@gmail.com

सुविचार

अच्छे शब्दों के प्रयोग से बुरे लोगों का भी दिल जीता जा सकता है।
भगवान बुद्ध

वर्ष-02, अंक - 23 (साप्ताहिक) खवासा, गुरुवार 12 मार्च 2020 पृष्ठ-8, मूल्य -5 रुपए

सोची-समझी रणनीति के तहत हुई दिल्ली की हिंसा: भाजपा

नई दिल्ली, एजेंसी। भाजपा ने कहा है कि दिल्ली में हुई हिंसा सोची-समझी रणनीति का हिस्सा थी और इसमें कट्टरपंथियों का खुला 'नाच' हुआ है, इसलिए यह देखने की जरूरत है कि इस हिंसा को फैलाने की साजिश कहां से रची गई।

लोकसभा में बुधवार को दिल्ली हिंसा पर नियम 193 के तहत चर्चा में हिस्सा लेते हुए भाजपा की मीनाक्षी लेखी ने कहा कि यह हिंसा सोची-समझी साजिश थी। यही वजह है कि घरों की छतों पर ईंट-पत्थर एकत्र किए गये थे और गुलेल के माध्यम से दूसरे समुदाय के लोगों पर पत्थर बरसाए जा रहे थे और उनके घरों को गुलेल से पेट्रोल बम फेंककर जलाया जा रहा था।

उन्होंने कहा कि दिल्ली में माहौल बिगड़ना पिछले वर्ष 14 दिसम्बर से शुरू हुआ जब कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने यहां रामलीला मैदान की रैली में कहा कि नागरिकता (संशोधन) कानून (सीएए) के खिलाफ आरपार की लड़ाई लड़नी है। इसके बाद दिल्ली में लोग शाहीन बाग में धरने पर बैठ गये। देश के कई इलाकों में उपद्रव हुआ। दिल्ली में भी लोग सड़कों पर उतर आए। इन दंगों में 51 लोगों की मौत हुई है और दंगों में घायल 500 लोगों का इलाज चल रहा है।

कोरोना संक्रमित व्यक्तियों की संख्या हुई साठ

नई दिल्ली, एजेंसी। घातक विषाणु कोरोना-कोविड-19 के संक्रमण से केरल में नए आठ और राजस्थान तथा दिल्ली में एक-एक नए मामले की पुष्टि होने से देश में इससे संक्रमित हुए लोगों की संख्या साठ पर पहुंच गई है।

केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने बुधवार को बताया कि पूरे देश में कोरोना संक्रमण के 10 नए मामले सामने आये हैं। इनमें आठ केरल से तथा दिल्ली और राजस्थान से एक- एक हैं। इसके साथ ही पूरे देश में कोरोना से संक्रमित लोगों की संख्या 60 हो गई है।

कल तक देश में कोरोना विषाणु से संक्रमित कुल 50 मामलों की पुष्टि हुई थी। देश में कोरोना संक्रमण से मौत का कोई मामला नहीं है।

लोकसभा में कांग्रेस के सात सदस्यों का निलंबन समाप्त

नई दिल्ली, एजेंसी। लोकसभा ने कांग्रेस के सात सदस्यों का निलंबन तत्काल प्रभाव से समाप्त कर दिया है।

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला के कक्ष में बुधवार को हुई सर्वदलीय बैठक के बाद कांग्रेस तथा अन्य विपक्षी दलों के नेताओं ने सदन के सुचारू संचालन में सहयोग का आश्वासन दिया तथा पांच मार्च को निलंबित सात सदस्यों का निलंबन तत्काल प्रभाव से समाप्त करने की मांग की।

संसदीय कार्य राज्य मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने सदन की कार्य संचालन नियमावली के नियम 374(2) के तहत कांग्रेस के गौरव गोगोई, टीएन प्रतापन, डीन कुरियाकोस, बेनी बेहनान, मणिकम टैगोर, गुरजीत सिंह औजला और राजमोहन उन्नियन का निलंबन वापस लेने का प्रस्ताव किया, जिसे सदन ने ध्वनिमत से पारित कर दिया।

महिला दिवस केवल दिखावा, ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएं आज भी प्रताड़ित

दो मामलो में महिलाओं के साथ हुई मारपीट को लेकर पुलिस कर रही दिखावे की कार्रवाई

माही की गूंज, पेटलावद।

पूरा देश महिला दिवस पर महिलाओं की समय दर समय बढ़ती सफलता के बखान में लगा है। वहीं ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं के साथ आज भी न्याय नहीं हो पाता है। पुलिस चौकी में पहुंचने वाले महिला संबंधी विवाद में पुलिस जिसकी लाठी उसकी भैंस की तर्ज पर काम पर महिलाओं के साथ मारपीट करने वालों को सहयोग करती है। साथ ही पीडित महिला के परिवार और सहयोगियों और पीडित परिवार पर दबाव बनाकर मामले को रफ़-दफ़ कर देती है। झाबुआ जिले के चौकी-थानों पर इस प्रकार के मामले आम है। वहीं पुलिस इन मामलों को आदिवासियों की लेन-देन वाली परम्परा से जोड़कर मामले में होने वाली कार्यवाही के नाम पर खानापूर्ति कर देती हैं। ऐसे ही दो अलग-अलग मामले पेटलावद थाने के अन्तर्गत आने वाली सारंगी और बामनिया चौकी के सामने आए हैं। जहां महिलाओं के साथ हुई मारपीट की घटना के बाद दोनों ही चौकी प्रभारियों ने उचित कार्यवाही नहीं की। जिसके बाद दोनों मामलों में महिलाओं के परिजनों को पुलिस अधीक्षक झाबुआ और एसडीओपी पेटलावद को शिकायत दर्ज कराने पर मजबूर होना पड़ा।

केस नं.01 सारंगी में ठेड़छाड़ कर बुरी तरह से महिला को पीटा, पुलिस ने एक न सुनी, महिला अस्पताल में भर्ती

सारंगी चौकी के ग्राम छोटा बोलासा की घटना है। जहां प्रेमबाई पति रूपा पारगी (बदला हुआ नाम) नाम की महिला के साथ उसके परिवार के धुलिया पारगी ने छेड़छाड़ कर बुरी तरह से मारपीट की। महिला पिछले दस दिनों से जिंदगी और मौत की जंग सरकारी और निजी अस्पताल में लड़ती रही, लेकिन मामला दर्ज होने के बाद भी पुलिस ने महिला को लगी चौट को गंभीरता से नहीं लेते हुए मामूली धारा में प्रकरण बनाकर पीडित महिला के परिवार को रवाना कर दिया। चार-बार गुहार लगाने के बाद भी सारंगी पुलिस में पदस्थ सफी हैडसाहब ने उनकी एक नहीं सुनी और मामले को ये कह कर समाप्त कर दिया कि महिला के परिवार वाले दूसरे पक्ष से पैसे लेने के लिए दबाव बना रहे हैं। पीडित महिला ने 07 मार्च को पुलिस थाना पेटलावद और 09 मार्च एसडीओपी पेटलावद को लिखित आवेदन पेश कर घटना का पूरा विवरण दिया कि किस तरह से विपक्षी धुलिया पारगी ने उसके साथ गलत काम करने की कोशिश की और विपक्षी की बात नही मानने पर बुरी तरह से मारपीट की।

पीडित प्रेमबाई के परिजनों ने बताया कि विपक्षी की मारपीट से प्रेमबाई पेट, सिर ,आंख में गंभीर चोटें आई और निजी अंगों से लगातर खून जा रहा हैं। मारपीट के बाद पुलिस ने मेडिकल बनाकर पेटलावद स्वास्थ्य केन्द्र पहुंचा दिया। जहां से उसे अन्यत्र रैफ़र किया गया। महिला के परिवार वालों ने आंख का इलाज झाबुआ जबकि बाकी इलाज के लिए पेटलावद के निजी अस्पताल में भर्ती किया गया। परिजनों का आरोप है सारंगी पुलिस द्वारा जानकारी देने के बाद भी मामले को गंभीरता से नहीं लिया और एक बार भी अस्पताल आकर नहीं देखा। महिला के परिजनों का आरोप है कि विपक्षी आदतन अपराधी है और कई बार इस प्रकार से दूसरों से भी मारपीट कर चुका है। लेकिन हर बार पैसे की लेने-देन कर बच जाता है। वहीं जब विपक्षी के पिता से महिला के ईलाज करवाने की गुहार लगाई तो कहा कि मर जाएगी तो हम गेंहू के खेत में आग लगाकर जला देगें और कह देगें की आग बुझाने में ये भी जलकर मर गई। अब महिला अपने सुसराल जाने मे भी डर रही हैं, क्योंकि उसको उसी के परिवार से जान का खतरा हैं। पीडित महिला ने पुलिस से गुहार लगाकर विपक्षी पर बलात्कार करने का प्रयास करने सहित अन्य कानूनी धाराओं में कड़ी कार्यवाही कर न्याय दिलाने की मांग की है।

केस नं.02 बामनिया में राणा परिवार पर योजनाबद्ध तरीके से किया हमला, महिला का हाथ तोड़ा, पुलिस न घटना स्थल गई न ही बयान लिए

दूसरा मामला पुलिस चौकी बामनिया का है। जहां चौकी से कुछ दुरी पर स्थित राणा परिवार पर कुछ लोगों ने योजनाबद्ध तरीके से जान लेवा हमला किया। लेकिन पुलिस ने मामले की जानकारी मिलने के बाद भी समय रहते कार्यवाही नहीं की और राणा परिवार की दो महिलाएं बुरी तरह से घायल हो गई। सारंगी पुलिस की तरह बामनिया पुलिस ने भी मामले में आरोपी पक्ष का सहयोग कर प्रकरण में मामूली धारा लगा कर इतिश्री कर ली। बामनिया चौकी से न्याय नहीं मिलने पर घायल महिलाओं के परिजनों ने पुलिस अधीक्षक झाबुआ को आवेदन देकर कार्यवाही की मांग की। पीड़ित परिवार के नूरा राणा ने अपने आवेदन में बताया कि 01 मार्च की सुबह लगभग 11.30 बजे नामजद आरोपी हथियार लेकर पेटलावद रोड बामनिया स्थित घर पर हथियार सहित पहुंचे और जानलेवा हमला कर दिया। जिसमें नूरा की पुत्री श्यामा और कांति बुरी तरह घायल हो गए। नूरा राणा ने अपने आवेदन में बताया कि जब विपक्षियों ने हमला किया, तब मौके पर भतीजा भी आ गया। जिसने हमलावरो को देख कर स्वयं चौकी पर जाकर घटना की जानकारी दी, लेकिन चौकी पर मौजूद स्टाफ टस से मस नहीं हुआ। जबकि पीडित परिवार ने इस प्रकार के हमले का अंदेशा जताते हुए 27 फरवरी को लिखित आवेदन बामनिया चौकी पर दिया था। जिसके बाद भी पुलिस ने उचित कार्यवाही नहीं की और विपक्षियों को

उक्त हमले के लिए उकसाने में मदद की। हमले में पीडित परिवार की महिला कांति राणा का एक हाथ टूट गया और श्यामा राणा के सर में गंभीर चोट लगी। शिकायतकर्ता का आरोप है कि हमले के दौरान कांति के पास रखी नगदी जो कि उसे उसकी पुत्री के नहां से नोतरे मामेरे में आई थी, इस रकम को संभालने के लिए दी थी, वो भी हमलावर अपने साथ ले गए। घटना के बाद पुलिस न तो घटना स्थल पर गई, न ही मौका पंचनामा बनाया, न ही किसी के बयान दर्ज किए। साथ ही बिना मेडिकल जांच के देखे परखे मामूली धाराओं में प्रकरण दर्ज कर लिया। जबकि दोनों घायल महिलाओं को गंभीर हालत में पेटलावद स्वास्थ्य केन्द्र से अन्यत्र रैफ़र कर दिया गया। मामले में बामनिया पुलिस का कहना है कि हमारे द्वारा रिपोर्ट के आधार पर कार्यवाही कर दी गई है। मेडिकल रिपोर्ट आने के पर नियमानुसार कार्यवाही को आगे बढ़ाएंगे। वहीं शिकायतकर्ता का आरोप है कि बामनिया पुलिस अब हमको ही धमका रही है कि हमने जो कार्यवाही करना थी, कर दी। अगर ज्यादा बात बढ़ाई तो क्रास रिपोर्ट लिखकर तुमको अंदर कर देगें। पुलिस अधीक्षक ने मामले में शिकायत मिलने के बाद उचित कार्यवाही का आश्वासन दिया है।

दोनों ही मामलों में महिलाओं को गंभीर चोटें लगी और महिलाओं के साथ मारपीट हुई। लेकिन पुलिस ने महिलाओं के साथ हुए इस कृत्य को सामान्य घटना के रूप में लेते हुए आरोपी पक्ष को पुरी तरह सुरक्षित करने का प्रयास किया, जिसके पीछे पुलिस की मंशा क्या रही होगी इसकी जांच होना जरूरी है।

भाजपा में शामिल हुए सिंधिया, कांग्रेस को बताया जड़वत पार्टी

नई दिल्ली, एजेंसी। कांग्रेस के दिग्गज नेता, पूर्व केन्द्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया बुधवार को विधिवत रूप से भाजपा में शामिल हो गए और उन्होंने कांग्रेस के राष्ट्रीय एवं मध्यप्रदेश के नेतृत्व पर कड़ा प्रहार करते हुए कहा कि आज की कांग्रेस वास्तविकता से इन्कार करती है और जड़वत हो गई है। जहां नये नेतृत्व को सही मान्यता नहीं मिल सकती है।

भाजपा के केन्द्रीय कार्यालय में पार्टी अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा ने मीडिया के भारी जमावड़े के बीच सिंधिया को पार्टी की सदस्यता पर्ची सौंपी। साथ ही अंगवस्त्र पहना और गुलदस्ता देकर उनका स्वागत किया। भाजपा अध्यक्ष ने सिंधिया को परिवार का अंग बताते हुए कहा कि उन्हें पार्टी की मुख्यधारा में भूमिका निभाना है।

इस अवसर पर केन्द्रीय पेट्रोलियम मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान, पार्टी के उपाध्यक्ष एवं मध्यप्रदेश के प्रभारी विनय सहस्त्रबुद्धे, उपाध्यक्ष वैजयंत पांडा, महासचिव अरुण सिंह और अनिल जैन तथा भाजपा की मध्यप्रदेश इकाई के अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा उपस्थित थे।

सिंधिया पिछले 18 साल से कांग्रेस में थे और वह केन्द्रीय मंत्री भी रहे थे। वह पिछले कुछ समय से पार्टी से नाराज चल रहे थे। उन्होंने अनुच्छेद 370 के हटाये जाने का खुले तौर पर समर्थन किया था, जबकि कांग्रेस ने इसका विरोध किया था।

इस अवसर पर नड्डा ने सिंधिया की दादी एवं ग्वालियर राजघराने की राजमाता विजय राजे सिंधिया को याद करते हुए कहा कि उनका भारतीय जनसंघ और भाजपा की स्थापना में बहुत बड़ा योगदान रहा है। उन्होंने कहा कि राजमाता हमारी आदर्श, दृष्टि और दिशा-निर्देशक रही हैं। उनके पौत्र के इस पार्टी में शामिल होने पर वह बहुत प्रसन्न है और उनका अभिनंदन करते हैं।

सिंधिया ने भी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह और नड्डा के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उन्हें खुशी है कि मोदी ने उन्हें अपने परिवार में आमंत्रित किया और एक स्थान दिया। उन्होंने कहा कि इन नेताओं के दिखाये रास्ते पर चल कर भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर काम करेंगे।

सिंधिया की घर वापसी हुई: विजयवर्गीय

भाजपा महासचिव कैलाश विजयवर्गीय ने वरिष्ठ नेता ज्योतिरादित्य सिंधिया के भाजपा में शामिल होने पर स्वागत, वंदन और अभिनंदन करते हुए आज कहा कि उनके भाजपा में आने को वे उनकी (सिंधिया) की घर वापसी मानते हैं। विजयवर्गीय ने ट्वीट कर कहा कि सिंधिया का भाजपा परिवार में हार्दिक स्वागत है। वे जनसंघ की जनक रहीं राजमाता विजयाराजे सिंधिया के पोते हैं और उनके भाजपा में आने को वह उनकी घर वापसी मानते हैं। उन्होंने कहा कि सिंधिया यहां ज्यादा बेहतर ढंग से सम्मान के साथ जनसेवा कर सकेंगे, ये उनका विश्वास है।

दिग्विजय ने भी दी बधाई

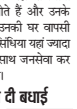

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने ज्योतिरादित्य सिंधिया को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) में शामिल होने पर बधाई दी है। सिंह ने ट्वीट में लिखा है रज्योतिरादित्य सिंधिया जी को भाजपा में शामिल होने पर बधाई। भाजपा के मप्र के नेताओं को भी मेरी हार्दिक बधाई।

भाजपा ने घोषित किए 11 उम्मीदवार, सिंधिया को मप्र से टिकट

भाजपा ने राज्यसभा के द्विवार्षिक चुनावों में आठ राज्यों से 11 उम्मीदवारों की बुधवार को घोषणा की। कांग्रेस छोड़कर भाजपा में बुधवार को शामिल हुए ज्योतिरादित्य सिंधिया को मध्यप्रदेश से तथा छत्रपति शिवाजी के वंशज उदयन राजे भोंसले को महाराष्ट्र से उम्मीदवार बनाया गया है।

पार्टी ने असम से कांग्रेस के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष रहे भुवनेश्वर कलिता और बोडो पीपुल्स पार्टी के बुस्वजीत डाइमरी को टिकट दिया है। अन्य उम्मीदवारों में बिहार से विवेक ठाकुर, गुजरात से अभय भारद्वाज एवं श्रीमती रमीलाबेन बारा, झारखंड से प्रदेश भाजपा अध्यक्ष दीपक प्रकाश, मणिपुर से संबा महाराजा, राजस्थान से राजेन्द्र गेहलोत तथा महाराष्ट्र से रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया (आठवले) के नेता एवं केन्द्रीय मंत्री रामदास आठवले शामिल हैं। राज्यसभा के द्विवार्षिक चुनाव 26 मार्च होने हैं।

झाबुआ के दिग्गी का होगा अंत या फिर कोई बनेगा सिंधिया

माही की गूंज, झाबुआ। धर्मेन्द्र पंवाल

प्रदेश की राजनीति इन दिनों अपने चरम पर है। कारण ज्योतिरादित्य सिंधिया का कांग्रेस त्यागकर भाजपा में शामिल होना है। कांग्रेस पर आरोप है कि उसने चुनाव पूर्व ज्योतिरादित्य सिंधिया का उपयोग कर सिंधिया की ही मदद से प्रदेश में अपना 15 वर्षीय वनवास समाप्त किया तथा उसके पश्चात सिंधिया को लुप लाईन में डाल दिया। उपेक्षित सिंधिया व फैस स्वयं के लिये पर्याप्त सम्मान तलाशने भाजपा की शरण में गए और अंततः कांग्रेस प्रदेश में औंधे मुंह गिर गई। इसके पीछे दिग्विजयसिंह की अतिमहत्वकांक्षा भी बताई जा रही है। राजनीतिक विश्लेषकों के अनुसार दिग्विजयसिंह जिन्हें प्रदेश के मतदाता पसंद ही नहीं करते, के ऊपर कांग्रेस ने दांव तो नहीं खेला परंतु सरकार बनने के बाद दिग्विजयसिंह किसी भी पद पर न रहते हुए भी पर्दे के पीछे बहुत कुछ थे। कांग्रेस आलाकमान ने भी अपने बूढ़े हो चुके शेर की अति महत्वाकांक्षा को नजर अंदाजा किया और मध्यप्रदेश गंवा बैठेगी।

कुछ ऐसी ही स्थितियां झाबुआ की कांग्रेस राजनीति में भी है। दिग्विजय सिंह की भांति एक बूढ़ा शेर कांग्रेस के पास झाबुआ में भी है। बचपन से अपने भाग्य को भुनाकर चुनाव जीतते आने की वजह से प्रदेश ही नहीं अपितु राष्ट्रीय स्तर के नेता इस झाबुआई दिग्गी को आवश्यकता से अधिक न सिर्फ सम्मान देते अपितु इसकी बातों में हामी भरने में देर नहीं करते है। झाबुआई दिग्गी अपने क्षेत्र के कई सारे सिंधियाओं को एकत्र करता चुनाव के समय जमकर कार्य कराता, चुनाव जीतने के पश्चात सभी को लुप लाईन में डाल देता। यही कारण है कि अंचल से कोई कांग्रेसी लंबे समय तक आगे नही बढ़ पाया। झाबुआई दिग्गी का पुत्र मोह भी सभी के सामने है। पुत्र मोह में झाबुआई दिग्गी ने अंचल के सिंधियाओं की विधानसभा चुनावों में बलि चढ़ा ही दी थी, परंतु दांव उल्टा पड़ गया और झाबुआ के सिंधियाओं की मेया पार हो गई, लेकिन झाबुआई दिग्गी के पुत्र की नैया पलट गई। आक्रोश सभी सिंधियाओं में था, परंतु दिग्गी की हठ के आगे बोलने की हिम्मत किसी में नहीं थी। एक सिंधिया जहर सीना ताने खड़ा था, जिसने झाबुआई दिग्गी के पुत्र को आईना दिखाया, किंतु उसके बाद सब कुछ भूलकर दिग्गी एक बार पुनः पार्टी हाईकमान का दबाव बनाकर सीना ताने खड़े सिंधिया के सामने मिमियाया और कुर्सी पा बैठा। हालांकि झाबुआई सिंधियाओं में दिग्गी के लिये आक्रोश कूट-कूट कर भरा है और प्रदेश के जैसे अंचल में एन चुनाव से पूर्व सिंधियाओं के सब्र का बांध टूटे उससे पूर्व झाबुआई दिग्गी को पार्टी द्वारा सेवानिवृत्ति देना आवश्यक है। अन्यथा वर्तमान में प्रदेश कांग्रेस जिस हाल में, ऐसी स्थिति जिले में भी बन सकती है। और ह्रां झाबुआई दिग्गी टिक्टर पर सफ़र देने में भी अक्षम है।

प्रदेश सरकार ने चार जिलों के कलेक्टर बदले

भोपाल, एजेंसी। मध्यप्रदेश सरकार ने बुधवार भारतीय प्रशासनिक सेवा के आधा दर्जन से अधिक अधिकारियों के तबादला किए, जिनसे कलेक्टर भी प्रभावित हुए हैं। आधिकारिक सूत्रों के अनुसार ग्वालियर कलेक्टर अनुराग चौधरी को राज्य मंत्रालय भोपाल में उप सचिव बना दिया गया है। उनके स्थान पर कौशलेंद्र विक्रम सिंह को ग्वालियर भेजा गया है, जो अभी तक विदिशा जिला कलेक्टर थे।

वृत्तिकर जमा करने की अंतिम तिथि 31 मार्च

भोपाल। मध्यप्रदेश वृत्तिकर संशोधन अधिनियम 2018 के अंतर्गत वर्ष 2019-20 के लिये वृत्तिकर जमा करने की अंतिम तिथि 31 मार्च 2020 है। जीएसटी से पंजीयत व्यवसायी, निजी विद्यालय, चिकित्सक, चिकित्सा व्यवसायी, चार्टर्ड एकाउण्टेंट, वकील, बीमा एजेंट, मदिरा दुकान संचालक, चिटफण्ड संचालित वाली संस्थायें या व्यक्ति सहकारी सोसायटी, ट्रांसपोर्टर, कोचिंग संस्थान, निजी चिकित्सालय, जिमसेंटर, धर्मकांटा, होटल, लाज, विवाह, मंडप, वीडियो पार्लर, फाइनेंस, कम्पनी, क्लीनिक, लैब, पैथोलॉजी, किओस्क सेंटर से जुड़े व्यवसाईयों को 31 मार्च 2020 तक अनिवार्यतः वृत्तिकर जमा कराना होगा।

पांच दिन के प्रवास पर लखनऊ गए राज्यपाल

भोपाल। कमलनाथ सरकार पर छाए संकट को टालने के लिए मंत्रिमंडल विस्तार और निगम-मंडल में नियुक्तियों के फार्मूले पर क्रियान्वयन की रणनीति बनी है। इसके तहत होली के पहले कुछ असंतुष्टों को मंत्री बनाने की चर्चा थी, लेकिन अब मंत्रिमंडल विस्तार झमेले में पड़ता दिख रहा है। राज्यपाल लालजी टंडन रविवार को पांच दिन के प्रवास पर लखनऊ चले गए हैं। उनका यह प्रवास पूर्व से तय था। वे 12 मार्च को भोपाल लौटेंगे। इसलिए माना जा रहा है कि मंत्रिमंडल का विस्तार फिलहाल उलझन में है। हालांकि 16 मार्च से शुरू हो रहे बिस के बजट सत्र से पहले विस्तार किया जा सकता है।

मान-धन योजना में किसानों को मिलेगा लाभ

भोपाल। किसान मान-धन योजना किसानों के वृद्धावस्था संरक्षण और लघु तथा सीमांत किसानों की सामाजिक सुरक्षा के लिए प्रारंभ की गई है। योजना की परिपक्वता पर किसानों को 60 वर्ष की आयु प्राप्त करने के उपरांत प्रति माह 3 हजार रुपए पेंशन मिलेगी। यदि किसान की मृत्यु हो जाती है तो किसान के पति या पत्नी परिवार पेंशन के रूप में 50 प्रतिशत पेंशन पाने के हकदार होंगे। परिवारिक पेंशन केवल पति या पत्नी के लिए लागू होगी। किसान कल्याण तथा कृषि विकास के संयुक्त संचालक ने बताया कि योजना के अन्तर्गत लघु सीमांत कृषकों को 60 वर्ष की आयु प्राप्त करने तक प्रतिमाह 55 रुपए से 200 रुपए तक योगदान जमा करना होगा।

पूर्व नेता प्रतिपक्ष अजय सिंह ने दी होली की बधाई

भोपाल। पूर्व नेता प्रतिपक्ष अजय सिंह ने होली के शुभ अवसर पर प्रदेशवासियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि नोवल कोरोना वायरस के खतरे को देखते हुए सभी लोग इस वर्ष रंग और गुलाल की होली से परहेज रखें। पूर्व नेता प्रतिपक्ष अजय सिंह ने कहा कि इससे हम संभावित कोरोना वायरस के संक्रमण को रोक पाएंगे। आपसी मेल-मुलाकात और प्रेम-भाव के साथ एक-दूसरे को शुभकामनाएं और नमस्ते कर-के इस वर्ष की होली मनाएं। इससे हम स्वयं को और अपने परिजनों, मित्रों को सुरक्षित रखेंगे और यही इस वर्ष की होली में सच्ची शुभकामनाएं होगी।

राज्यसभा चुनाव को लेकर भोपाल में भाजपा ने बनाई रणनीति, होली के बाद हो सकती नामों की घोषणा

रास चुनाव के बहाने आर-पार के मूड में भाजपा

भाजपा ने दो सीटों पर चुनाव लड़ने का लिया फैसला चार प्रत्याशियों के नाम बंद लिफाफे में दिल्ली भेजे

भोपाल

मध्य प्रदेश की 3 राज्यसभा सीटों के लिए होने वाले चुनाव में भाजपा आर-पार के मूड में है। रविवार को पार्टी की बैठक के बाद निर्णय लिया गया कि 2 सीटों पर उम्मीदवार उतारे जाएंगे। 2 सीटों के लिए 4 नामों का पैनल दिल्ली केंद्रीय नेतृत्व को भेज दिया गया है। अब 2 उम्मीदवार कौन होंगे, इसका फैसला भाजपा की केंद्रीय चुनाव समिति करेगी। कयास लगाए जा रहे हैं कि होली के बाद नाम की घोषणा हो जाएगी।

राज्य सभा की तीनों सीटों पर 26 मार्च को चुनाव होना है। पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह, भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रभात झा, पूर्व केंद्रीय मंत्री सत्यनारायण जटिया का 9 अप्रैल को राज्यसभा में कार्यकाल पूरा हो रहा है। कहा जा रहा है कि इस चुनाव में कमलनाथ सरकार की अग्निपरीक्षा होगी है। कांग्रेस में भी प्रत्याशियों के नामों की घोषणा होना बाकी है।

भाजपा का भविष्य की संभावनाओं को टटोलने के लिए कदम

रविवार को भाजपा के प्रदेश कार्यालय में प्रदेश अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा की अध्यक्षता में बैठक आयोजित की गई। शर्मा ने बैठक के बाद कहा कि वे जानते हैं कि अभी संख्याबल के हिसाब से भाजपा को एक सीट मिल सकती है। लेकिन, भविष्य में संभावनाओं को देखते हुए पार्टी ने 2 सीटों पर चुनाव लड़ने का फैसला किया है। यानी आने वाले समय में मध्य प्रदेश में चल रहा सियासी ड्रामा और दिलचस्प होने वाला है।

ये है राज्यसभा का समीकरण

- विधानसभा में विधायकों की संख्या के आधार पर राज्यसभा सीट का निर्धारण होता है।
- एक रास सीट के लिए 58 विधायकों की आवश्यकता होती है।
- मप्र में 2 विधायकों के निधन के बाद खाली हुई सीट के अलावा 228 विधायक हैं।
- विधानसभा में कांग्रेस के पास 115 विधायक हैं। (सरकार में मंत्री 1 निर्दलीय भी शामिल)
- सरकार को अन्य 3 निर्दलीय विधायक, 2 बसपा और 1 सपा विधायक का भी समर्थन।
- कांग्रेस के हिस्से में 115 विधायकों और 6 निर्दलीय के समर्थन से 2 रास सीट मिलेंगी।
- भाजपा के पास 107 विधायक हैं। वोटिंग में महज एक सीट ही हिस्से में आएगी।

राम माधव को मिल सकती है एमपी से एंट्री

राज्य सभा के लिए जिन नेताओं के नाम चर्चा में हैं, उनमें पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव कैलाश विजयवर्गीय, राज्यसभा सदस्य प्रभात झा, विनोद गोटिया, पूर्व मंत्री लाल सिंह आर्य के अलावा ओपी धुर्वे शामिल हैं। संघ की ओर से अरविन्द मेठोदर का नाम भी चलाया जा रहा है। इस बात की भी चर्चा है कि राम माधव को मध्यप्रदेश से राज्यसभा में भेजने का फैसला भाजपा ले सकती है।

प्रदेश में राज्यसभा की 11 सीटें वर्तमान में 8 भाजपा के पास

प्रदेश में राज्यसभा की कुल 11 सीटें हैं। वर्तमान में भाजपा के पास 8 और कांग्रेस के पास 3 सीटें हैं। भाजपा के राज्यसभा सदस्य एमजे अकबर, थावरचंद गेहलोत, सत्यनारायण जटिया, प्रभात झा, सुमेर प्रधान, अजय प्रताप सिंह, कैलाश सोनी और संपतिया उइके हैं। कांग्रेस के राज्यसभा सदस्यों में दिग्विजय सिंह, विवेक तन्खा और राजमणि पटेल शामिल हैं।

कांग्रेस को दूसरी सीट जीतने के लिए 2 एमएलए की जरूरत होगी

मध्य प्रदेश की 230 सदस्यों वाली विधानसभा में इस वक्त 228 सदस्य हैं। 2 विधायकों के निधन के बाद यह सीटें खाली हैं। राज्यसभा चुनाव में कांग्रेस के 2 प्रत्याशियों को विधानसभा में मौजूदा संख्या बल के हिसाब से 115 विधायकों के मत चाहिए, जिसमें कांग्रेस को निर्दलीय विधायक और मंत्री प्रदीप जायसवाल समेत 2 विधायकों की जरूरत होगी। वहीं, भाजपा को चुनाव में दूसरे प्रत्याशी को जिताने के लिए अपने विधायकों के अलावा 9 अन्य एमएलए के वोटों की आवश्यकता होगी।

16 मार्च से राज्य विधानसभा का महत्वपूर्ण बजट सत्र

दूसरी ओर कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी राज्यसभा चुनाव के लिए अपने प्रत्याशियों के चयन की कवायद कर रही है। राज्यसभा चुनाव के लिए नामांकन पत्र दाखिल करने की अंतिम तिथि 13 मार्च है। इस तिथि तक सभी प्रत्याशियों की ओर से नामांकन पत्र दाखिल किए जाना आवश्यक है। इसके अलावा 16 मार्च से राज्य विधानसभा का महत्वपूर्ण बजट सत्र भी शुरू हो रहा है।

कांग्रेस भी सक्रिय

एआईसीसी से भोपाल तक टिकट मंथन में जुटे नेता

भाजपा की ही तर्ज पर कांग्रेस में भी राज्यसभा की दो सीट पर एक नाम चौंकाने वाला आ सकता है। भाजपा को जोर का झटका देने के लिए कांग्रेस ऐन वक्त पर इस नाम का ऐलान कर सकती है। कांग्रेस चौंकाने वाले नाम का खुलासा नामांकन भरे जाने के अंतिम समय में कर सकती है। पूर्व केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया और पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह का राज्यसभा की दो सीटों के लिए तेजी से चल रहा है, लेकिन ऐसा माना जा रहा है कि कांग्रेस इनमें से किसी एक नेता को ड्रॉप कर सकती है। इनमें से किसी एक नेता की जगह पर वह ऐसा चौंकाने वाला चेहरा ला सकती है, जिसमें भाजपा को झटका लग सकता है। कांग्रेस की भोपाल से लेकर दिल्ली तक के कवायद नेता इस पर रणनीति बनाने में जुट गए हैं। यह चेहरा कौन हो सकता है, इसे लेकर मुख्यमंत्री कमलनाथ के साथ ही कांग्रेस के आधा दर्जन राष्ट्रीय नेता लगे हुए हैं। यदि कांग्रेस का यह ऑपरेशन सक्सेस हुआ तो भाजपा को सियासी घमासान के बीच वह बड़ा झटका दे सकती है।

कोरोना का खौफः 86 से 90 के बैच के लिए ट्रेनिंग का अंतिम मौका, प्रमोशन में होगी दिक्कत

16 आईएएस की मिड टर्म ट्रेनिंग टलने के आसार

भोपाल

मध्यप्रदेश के सोलह आईएएस अधिकारी 25 मई से 12 जून के बीच होने वाले चौदहवें चरण फेज पांच की मिड कैरियर ट्रेनिंग पर लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी मसूरी जाएंगे। उधर, देश में पैर पसार रहे कोरोना वायरस के डर से इस ट्रेनिंग पर भी टाले जाने का खतरा मंडरा रहा है। इस प्रशिक्षण के लिए 93 बैच के आईएएस का पहला मौका है। वहीं 92 बैच को दूसरा और 91 बैच को प्रशिक्षण का तीसरा और आखिरी मौका है। 86 से 90 बैच के कुछ अधिकारी जो पहले प्रशिक्षण नहीं ले पाए है वे भी ट्रेनिंग पर जाएंगे। तीनों मौके मिलने के बाद भी प्रशिक्षण नहीं लेने वाले आईएस अफसरों को आगे पदोन्नति में दिक्कत आ सकती है। इसलिए जिन अफसरों का तीसरा और आखिरी मौका है उन्हें प्रशिक्षण पर जाना ही होगा।

दो आईएएस क इंडक्शन ट्रेनिंग पर जाना टला

भोपाल। नौ मार्च से मसूरी में शुरू होने जा रही आईएएस अफसरों की इंडक्शन ट्रेनिंग में दो अफसरों का बीमारी के चलते जाना टल गया है। इनमें देवास में पदस्थ नरेन्द्र सूर्यवंशी और भोपाल में पदस्थ अपर आयुक्त उच्च शिक्षा वेदप्रकाश शामिल है। सूत्रों के मुताबिक अपर आयुक्त उच्च शिक्षा वेदप्रकाश की पत्नी बीमार चल रही है इसकी वजह से उन्होंने इंडक्शन ट्रेनिंग पर जाने में असमर्थता व्यक्त की थी। वहीं देवास में पदस्थ नरेन्द्र सूर्यवंशी स्वयं बीमार चल रहे है। वहीं रत्नाकर झा, धरणेन्द्र जैन, नगर निगम जबलपुर कमिश्नर आशीष गुप्ता सहित दो दर्जन आईएएस नौ मार्च से इंडक्शन ट्रेनिंग पर मसूरी जा रहे है। यह प्रशिक्षण चालीस दिन का होगा।

डॉक्टर्स और पैरामेडिकल स्टाफ की छुट्टियां रद्द, अलग ओपीडी खुलेगी

खंडवा। कोरोनावायरस को लेकर जिले में स्वास्थ्य विभाग अलर्ट है। सिविल सर्जन ने जिला अस्पताल में कार्यरत डॉक्टर्स और पैरामेडिकल स्टाफ की छुट्टियां आगामी आदेश तक निरस्त कर दी हैं। अस्पताल की ओपीडी और आईपीडी में आने वाले मरीजों के इलाज में विभाग द्वारा विशेष सावधानी बरती जा रही है। स्वास्थ्य विभाग ने कोरोना के संक्रमण से निपटने के लिए ट्रामा सेंटर में चार बैड का आइसोलेशन व सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र छैगांवमाखन में 6 बैड का क्वारिन्टाइन वार्ड तैयार किए हैं। सोमवार से अस्पताल की पुरानी बिल्डिंग के कमरा नंबर-18 में सर्दी-खांसी और बुखार के मरीजों के लिए अलग से ओपीडी काउंटर शुरू किया जाएगा। यहां ईएनटी और मेडिसिन विशेषज्ञ डॉक्टर मरीजों का इलाज करेंगे।

भोपाल। मंत्री जयवर्धन सिंह, पीसी शर्मा, विजयंत सिंह, दिग्विजय सिंह ने होड़ा माता मंदिर परिसर में 6 करोड़ 23 लाख की लागत के विभिन्न कार्यों का भूमि-पूजन किया। इसमें मंदिर का जीर्णोद्धार, पहुंच मार्ग और सामुदायिक भवन निर्माण के कार्य शामिल हैं।

यस बैंक मामले में माकपा ने केंद्र सरकार पर कसा तंज

जनता के साथ मोदी सरकार का एक और विश्वासघात

भोपाल

जब केंद्र सरकार एक ओर सीएए, एनआरसी और एनपीआर के बहाने देश में साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण कर चुनियादी मुद्दों से ध्यान हटाने की कोशिश कर रही है, वहीं एक के बाद एक घोटाला कर देश की संपत्ति को कारपोरेट घरानों और घोटालेबाजों को सौंप रही है।

मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के राज्य सचिव जसविंदर सिंह ने उक्त बयान जारी करते हुए कहा है कि पिछले पांच सालों से जब मोदी सरकार स्वयं को हिंदुओं की रहनुमा बताने की कोशिश कर रही है, तब हर घोटाले में हिंदुओं को ही दांव पर लगाया जाता है। यस बैंक में भी हिंदू खाताधारक ही घोटाले का शिकार हुए हैं। माकपा नेता ने कहा है कि यस बैंक के डूबने से 17000 हिंदू कर्मचारियों की नौकरियां गई हैं।

28 सार्वजनिक कंपनियों को बेचने का लगाया आरोप

माकपा नेता ने कहा है कि इस बात की जांच की जानी चाहिए कि बैंक के खाताधारकों द्वारा 50 हजार रुपए ही निकालने के आदेश के एक दिन पहले गुजरात की एक कंपनी को कैसे पता लग जाता है कि बैंक डूबने वाला है और वह 265 करोड़ रुपए निकाल लेती है। दूसरी ओर अडानी की कंपनी 26 फरवरी से ही इस बैंक के चैक लेने से इंकार कर देती है। स्पष्ट है कि बैंक के डूबने की जानकारी इन गुजराती कारोबारियों को पहले ही दे दी गई थी। जसविंदर सिंह ने कहा है कि जब देश को सीएए, एनआरसी और एनपीआर में उलझाया जा रहा है, तब केन्द्र सरकार 28 सार्वजनिक कंपनियों को बेच चुकी है। हाल के बजट में भी केंद्र सरकार ने एक ओर गरीबों को मिलने वाले खाद्यान में कटौती की है।

परीक्षार्थियों की प्लानिंग पर पड़ रहा फर्क

पीएससी की प्री परीक्षा रिजल्ट में देरी के कारण छात्र परेशान

भोपाल

एमपीपीएससी के प्री परीक्षा के रिजल्ट में देरी होने से परीक्षार्थियों को प्लानिंग में दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। परीक्षार्थी सोच रहे थे कि वे प्री के परिणाम आने के बाद मेंस की परीक्षा की तैयारी भी शुरू कर देंगे, लेकिन रिजल्ट पता नहीं लगने से विद्यार्थी तैयारी पर पूरी तरह ध्यान नहीं लगा पा रहे हैं। 12 जनवरी को हुई एमपीपीएससी प्री परीक्षा में करीब 4 लाख प्रतिभागी शामिल हुए थे। 500 से ज्यादा पदों के लिए यह परीक्षा हुई थी। विद्यार्थियों का कहना है पिछले सालों में भी पीएससी के रिजल्ट विवादों में रहे हैं। कभी पीएससी परीक्षा में गलती करता है तो कभी प्रतिभागी किसी मुद्दे पर मामलों को कोर्ट में ले जाते हैं। एक परीक्षार्थी राजकुमार पवार का कहना है कि जुलाई में होने वाली यूपीएससी परीक्षा की तैयारी करने का सोचा था, लेकिन पीएससी की तैयारी शुरू होने के बाद इसी पर ज्यादा ध्यान देना शुरू कर दिया था।

भोपाल। शाहजहांनी पार्क में नियमितिकरण की मांग को लेकर सरकार के खिलाफ महिला अतिथि विद्वान डॉ. नीमा सिंह व पुरुष अतिथि विद्वान ने मुंडन करवाया। महिला अतिथि विद्वानों ने आह्वान किया है कि सरकार ने वचनपत्र अनुसार हमारा नियमितीकरण का वादा नही निभाया तो हम दिल्ली की ओर कूच करेंगे और अपने आंदोलन को विस्तृत करते हुए अगला मुंडन दिल्ली में सोनिया गांधी के सामने किया जाएगा।

बीबीए, एमबीए, पीजीडीएम सहित 15 प्रोफेशनल कोर्स में कटौती की तैयारी

इंदौर

बीबीए और पीजीडीएम सहित 15 कोर्स के लिए ओबीसी छात्रों को मिलने वाली स्कॉलरशिप का बजट घटाए जाने का असर फीस पर पड़ेगा। पिछड़ा वर्ग और अल्पसंख्यक कल्याण विभाग मुख्यालय ने जिले के सहायक संचालकों को पत्र लिखा है। इसमें जिलों के कॉलेजों में चल रहे कोर्स की फीस में कटौती करने की अपील की गई है। इसका फायदा सभी वर्ग के छात्र को मिलेगा।

55 हजार से ज्यादा छात्र-छात्राओं को मिलेगी राहत- जिन कोर्स को चयनित किया गया है, उनमें ज्यादातर प्रोफेशनल कोर्स हैं। इसे 2020-21 से लागू किया जाएगा, अगर ऐसा हुआ तो कई अनुदान प्राप्त और निजी कॉलेजों को फीस में कटौती करना पड़ेगी। इंदौर में ही बीबीए, बीसीए और एमबीए सहित इन 15 कोर्स में ओबीसी श्रेणी के 55 हजार से ज्यादा छात्र हैं।

कॉलेजों में अभी ऐसा है फीस का स्ट्रक्चर

इंदौर सहित प्रदेश के कई कॉलेजों में बीबीए, बीसीए जैसे कोर्स की फीस 50 हजार रुपए प्रति सेमेस्टर या उससे ज्यादा है। एमबीए की फीस भी 75 हजार रुपए तक है। पीजीडीएम की फीस तो एक लाख रुपए से भी ज्यादा है। इसके अलावा बीसीए और एमसीए जैसे कोर्स की भी फीस 50 हजार के आसपास है।

इनकी फीस घटेगी

बीबीए, पीजीडीएम, एम डिजाइन, बी डिजाइन, एमएफएम, बीएससी नर्सिंग, एमएससी नर्सिंग, बीफार्मा, एमफार्मा, होटल मैनेजमेंट, बीसीए, एमसीए और मैनेजमेंट एंड टूरिज्म।

वन विभाग ने प्रस्ताव तैयार कर राज्य सरकार को भेजा

प्रदेश में गोंद का व्यापार पीपीपी मोड पर करने की तैयारी

भोपाल

प्रदेश की कमलनाथ सरकार तेंदूपत्ता के बाद अब गोंद उत्पादन और उसके व्यापार पर विशेष ध्यान दे रही है। अभी प्रदेश में सालाना करीब छह हजार टन से अधिक गोंद का उत्पादन होता है, लेकिन इसके लिए कोई नीति नहीं होने से वनोपज से जुड़े लोगों को पूरा फायदा नहीं मिल पाता है। यही वजह है कि अब वन विभाग ने गोंद के सुनियोजित व्यापार के लिए पॉलिसी का प्रारूप तैयार कर सरकार को स्वीकृति के लिए भेज दिया है। इस प्रारूप में गोंद के व्यापार के लिए पीपीपी मोड का प्रावधान किया है। इसके तहत एक मॉडल तैयार करने की योजना है। बताया जा रहा है कि पॉलिसी के प्रारूप का इसी माह विभागीय अधिकारियों के सामने प्रजेंटेशन दिया जाएगा। कहा जा रहा है कि अगर सब कुछ ठीक ठाक रहा तो प्रदेश को जल्द ही नई गोंद पॉलिसी मिल जाएगी।

15 प्रकार की गोंद का होता है उत्पादन

अभी प्रदेश में 15 तरह की गोंद का उत्पादन होता है। इसमें सलई, कुल्लू, धमरकस, खैर, घायड़ा, गूगल, बबूल, अवार, गुर्जन, नीम, सरजन, रोहन, मलगल आदि शामिल है। इनमें से सबसे ज्यादा सलई गोंद का उत्पादन होता है। देश में 16 प्रदेशों में सलई के पेड़ पाए जाते हैं।

सलई गोंद का 3500 टन उत्पादन! सूत्र बताते हैं कि राज्य में अकेले सलई गोंद का उत्पादन सतानवा 3500 टन है। इसमें भी सबसे अधिक भागीदारी शिवपुरी जिले की है, जहां 2000 टन गोंद होता है, जबकि खंडवा, देवास, बुरहानपुर और खरगोन में 1000 टन उत्पादन होता है। टीकमगढ़, मुरैना, छतरपुर, दमोह आदि क्षेत्रों में सलई गोंद का उत्पादन 500 टन के करीब है।

प्रदेश को गम रेजिन का हब बनाने की तैयारी

देश में सर्वाधिक गोंद का उत्पादन मप्र में होता है। यही वजह है कि गम रेजिंग पॉलिसी के प्रारूप में मध्यप्रदेश को देश का गोंद उत्पादक हब बनाने पर जोर दिया गया है। सर्वाधिक गोंद उत्पादक प्रदेश होने के बाद भी प्रदेश में अब तक कोई ठोस नीति नहीं है। अभी इसके लिए अंतराज्यीय वनोपज के तहत ही काम चलाया जाता है। गोंद निकालने का एक आदिवासी करते हैं और व्यापारी इस गोंद को खरीदते हैं। इस पर किसी प्रकार का नियंत्रण नहीं है और न ही जंगलों का प्रबंधन हो पाता है।

अंतिम निराकरण तक जमीन नहीं छोडेंगे आंदोलनकारी

अब धरना अधिग्रहित की जा रही भूमि पर जारी रहेगा

माही की गूंज, थांदला। मुकेश मद

स्थानीय तहसील कार्यालय के मुख्य द्वार पर दिल्ली-मुम्बई एक्सप्रेस -वे निर्माण में भूमि अधिग्रहण से प्रभावित पीढी दर पीढी पैतृक कब्जे की शासकीय भूमि के कब्जेदार किसानों व्दारा बीना मुआवजा भूमि शासकीय कब्जे की भूमि का अधिग्रहण पर रोक लगाने उचित मुआवजा एंव जमीन के बदले जमीन देने की मांग को लेकर पिछले सत्रह दिनों से चल रहे अनिश्चित कालीन धरना प्रदर्शन के दौरान शुक्रवार को सामाजिक कार्यकर्ता वनवासी हितरक्षा मंच के अखिल भारतीय प्रमुख गिरिश काम्बले ,विलाश सोनावने हाईकोर्ट एडवोकेट औरंगाबाद, वैभव सुरंगे अखिल भारतीय युवा कार्य प्रमुख, रूपसिंग नागर मालवा प्रांत सेवा भारती, कैलाश अमलियार विभाग जनजाति प्रमुख, भूषण भटट, कलसिंग भाबर, रूस्माल चरपोटा , आन्दोलनकारियों से मिलने पहुँचे तथा ग्रामिणों से विस्तृत जानकारी प्राप्त कर प्रतिनिधिमण्डल अनुविभागीय अधिकारी से मिला तथा अनुसूचित क्षैत्र के लिये लागू 5वीं अनुसूची के प्रावधान के बारे में बताते हुए आन्दोलन कारियों के प्रभावित हो रहे हितों के संरक्षण के लिये चर्चा की।

उचित सर्वे की की मांग

अनुविभागीय अधिकारी को आन्दोलनकारियों सहीत प्रभावित होने वाले ऐसे सभी आदिवासीयों की जमीन , पेड, पशुधन, मकान, कूँओं आदी को विस्तृत सर्वे करने तथा शासन के समक्ष रिपोर्ट भेजने का आन्दोलनकारियों से समन्वय बनाकर उनके प्रभावित हो रहे हितों को उचित सरंक्षण प्रदान करने विधिक सहयोग करने सेटलमेंट के पूर्व का रेकार्ड उपलब्ध करानें का अनुरोध करते हुए अंतिम निराकरण तक जमीन से बेदखल करने से रोकने ठेकेदार की मनमानी पूर्वक किये जा रहे कार्य पर तत्काल रोक लगाने की माँग की।

अनुविभागीय अधिकारी व्दारा आन्दोलनकारीयों को विधिक सरंक्षण देने न्यायालय में अपना पक्ष रखने हेतु उचित रिकॉर्ड उपलब्ध कराने की सहमती धरना स्थल पर आकर देते हुए चर्चा की इस पर आन्दोलनकारी तहसील कार्यालय से आक्रोश के साथ अपना अनशन स्थगित करने तैयार हुए तथा अंतिम निराकरण तक अपनी जमीन नहीं छोडने व अब अनशन प्रभावित हो रही जमीन पर जारी रखनें की चेतावनी देते हुए अपने घर की और लोटे। आन्दोलनकारी आक्रोश में देखे गए तथा बिना मुआवजा जमीन नही छोडने अपनी जान देने की चेतावनी देते हुए अपने घर की ओर लौटे ।

बड़े रुप में होगा आंदोलन

आन्दोलनकारियों के कडे तेवर देखकर आने वाले दिनों में उक्त आन्दोलन बडा रूप ले सकता है। वही आन्दोलनकरी अपने हितों के संरक्षण के लिये न्यायालय की शरण में जाने की तैयारी में जुट गए तथा आवश्यक कागजात जुटाने में लग गए है। आन्दोलनकारियों को तैवर आक्रोश में देखे गए तथा पिछले सत्रह दिनों से चल रहे अनिश्चितकालीन धरने के दौरान भी जिम्मेदारों व्दारा उचित सहयोग नहीं मिलने से अपनी अंतिम सांस तक जमीन छोडने की चेतावनी देकर अपने घर की ओर लोटे हैं। आन्दोलन कारियों ने कहा कि हमें जिनसे जो कहना था सत्रह दिनों में कह लिया। अब धरना प्रभावित हो रही जमीन पर ही होगा। हम किसी के पास अब नही जाएगें, जिन्हे सड़क निकालना है, वे हमारे पास आए।

चोर के हाथ में दे दिया जांच का उस्तरा भ्रष्टाचार को ही बना दिया शिष्टाचार

भ्रष्टों की कारस्तानी

कुकड़ीपाड़ा में 14 लाख 88 हजार व 12 लाख 96 हजार के सीसी रोड की हकीकत

माही की गूंज, खवासा। अमेश मालवीय

भ्रष्टों ने भ्रष्टाचार को ही अपना शिष्टाचार बना लिया है और अपनी इसी भ्रष्टाचार रूपी शिष्टाचार को बेखूबी से इसका निर्वाह भी किया जा रहा है। चाहे कोई कितनी भी शिकायत करें या मीडिया में इन भ्रष्ट अधिकारियों एवं जनप्रतिनिधियों जिन्होंने भ्रष्टाचार को ही शिष्टाचार बना रखा है, जिनके भ्रष्ट कारनामों का कितना भी खुलासा कर दे, परंतु ये भ्रष्ट जितनी शिकायत व जितना खुलासा करें ये उतनी ही कीमत बढ़ाकर ये अधिकारी कानून व अपने पद का दुरुपयोग कर कार्यवाही का ही मखौल उड़ाकर आम लोगों को अपनी भ्रष्ट रुपी चतुराई के साथ भ्रष्टाचार को बढ़ावा खुलेआम दे रहे हैं।

जिले में पंचायत स्तर पर कई ऐसे कार्य, जिनके बिना निर्माण कार्य के ही पंचायत के सरपंच-सचिव ने फर्जी मूल्यांकन के साथ राशि आहरण कर ली। वहीं जो कार्य किए हैं वो भी निम्न स्तर के बनाए गए है, ऐसी कई शिकायतें भी हुई, कई जगह जनहित में की गई शिकायतों पर शिकायतकर्ता से विवाद कर अधिकारियों से संरक्षण प्राप्त इन भ्रष्ट ने शिकायतकर्ता व कई जगह इनके खुलासे करने वाले पत्रकारों को भी दबाने के लिए विवाद किए, तो इन्हें सुखा देने के बजाय शिकायतकर्ता व मीडियाकर्मियों के विरुद्ध झूठे अपराध तक दर्ज करवाए ऐसे कई उदाहरण जिले में देखे जा सकते हैं।

प्रशासन रेखा को सुरक्षा देकर कर रहा अपने कार्य की इतिश्री

इन्हीं भ्रष्टाचारों में से एक भ्रष्टाचार का खुलासा 25 जनवरी को थांदला जनपद की ग्राम पंचायत कुकड़ीपाड़ा का हुआ था। जिसमें रेखा निनामा ने अपने कुछ ग्रामीणों के साथ जनसुनवाई में शिकायत कर खुलासा किया था कि, ग्राम पंचायत के भ्रष्टों ने मछली फंरा से मंगलिया नानूराम के घर तक 26 जनवरी 2017 को मंजूर हुए सीसी मार्ग की राशि बिना मार्ग बनाए ही आहरण कर ली गई। जिसके बाद अधिकारियों से सांठगांठ करने के साथ ही उक्त मामले को शिकायतकर्ता आगे ओर नहीं उठाए की मंशा के साथ उसे पंचायत के भ्रष्टों ने धमकाते हुए जान से मारने तक की धमकीया दे डाली थी। उक्त पूरे मामले को रेखा निनामा की एक्टिविटी व जनहित के लिए उठाए गए मुद्दे को देखते हुए, माही के गूंज ने पूरे मामले को रेखा निनामा के पक्ष के साथ पंचायत के भ्रष्टों के विरुद्ध जनहित में प्रमुखता के साथ समाचार प्रकाशित किए।

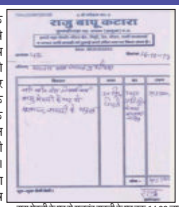

राजु बापु कटारा

श्री सिद्धाणं बिल्डिंग मटेरियल

राजु मेघजी के घर से मुलचंद रावजी के घर तक 14.88 लाख के मार्ग निर्माण में, सरपंच पुत्र राजु व श्रीसिद्धांण बिल्डींग मटेरियल के बिल से की गयी आहरण,पर प्रशासन उक्त मार्ग को परिवर्तित मार्ग बता रहा है।

जिसके बाद जिला प्रशासन के समक्ष ग्राम पंचायत कुकड़ीपाड़ा के नुमाइंदों के द्वारा किए गए भ्रष्टाचार का पुख्ता प्रमाण भी सामने आने के बाद, प्रशासन ने रेखा निनामा जो कि शिक्षित होकर पीएससी की तैयारी कर रही है और उक्त पूरे मामले में अपनी एक्टिविटी दिखाकर अधिकारियों पर कार्यवाही के लिए दबाव बना रही थी, जिसे देखकर प्रशासन ने देखा कि, कहीं उक्त शिक्षित रेखा के साथ पंचायत के नुमाइंदे कोई ऐसी वैसी हरकत ना कर दे, जिससे कहीं दूसरा बवाल खड़ा हो जाए ! जिसे देखते हुए रेखा निनामा को सुरक्षा मुहैया करवाते हुए, पुलिस अधीक्षक ने 28 फरवरी को आदेश जारी कर व्हीसल ब्लोअर संरक्षण अधिनियम 2011 के तहत इंदौर से कुकड़ीपाड़ा आने पर सुरक्षा मुहैया करवाई गई। जिस पर शुक्रवार 6 मार्च को रेखा निनामा इंदौर से पुलिस को सूचना देकर खवासा पुलिस चौकी पहुंची और उसको एक पुलिस आरक्षक के साथ सुरक्षा प्रदान की गई। रेखा निनामा खवासा भगोरिया हाट से झाबुआ तक गई जिसके साथ सुरक्षा हेतु जवान साथ में रहा, परंतु प्रशासन सुरक्षा प्रदान कर अपने कार्य की इतिश्री करते नजर आ रहा है। सीओ जिला पंचायत झाबुआ संदीप शर्मा ने कार्यवाही के नाम पर कारण बताओ पत्र 11 फरवरी को जारी कर 18 फरवरी को झाबुआ कार्यालय में उपस्थित होने के निर्देश दिए। जबकि 18 फरवरी को मांडली में सरकार आपके द्वार कार्यक्रम आयोजित किया गया था।

भ्रष्टों के धमकाने पर 6 मार्च से रेखा निनामा को मिली पुलिस सुरक्षा

संदीप शर्मा बिना सड़क निर्माण के ही बता रहा है संशोधित स्थान पर निर्माण कार्य

सूचना पत्र में भ्रष्ट सीईओ संदीप शर्मा ने अपनी कारस्तानी दिखाते हुए दर्शाया की मछली फंरा से मंगलिया नानूराम के घर तक बनने वाले सीसी मार्ग को बगैर स्वीकृति संशोधन कर उक्त मार्ग को सादेड़ा रावजी जी के घर से शंकर सेठ के घर तक 390 मीटर सीसी रोड निर्माण कार्य करवाकर राशि 13 लाख 73 हजार का भुगतान नियम विरुद्ध किया गया। तो वही मुंह जुबानी गूंज को अधिकारी उक्त मार्ग के निर्माण का मूल्यांकन 9 लाख रुपए बता रहे हैं। बता दे की अधिकारियों की कारस्तानी यह है कि, जो मार्ग स्वीकृति के बगैर संशोधन कर सादुड़ा रावजी के घर से शंकर सेठ के घर तक 390 मीटर बनाना बता रहे हैं, उक्त मार्ग 26 जनवरी 2017 को ही 14 लाख 88 हजार का सीसी मार्ग, रासु मेहंजी के घर से मूलचंद रावजी के घर तक मंजूर हुआ। उक्त मार्ग के निर्माण के नाम से पंचायत दर्पण पोर्टल पर ओनलाईन 14 लाख 88 हजार के उक्त सीसी मार्ग के निर्माण पर 19 बिल व पंचायत के सरपंच-सचिव के परिवार के मजदूरों के नाम 1 लाख 21 हजार 776रूपए के साथ कुल 17 लाख 96 हजार 176 रुपए आहरण करना दर्शाया जा रहा है। 19 बिल में से कुल पांच बिल 4 लाख 7 हजार 100 के पोर्टल पर दर्शा रहे हैं।

जबकि 14 बिल के स्थान पर 12 लाख 67 हजार 300 रुपए के बिल के स्थान पर बिल की प्रतियां उपलब्ध नहीं है या प्राप्त नहीं हो पाई, दर्शा रहे है। 19 में से कुल 12 बिल सरपंच पुत्र राजु बापू के नाम से 7 लाख 61 हजार 6 सौ रुपए आहरण किए, जिसमें तीन बिल गिट्टी, रेत व मशीन के 2 लाख 16 हजार 3 सौ रूपए के बिल दर्शा रहे हैं तो वही 9 बिल 5 लाख 45 हजार 3 शो के बिल ही नहीं दर्शा रखे हैं।

इसी तरह श्री सिद्धांण बिल्डिंग मटेरियल के 4 बिल में से एक 303 नं. का बिल 1 लाख 80 हजार 600 बोरी सीमेंट का दर्शा रहा है, जबकि 3 बिल कुल 6 लाख के नहीं दर्शा रहे हैं। जामसिंह खड़िया के दो बिल 1 लाख 22 हजार के नहीं दर्शा रहे हैं। तो वही अदिति मटेरियल सप्लायर थांदला प्रोपाइटर मुकेश बैरागी का प्लास्टिक पत्नी 10 हजार 8 सौ का बिल दर्शा रहा है।

कार्यवाही नही हुई तो पंचायत पर ही देगें धरना

संदीपजी शर्मा साहब से ग्रामीण जानना चाह रहे हैं कि, 12 लाख 96 हजार के मछली फंरा से मांगलिया नानूराम के घर तक का परिवर्तित मार्ग कर रासु मेहंजी सीसी मार्ग पर सड़क मार्ग बनाना बताया। तो फिर जो 14 लाख 88 हजार का मार्ग मंजूर हुआ और 14 लाख 88 हजार के स्थान पर 17 लाख 96 हजार 1 सो रुपैया पंचायत के भ्रष्ट द्वारा आहरण करना दर्शा रहे है, वह मार्ग किस स्थान पर बनाया गया है ? यह कुकड़ी पाड़ा आकर हमें बताएं !

जांच के नाम पर गुमराह करने वाले भ्रष्ट सीईओ संदीप शर्मा जिसने भ्रष्टाचार को ही अपना शिष्टाचार बना लिया है। जिसको देखकर रेखा निनामा ने गूंज को बताया कि, निष्पक्ष और सही कार्यवाही भ्रष्टाचारियों के विरुद्ध नहीं होगी तो मैं, ग्रामीणों के साथ, अपने गांव के हक में कुकड़ीपाड़ा ग्राम पंचायत के आगे ही धरने पर बैठूंगी और मेरी मांग यही रहेगी कि, सर्वप्रथम उन अधिकारियों के विरुद्ध भी कार्यवाही हो जो हम सबको पद का दुरुपयोग कर पैसा लेकर गुमराह कर रहे हैं और जब तक पंचायत के सरपंच-सचिव व जो अधिकारी इस भ्रष्टाचार में शामिल है उनके विरुद्ध जबतक कार्यवाही नहीं होगी तब तक अनिश्तिकालीन धरने पर पंचायत के आगे ही बैठूंगी।

ज्योतिषाचार्यो एवं पंडितों ने बताई त्योहारों की तारीख

13 को रंग पंचमी, 15 को शीतला सप्तमी एवं 18 मार्च को दशा माता पर्व मनाया जाए

माही की गूंज, झाबुआ। इस बार रंग पंचमी, शीतला सप्तमी एवं दशा माता पर्व की तिथि संषय को लेकर असमंजस की स्थिति बनने से इस संबंध में ज्योतिष शिक्षण जन कल्याण समिति की बैठक पं. विष्णकुमार शर्मा, सिद्ध विजय पंचांग निर्माण कर्ता (सुखेड़ा) की अध्यक्षता में स्थानीय श्री राम मंदिर पर संपन्न हुई।

बैठक में पं शर्मा ने बताया कि 1986 में विज्ञान भवन, दिल्ली में 200 से अधिक पंचांगकर्ता की बैठक भारत सरकार एवं पंचांग शोधन समिति के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हुई थी। जिसमें चित्र पक्षीय को सर्व-सम्मति से पूर्ण मान्यता दी गई थी, ग्रहलाघन पद्धति अभी भी प्राचीन पद्धति के अनुरूप चल रही है, जबकि आज अति सूक्ष्म गणित की जा सकती है, परन्तु आज भी कुछ पंचाग निर्माणकर्ता आज भी पुरानी पद्धति से पंचांगों का निर्माण कर रहे है, जबकि इनमें शोधन की आवष्यकता है। पं. शर्मा ने आगे बताया कि भारत के 95 प्रतिषत पंचाग चित्र पक्षीय सूक्ष्म गणित को अपनाते है, जो शुद्ध शास्त्र संवत एवं वैध शाला द्वारा सिद्ध है। राजस्थान में चित्र पक्षीय दृष्य गणित को पूर्ण मान्यता दी जाती है। भारत सरकार द्वारा 13 भाषाओं में निकलने वाला राष्ट्रीय पंचांग भी इसी गणित को अपनाता है।

पं. शर्मा ने बताया कि 13 मार्च को प्रातः सूर्योदय उपरांत 8.51 पर पंचमी आरंभ हो रहीं है, जो 14 मार्च को सूर्योदय पूर्व 6.16 पर समाप्त हो रहीं है। इसी कारण पंचमी का क्षय हो रहा है। शास्त्र मानता अनुसार उक्त तिथि मान्य है, अतः 8.51 के उपरांत तिथि रंग पंचमी मनाने हेतु उपयुक्त है। इसी प्रकार सप्तमी तिथि 15 मार्च को सूर्योदय पूर्व 4.26 पर आरंभ हो रही है, जो 16 मार्च को सूर्योदय पूर्व 3.20 को समाप्त हो जाएगी, इसी कारण शीतला सप्तमी 15 मार्च को मान्य रहेगी। कुछ लोगों में ये भ्रामक प्रचार है कि रविवार को पीपल की पूजन नहीं की जाती, इस विषय पर आचार्य जीवन पाठक (जड़वासा) ने बताया कि जहां तिथि का महत्व होता है, वहां वार को प्राथमिकता नहीं दी जाती। इसी तरह दषमी तिथि का आरंभ 18 मार्च को सूर्योदय पूर्व 3.25 पर हो रहा है, जो अगले दिन 19 मार्च को सूर्योदय पूर्व 4.27 पर समाप्त हो जाएगी। इस हेतु दशामाता पूजन 18 मार्च को ही मान्य है।

सभी पंचांगकर्ता एवं ज्योतिषों ने मान्यता प्रदान की, झाबुआ के पंडितों ने भी दी स्वीकृति

इस बैठक में लिए गए निर्णय को उज्जैन जीवाजी वैधशाला अधीक्षक गुप्ता, जोधपुरा के पं. अभिषेक जोशी (पंचांग निर्माण कर्ता), नीमच के पं. भागीरथ जोशी (भाटवा माता पंचांग कर्ता), रजोद के पं. रमेश पंड्या (कालचक्र पंचांग कर्ता) ने पूर्ण रूप से मान्यता प्रदान की। बैठक में समिति अध्यक्ष पं. ओमप्रकाष शर्मा, पं. जितेन्द्र नागर, पं. अषोक वषिष्ठ, पं. सुरेन्द्र शर्मा, पं. धर्मेन्द्र व्यास, पं. चेतन शर्मा, पं. आशीष मिश्रा आदि उपस्थित थे। झाबुआ में युवा ज्योतिषाचार्य एवं कर्मकांड पं. द्विजेन्द्र व्यास, पं. हिमांशु शुक्ला एवं कमलेश व्यास आदि भी ने इस निर्णय लिया है कि वे उक्त पंचांग एवं तिथि अनुसार ही इन त्यौहारों को मान्यता की लोगों को सलाह एवं परामर्ष देंगे।

पेंशनर 18 मार्च को मुख्यमंत्री के नाम सौपेंगे ज्ञापन

माही की गूंज, झाबुआ। अपनी लंबित मांगों के पूरा नही होने को लेकर प्रदेश भर के लाखों पेंशनरों द्वारा 18 मार्च को जिला मुख्यालय पर धरना देकर प्रदेश के मुख्यमंत्री कमलनाथ के नाम से ज्ञापन सौपा जावेगा। मध्य प्रदेश पेंशनर एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष रतनसिंह राठौर एवं सचिव सुभाषचन्द्र दुबे ने संयुक्त रूप से जानकारी देते हुए बताया कि प्रदेश संगठन के प्रान्ताध्यक्ष ओपी बुधोलिया के निर्देशानुसार जिला स्तर पर पेंशनरों की लंबित मांगों के निराकरण के संबंध में आगामी 18 मार्च बुधवार को दोपहर 12-30 बजें स्थानीय आम्बेडकर पार्क झाबुआ पर एक दिवसीय धरना प्रदर्शन कर जिलाध्यक्ष रतनसिंह राठौर के नेतृत्व में प्रदेश के मुख्यमंत्री के नाम कलेक्टर झाबुआ को ज्ञापन सौपा जावेगा। सचिव सुभाष दुबे ने जिले के सभी पेंशनरों से अधिक से अधिक संख्या में उक्त धरना प्रदर्शन मे शामिल होकर मांगों को लिए एक जुटता प्रदर्शित करने की अपील की।

एक माह में उखडा सीसी रोड

माही की गूंज, पेटलावद।

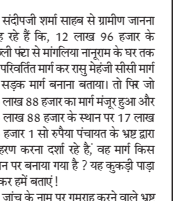

ग्राम पंचायतों में आने वाले चुनावों को देखते हुए अधूरे पडे और नए कार्य खातों में पडी राशि आहरण करने के उद्देश्य से कार्य किए जा रहे हैं। यहां विकास खण्ड की ग्राम पंचायत मोहब्डीपाड कला के कुआखड़ फलिये में सीसी रोड का निर्माण निनामा फलिया से सिंगार फलिया तक बनाना था। ग्राम पंचायत ने रातों रात उक्त रोड का निर्माण कार्य घटिया तरीके कर दिया। ग्राम पंचायत ने रोड का निर्माण तो कर दिया, लेकिन रोड की गुणवत्ता की ओर कोई ध्यान नहीं रखा। पूरी तरह से घटिया निर्माण किया गया। न ही रोड का बैस तैयार किया गया, न ही लेथ स्टीमेट अनुसार रखी गई। नतीजन रोड एक माह भी सुरक्षित नहीं रह पाया और टूट गया। ग्रामीण कैलाश कटारा ने बताया कि ग्राम पंचायत द्वारा शासकीय कार्यों में जमकर भ्रष्टाचार कर बिना कार्य किए राशि निकाली जा रही है। वहीं जिन कार्यों को किया जा रहा है, उनकी स्थिति बेहत ही गंभीर है। इससे पहले भी ग्राम पंचायत के अलग-अलग फलिये में आंगनवाडी के तीन भवनों बनना थे। जिनका निर्माण होने से पूर्व राशि ग्राम पंचायत द्वारा फर्जी बिल लगाकर आहरण कर ली गई और निर्माण कार्य शिकायत के बाद ग्राम पंचायत द्वारा आधा अधूरा छोड दिया। मामला जवाबदारों की जानकारी में होने के बाद भी अब तक ग्राम पंचायत व उपरंशी पर किसी प्रकार की कार्यवाही नहीं हुई। जिसके चलते ग्राम पंचायत को भ्रष्टाचार की खुली छुट मिल गई और घटिया निर्माण कर शासन को चूना लगाया जा रहा है।

करड़ावद के बाद बरवेट में भी 9वीं के 40 से अधिक बच्चे परीक्षा के नदारद

माही की गूंज, पेटलावद।

शिक्षा विभाग में फैली अव्यवस्था और लापरवाही एक के बाद एक उजागर हो रही है। विभाग शिक्षा और बच्चों के भविष्य को लेकर कितना संजीदा है, ये उजागर हो रही लापरवाही से पता चलता हैं। गत दिनों निकट के ग्राम करडावद की हाई स्कूल का मामला समाने आया था। जहां 9वीं की परीक्षा के दौरान 60 से अधिक बच्चों की अनुपस्थिति दर्ज की गई थी। मामले के मीडिया में आने के बाद विभाग के अधिकारी सफाई देने में लगे रहे कि पोर्टल पर से नाम नहीं हटाये जाने के कारण गलती हुई है और बच्चों को परीक्षा तक लाने के प्रयास लगातार किए गए हैं। लेकिन इस प्रकार का मामला केवल करडावद में होगा, ये सोचना गलत है। ऐसा ही एक मामला ग्राम बरवेट में सामने आया। जहां कि हाई स्कूल में 9वीं की परीक्षा के दौरान स्कूल में दर्ज 272 में से लगभग 40 से अधिक बच्चे परीक्षा के दौरान अनुपस्थित रहे। जानकारी मिलने पर जब मामले की पड़ताल की तो वहीं जवाब अधिकारियों से मिला कि पोर्टल पर से बच्चे को नाम नहीं हट पाने के कारण ऐसा हुआ है। स्कूल स्टाफ द्वारा सतत बच्चों के परिजनो से सम्पर्क कर स्कूल लाने का प्रयास किया गया। स्कूल के प्राचार्य नितिन परमार से इस मामले में जब चर्चा की गई तो उन्होंने बताया कि सत्र शुरू होने के बाद 30 सितम्बर तक स्कूल में दर्ज छात्रों की अंतिम सूची देनी होती है, लेकिन ग्रामीण क्षेत्र में कई बार बच्चे अक्टूबर तक भी आते हैं। ऐसे में नाम हटाये जाने पर विवाद की स्थिति खड़ी हो जाती है, इसलिए ऐसे बच्चों के नाम हटाने के स्थान पर उनको स्कूल लाने के

प्रयास किए जाते है। ज्यादातर बच्चे पिछले वर्ष के फेल होते हैं, जो स्कूल नही आते। प्राचार्य का कहना है कि मामले में और जानकारी जुटाने का प्रयास किया गया कि क्या शाला में दर्ज बच्चों की संख्या अधिक बताकर शासन से मिलने वाली सुविधा का लाभ कागज पर पहुंचाकर जिम्मेदार अपना उल्लु सीधा कर रहे हैं। इस पर बीआरसी एमआर रायपुरिया का कहना है कि इस प्रकार का कोई काम नहीं हो रहा है क्योंकि शासन द्वारा बच्चों को दी जाने वाली अधिकांश योजनाओं का लाभ सीधे बच्चों के खाते में जाता है। नये सत्र में इस प्रकार के मामले न हो इसका पूरा ध्यान विभाग का रहेगा।

बिगड़ते है परिणाम

शाला में अनुपस्थित बच्चों को आखिर क्यों रिकॉर्ड पर रखा जा रहा है। इसके पीछे की संस्था की मंशा तो पूरी तरह से साफनहीं हो सकी, लेकिन संस्था और प्राचार्य की इस प्रकार की लापरवाही के कारण न केवल संस्था का बल्कि जिले का वार्षिक परिणाम प्रभावित होता है। रिकॉर्ड पर संस्था का परिमाण कम दर्ज होता ।है इसके बाद भी जिम्मेदार इसके पीछे कोई गलत मंशा नही होना बता कर अपना परिणाम तक खराब दर्ज करवाने की रिस्क लेते है। जिससे शिक्षा व्यवस्था पर सवाल खडे होते है। पूरे विकासखण्ड के स्कूलों की जांच की जानी चाहिए कि आखिर किन-किन संस्थाओं द्वारा इस प्रकार से अनुपस्थित बच्चों को दर्ज कर रखा है और संस्था द्वारा इन बच्चों का नाने के लिए क्या प्रयास किए गए या नहीं आने पर विभाग के अधिकारियों को किस स्थिति में जानकारी दी गई।

मदर टेरेसा आश्रम में निराश्रितों के साथ मनाया होली मिलन समारोह

माही की गूंज, झाबुआ।

स्थानीय एल आई सी कॉलोनी स्थित मदर टेरेसा आश्रम में मंगलवार को धुलेंडी (होली) पर्व पर पेरेंट्स डिसएबिलिटिज वेलफेयर एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष यशवंत भंडारी के नेतृत्व में निराश्रितों के साथ होली मिलन समारोह मनाया। जिसमें आश्रम में निवासरत सभी दिव्यांग एवं निराश्रितजनों को सूखे रंग लगाकर उन्हें धुलेंडी पर्व की शुभकामनाए प्रेषित की गई। बाद सभी को लजीज व्यंजन ग्रहण करवाए गए।

सभी ने थाली की खनक पर जमकर नृत्य भी किया एवं एक-दूसरे को गले मिलकर धुलेंडी पर्व की शुभकामनाएं दी। बाद भंडारी की ओर से सभी को स्वल्पाहार के रूप में पैंगर, कुल्फ़ी, चिप्स आदि व्यंजनों का वितरण किया गया। इस अवसर पर विशेष रूप से आश्रम की सिस्टर्स एवं संचालक कलेरिटा मेरी, मारिया प्रताप, सिस्टर नोरलीन, इडलीना, अजीसा, फ्लेक्सिया आदि भी उपस्थित थी। अंत में पधारे सभीजनों के प्रति आभार आश्रम के व्यवस्थापक ओंकारभाई ने माना।

संपादकीय

होली का शुभकामना संदेश और औपचारिकता तक सिमटना

होली मात्र एक सामुदायिक त्योहार नहीं, बल्कि एक दुर्लभ अवसर है। एक ऐसा दुर्लभ अवसर, जिसकी विवेचना और सही पालना, दोनों ही कार्य अधूरे लगने लगे हैं। कहीं न कहीं यह एहसास बनने लगा है कि हम असली होली भूलते जा रहे हैं। ऐसा इसलिए हो रहा है, क्योंकि अच्छी होली को समझने-समझाने का चलन कमजोर पड़ता जा रहा है। ऐसा नहीं कि मात्र पानी की कमी के कारण होली प्रभावित हुई हो, दरअसल कमी उस भाव में आ रही है, जो हमें होली मनाने के लिए प्रेरित करता है। वस्तुतरू मन ही वह सच्चा संसाधन है, जो होली को सार्थक करता है। आज हम इतनी ज्यादा इच्छाओं से घिरे रहते हैं कि होली मनाने की इच्छा हाशिए पर चली जाती है।

यहां हम उन भक्त प्रह्लाद को याद करें, तो अप्रासंगिक नहीं होगा। वही प्रह्लाद, जो होलिका की अग्नि से बच निकले थे। बाद में उनकी रक्षा के लिए प्रकट हुए भगवान ने प्रह्लाद से वर मांगने के लिए कहा, तो अव्वल तो प्रह्लाद ने साफकर दिया कि मैंने वणिक भक्ति नहीं की है, कुछ पाने के लिए भक्ति नहीं की है। लेकिन जब भगवान ने बार-बार प्रह्लाद से कहा कि कुछ मांगो, तो प्रह्लाद ने मांगा- वर दीजिए, मेरी सारी इच्छाएं ही नष्ट हो जाएं। निस्संदेह, होली की बुनियाद भक्त प्रह्लाद ही हैं, जो हर स्वार्थ, हर इच्छा से बचना चाहते हैं, पर पुराण गवाह है कि भगवान ने प्रह्लाद को राजा बनाकर प्रजा की इच्छाओं की पूर्ति के लिए सब कुछ दे दिया। आज होली के भाव को समझने के लिए हमें प्रह्लाद के भाव को समझना चाहिए।

होली के भाव को जो चोट लग रही है, उसका मुख्य कारण है, आज हर तरह के संबंध वाणिज्य आधारित होते जा रहे हैं। सच्ची होली में लेन-देन का भाव कतई नहीं है और दूसरों को सच्चा रंग वही लगा सकता है, जो दूसरे की इच्छाओं का आदर करता हो। दूसरे की इच्छाओं का आदर करने का अर्थ है, दूसरों को अपना बना लेना। हमें याद रखना चाहिए कि प्रह्लाद के ऐसे भाव-सद्भाव पर ही होली खड़ी होती है, भारत खड़ा होता है। पुराण गवाह हैं, प्रह्लाद अपने समय में भारत और भारतीयता की नींव रखने वाले प्रतापी राजा थे। उसी नींव का एक मूल महोत्सव होली है।

आज यदि होली मात्र शुभकामना संदेशों और होली-मिलन की औपचारिकता तक सिमटती जा रही है, तो समाज पर उसके दुष्परिणाम भी बहुत स्पष्ट हैं। बदलती हुई होली हमें बदलते हुए समाज का चेहरा दिखा रही है। क्या आज हर स्तर पर परस्पर मेल-जोल में कमी नहीं आई है? परस्पर समाजों और समुदायों में दूसरों की इच्छाओं के अनादर का रोग नहीं पनप रहा है? उत्सव के क्षण हमसे धीरे-धीरे छिनते जा रहे हैं और उसकी जगह चिंता या चिंतन की मजबूरी हावी हो रही है।

एक सलाह

मनुष्य को अपने लक्ष्य में कामयाब होने के लिए खुद पर विश्वास होना बहुत जरूरी है।

काम की बात

हर छोटा बदलाव बड़ी सफलता का हिस्सा होता है।

बैंकिंग क्षेत्र का बेपर्दा होता संकट

अमन अग्रवाल
निदेशक भारतीय वित्त संस्थान

वित्तीय संकट से जूझ रहे यस बैंक को उबारने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने बेहद जरूरी प्रयास किए हैं। हालात संभालने के इस तरह के उपाय पहले भी किए जाते रहे हैं। 2003-04 में हीमनी लॉन्ड्रिंग के मामले में कुछ बैंकों का विलय किया गया था। सेंचुरियन बैंक ऑफ पंजाब को भी आर्थिक राहत पहुंचाने के लिए एक दशक पहले एचडीएफसी बैंक के हवाले किया गया था। विलय या टेकओवर करके ही केंद्र सरकार और रिजर्व बैंक अब तक बैंकिंग क्षेत्र को दुरुस्त करते आए हैं। यह कोई नई परिपाटी नहीं है। फिर, देश में किसी बैंक के डूबने का इतिहास भी नहीं है।

असल में, यस बैंक की खस्ता हालत की कई वजहें हैं। पहली वजह तो अत्यधिक एनपीए यानी डूबत कर्ज है, जिसे छिपाने की कोशिश बैंक के निदेशक मंडल करते रहे। आरबीआई ने पूर्व में निदेशक मंडल को बैंक के बही-खाते को दुरुस्त करने का निर्देश दिया था, लेकिन अब तक ऐसा नहीं किया जा सका। कोई निवेशक ढूंढ़ने में भी बोर्ड नाकाम साबित हुआ। नतीजतन, आरबीआई को यह कार्रवाई करनी पड़ी।

वैसे, एनपीए का मसला सिर्फ इसी बैंक का नहीं है। देश के सभी सरकारी, सहकारी और निजी क्षेत्र के बैंक इससे जूझ रहे हैं। शुरुआती वर्षों में इसकी काफी अनदेखी हुई थी, लेकिन पिछले चार साल से केंद्र सरकार ने इससे निपटने के खास जतन किए हैं। रघुराम राजन और उर्जित पटेल जैसे आरबीआई गवर्नर ने 13-14 सरकारी बैंकों को तत्काल सुधारात्मक कार्रवाई (पीसीए) के अंतर्गत डाल रखा था, जो एक तरह का प्रतिबंध ही माना जाता है। इसमें बैंक न तो नई शाखा खोल सकते हैं, न नए कर्मचारियों की नियुक्ति कर सकते हैं और न ही नए कर्ज वगैरह बांट सकते हैं। हां, इसमें धन-निकासी जैसे ग्राहकों से जुड़े प्रतिबंध नहीं होते। हालांकि बाजार के नजरिए से देखें, तो पीसीए जैसी कार्रवाई अच्छी नहीं मानी जाती, क्योंकि इससे बाजार में तरलता कम हो जाती है और लेन-देन प्रभावित होता है।

एक अन्य नीतिगत चूक यह थी कि 2013-14 से हर साल लगभग पांच लाख करोड़ रुपये की कर्जमाफी होती रही। इसमें लगभग ढाई लाख करोड़ रुपये केंद्र व राज्य सरकारें किसानों को राहत पहुंचाने के नाम पर माफ करती रहीं, तो करीब डेढ़ लाख करोड़ रुपये की माफी एनपीए थी, जो बड़े-बड़े कारोबारियों के डूबत कर्ज थे। शेष राशि अन्य तरह की माफी थी। अच्छी बात यह है कि पिछले तीन साल में सरकार ने तमाम तरह की बंदिशें लगाकर इसे लगभग दो-ढाई लाख करोड़ रुपये कर दिया है। देश में आर्थिक सुस्ती की एक वजह यह भी है, जिसका नुकसान यस बैंक को उठाना पड़ा।

इस बैंक की आर्थिक सेहत कितनी बिगड़ चुकी थी, इसका अंदाजा जमा राशि पर उसके द्वारा दिए जाने वाले ब्याज से भी लग रहा था। यह दर किसी बैंक की स्थिति जानने का सबसे सरल तरीका है। अगर कोई बैंक अन्य बैंकों की तुलना में आम जनता को जमा-राशि पर अधिक ब्याज दे, तो यही माना जाता है कि उस बैंक के पास पैसे का अभाव है, इसलिए वह ज्यादा दर पर आम जनता से रुपये लेकर अपना कारोबार कर रहा है। हालांकि इसका यह अर्थ नहीं लगाया जा सकता कि उस बैंक में लोगों की जमा-राशि असुरक्षित है। जमा-राशि पर बाकायदा बीमा होता है। पहले एक खाते में एक लाख रुपये तक की राशि बीमित होती थी, जिसे गत 4 फरवरी को आरबीआई ने अधिसूचना जारी करके पांच लाख कर दिया है। जाहिर है, यस बैंक के मौजूदा संकट से छोटे निवेशक शायद ही प्रभावित होंगे। हां, बड़े निवेशकों को नुकसान हो सकता है, लेकिन उनके कई खाते होते हैं, इसलिए उन्हें ज्यादा घाटा नहीं होगा।

यस बैंक के मामले ने एक बार फिर बैंकिंग क्षेत्र में सुधार की मांग तेज कर दी है। कुछ सुधार तो निहायत जरूरी हैं। मसलन, बैंकों के ऑडिट का तरीका जल्द से जल्द बदलना चाहिए। सत्यम घोटाले के बाद केंद्र सरकार ने यह फैसला लिया था कि कोई भी ऑडिटर एक ही कंपनी की लगातार ऑडिट नहीं कर सकता, अधिकतम वह दो बार ऐसा कर सकता है। मगर यह नियम बैंकों पर लागू नहीं होता, क्योंकि बैंक आरबीआई रेगुलेशन ऐक्ट से संचालित होते हैं। अब इस नियम को बैंकों पर भी लागू करने का समय आ गया है।

बेसल-3 और बेसल-4 जैसे नियमों पर चलना भी जरूरी है। बैंकों के कामकाज में पारदर्शिता लाने के लिए अंतरराष्ट्रीय बैंक इन नियमों को अपनाते हैं। बैंक ऑफ इंटरनेशनल सेटलमेंट्स नामक संस्था इन नियमों को तय करती है। यह संस्था पहले अंतरराष्ट्रीय बैंकों के आपसी विवाद के निपटारे के लिए गठित की गई थी, मगर अब यह बैंकों की सेहत संवारने के नियम-कानून भी बनाने लगी है। अपने यहां के स्थानीय बैंक बेसल नियमों का पालन नहीं करते, जबकि इन नियमों को अपनाने से केंद्रीय बैंक को सूचना देने की उनकी जवाबदेही बढ़ जाएगी। आरबीआई ने मार्च, 2020 तक सभी बैंकों के लिए बेसल-3 अपनाना अनिवार्य बताया था, लेकिन इस समय-सीमा में ऐसा होना संभव नहीं दिख रहा।

एक अन्य उपाय 'स्ट्रेस टेस्ट' यानी क्रेमल्स टेस्टिंग की तरफबढ़ना भी हो सकता है। इसके तहत बैंकों को अपनी आर्थिक स्थिति अखबारों के माध्यम से शेयर बाजार की तरह रोजाना आम जनता को बताना अनिवार्य होता है। आम जनता न सही, आरबीआई को तो बैंक अपनी माली हालत बता ही सकते हैं। खतीर गवर्नर रघुराम राजन ने इसकी सिफारिश की थी, लेकिन यह अब तक ठंडे बस्ते में पड़ा है।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

मप्रः सत्ता ही ब्रह्म है

डॉ. वेद प्रताप वैदिक

मध्यप्रदेश में सरकार बने सवा साल ही हुआ है लेकिन उसकी अस्थिरता की चर्चा जोरों से चल पड़ी है। कांग्रेस और भाजपा दो सबसे बड़ी पार्टियां हैं, मप्र में लेकिन दोनों को विधानसभा में स्पष्ट बहुमत नहीं मिला। कांग्रेस को सीटें ज्यादा मिल गई लेकिन सत्तारुढ़ भाजपा को वोट ज्यादा मिले। कांग्रेस को 114 सीटें मिलीं और भाजपा को 107 ! जो छोटी-मोटी पार्टियां हैं, उनके तीन और चार निर्दलीय विधायकों को मिलाकर कांग्रेस ने भोपाल में अपनी सरकार बना ली। विधानसभा में कुल 230 सदस्य हैं। दो सीटें अभी खाली हैं याने 228 सदस्यों की विधानसभा में कांग्रेस पार्टी का शासन मजे में चल रहा था। मुख्यमंत्री कमलनाथ के नेतृत्व में कांग्रेस सरकार ने कुछ ऐसे कदम भी उठाए हैं, जो भाजपा की सरकार उठाती लेकिन वे सात गैर-कांग्रेसी सदस्य हिलने-डुलने लगे हैं। एक कांग्रेसी विधायक ने विधानसभा से ही इस्तीफा दे दिया है। भोपाल में इतनी भगदड़ मच गई है कि सभी पार्टियों के नेताओं ने अपने सार्वजनिक कार्यक्रम स्थगित कर दिए हैं। कुछ सरकार गिराने में व्यस्त हैं और कुछ सरकार बचाने में ! कुछ विधायकों को गुड़गांव और कुछ को बेंगलूर में घेरा गया है। कुछ लापता हैं और कुछ दावा कर रहे हैं कि उन पर फिलूल ही पाला बदलने का शक किया जा रहा है। यह शक इसलिए भी बढ़ गया है कि मप्र में राज्यसभा के लिए तीन सदस्य तुरंत चुने जाने हैं लेकिन न कांग्रेस और न ही भाजपा के पास इतने विधायक हैं कि वे दो सदस्यों को जिता सकें। एक-एक सदस्य दोनों पार्टी चुन लेगी लेकिन तीसरे सदस्य को चुनने के लिए भी यह जोड़-तोड़ हो रही है।

मध्यप्रदेश की राजनीति इतनी विचित्र हो गई है कि इसमें न तो कांग्रेस का नेतृत्व एकजुट है और न ही भाजपा का। दोनों पार्टियों में तीन-चार नेता हैं, जो अपने-अपने गुट को आगे बढ़ाने में लगे हुए हैं। इस गुटीय राजनीति ने दोनों पार्टियों को इस भरोसे में रख रखा है कि हमारे विरोधी आपस में बंटे हुए हैं, इसलिए सरकार गिरेगी और नहीं भी गिरेगी। यहां विचारधारा, पार्टी-आस्था, व्यक्तिगत प्रतिष्ठा, परंपरा आदि सब गौण हो गए हैं। जो राजनीति का ब्रह्म-सत्य है याने सत्ता और पत्ता, अब उसका नग्न प्रदर्शन हो रहा है। सत्ता प्राप्त करने के लिए या उसमें बने रहने के लिए कोई भी नेता कोई भी कदम उठा सकता है। वह कितने पत्ते कैसे चलेगा, कुछ पता नहीं। सत्ता के अलावा सब मिथ्या है। इसलिए अब मध्यप्रदेश में कुछ भी हो सकता है। यदि मध्यप्रदेश में कांग्रेस की सरकार गिरती है तो अन्य प्रदेशों में भी कांग्रेस को सतर्क रहना पड़ेगा। कांग्रेस पार्टी तो बिना चालक की गाड़ी बन गई है।

सवाल जमीर का है, बचा या बिका?

राकेश अग्रवाल
वरिष्ठ स्तंभकार

कांग्रेस के युवा तुर्क ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कांग्रेस से अपना नाता तोड़ लिया है। अब वे शायद भाजपा में शरणार्थी बनकर शेष जीवन व्यतीत करें, लेकिन उनके इस कदम से मैं कतई विचलित नहीं हूं, मुझे अफसोस है तो सिर्फइतना की ज्योतिरादित्य सिंधिया को लेकर मेरा आकलन सही साबित नहीं हुआ। मुझे लगता था की वे बगावत नहीं करेंगे जबकि उन्होंने ऐसा कर दिखाया। सिंधिया के इस कदम से मध्यप्रदेश में 1967 के राजनितिक घटनाक्रम की पुनरावृत्ति होती दिखाई दे रही है। सिंधिया की बगावत से अब केवल एक ही सवाल अनुत्तरित रह जाता है कि उन्होंने अपने जमीर को मरने से बचाया है या फिर अपना जमीर बेच दिया है?

राजनीति में बगावत का सम्मान किया जाता है किन्तु दल-बदल को हेय दृष्टि से देखा जाता है। ज्योतिरादित्य सिंधिया को शायद कांग्रेस के ही नेताओं ने बगावत के लिए विवश किया। लोकसभा चुनाव हारने के बाद अवसाद का शिकार बने ज्योतिरादित्य सिंधिया को उम्मीद थी कि विधानसभा चुनाव के बाद पार्टी की सरकार प्रदेश में बनने के बाद उनके पराजय के जख्मों पर पार्टी शायद कोई नया दायित्व देकर मरहम रख देगी, पर ये भी नहीं हुआ। बीते सवा साल से ज्योतिरादित्य सिंधिया प्रदेश के वर्तमान मुख्यमंत्री कमलनाथ और पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह मिलकर ज्योतिरादित्य सिंधिया का मान-मर्दन कर, करा रहे थे। सिंधिया की पसंद से एक तबादला या नियुक्ति नहीं की गई बल्कि उलटे उनकी उपेक्षा और की गई।

प्रदेश में सत्ता पाने के लिए छटपटा रही भाजपा ने बीते वर्षों में कमलनाथ सरकार को अस्थिर करने की अनेक कोशिशें की, किन्तु उन्हें कामयाबी नहीं मिली। विधायकों की खरीद-फ्रोख्त के प्रयासों के बाद भी भाजपा को कोई कामयाबी नहीं मिली थी। ज्योतिरादित्य सिंधिया ने भाजपा की मन की मुराद को पूरा करा दिया, कहते हैं कि सिंधिया बारासत मोहन भागवत कांग्रेस से बाहर आए हैं और भाजपा में शामिल होने के लिए लालायित हैं। वे भाजपा में कैसे और कितने खाप पाएंगे, ये वे ही जाने लेकिन हमारा मानना है कि वे जहां थे, वहीं ठीक थे और कभी न कभी उनके अच्छे दिन वापस आते ही। सिंधिया के पिता स्व.माधवराव सिंधिया ने आपातकाल के बाद कांग्रेस की सदस्यता ली थी, किन्तु हवालाकाण्ड के बाद उन्हें कांग्रेस से निकल दिया गया था, लेकिन वे बहुत जल्द कांग्रेस में वापस लौटए थे। उन्होंने कांग्रेस में रहकर ही सद्गति पाई। मुझे लगता था कि ज्योतिरादित्य सिंधिया अपने पिता के ही पदचिन्हों पर ही अनुशरण करेंगे, किन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। ज्योतिरादित्य अपने पिता के नहीं अपनी दादी के पद चिन्हों को चुना। वे किस दल को छोड़ें या किस दल के साथ रहें, ये उनका विवेक है, लेकिन हम यानी हमारी जनता क्या मानती है ये महत्वपूर्ण है।

एक सिंधिया के कांग्रेस से बाहर जाने से कमलनाथ की सरकार और पार्टी जाएगी या बचेगी ये तो फ्लोर पर ही पता चलेगा, लेकिन हम ये जानते हैं कि न तो अब रिसींधिया इस कांग्रेसश् है और न ही सिंधिया को शरणार्थी ही रहने वाले हैं। भाजपा में उन्हें अपेक्षित समान मिलेगा या नहीं मैं नहीं जानता, लेकिन फिलहाल सिंधिया सियासत की सुर्खियों में हैं और अगले कुछ दिनों तक रहेंगे। बाद में जो होगा सो देखा जाएगा।

भाजपा का एक धड़ा अरसे से सिंधिया की विरासत में 1857 के एक अध्याय को जोड़ते हुए हमेशा गरियाते रहे हैं। यदि अब ज्योतिरादित्य सिंधिया वापस लौटे तो उनका इस्तकबाल कैसे हो पाएगा। भले ही प्रधानमंत्री उन्हें अपनी कैबिनेट में शामिल कर लें। भाजपा के खिलाफसिंधिया की आक्रामकता को किस रूप में लिया जाएगा, इस पर अभी कोई टीका करना ठीक नहीं। सिंधिया जहां भी रहें सिंधिया रहें, जिस दिन वे अपना दिल टटोल कर देखें उन्हें अपने फैसले पर पछतावा नहीं होना चाहिए।

हिंसा रोकने को कारगर नीति चाहिए

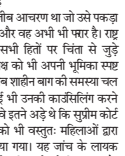

प्रो. एनके सिंह
अंतर्राष्ट्रीय प्रबंधन संस्थाकार

राम मंदिर का रास्ता साफकर दिया गया है और मोदी सर्वोच्च नेता हैं जिन्हें मंदिर की सेवा में राम भक्त का विशेषाधिकार प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। उच्च प्राथमिकता के इस एजेंडा एकशन को उन्होंने रक्त की एक भी बूंद बहाए बिना सुप्रीम कोर्ट के फैसले को सभी की मैत्रीपूर्ण स्वीकृति दिलाकर प्राप्त कर लिया। इस ऐतिहासिक समय में कोई संदेह नहीं है कि मैं वाराणसी में था और दिल्ली में एक और मील का पत्थर देखने के लिए दिल्ली गया था, और वह था- दिल्ली में ट्रंप और मोदी का शिखर सम्मेलन। यह एक और ऐतिहासिक कदम हिंदुवाद विरोध के ताबूत में अंतिम कील था। अब तक भारत की आत्मा को कलंकित किया गया था, क्योंकि वह मंदिर और खुद की पहचान बनने में विफल रहा था। ट्रंप की हस्तक्षेप न करने की नीति के कारण नागरिकता संशोधन कानून का विरोध खत्म हो जाना चाहिए था, लेकिन दुर्भाग्य से इसने एक हिंसक दंगा और रक्तपात का रूप ले लिया। वाराणसी से प्रस्थान करने के बाद मैंने किसी तरह दिल्ली का तनाव व दबाव देखा, जबकि वाराणसी में खुशनुमा आश्वर्य यह था कि शहर में सड़कों व मंदिरों का रूप-रंग बदल गया था। कोई यह सोच भी नहीं सकता था कि मोदी उन उबदराज गलियों को साफ कर देंगे जहां संकीर्ण गलियों ने कभी बड़े आकार के वाहनों को चलने की अनुमति नहीं दी। नागरिकों के पुनर्वास या मुआवजे को लेकर कोई शिकायत नहीं थी क्योंकि उन्होंने उनके साथ उदारतापूर्वक व्यवहार किया। परिणाम यह कि शहर की योजना में एक क्रांति आई है। वाराणसी राष्ट्र का ज्ञान केंद्र बनने की राह पर है। जब मैं दिल्ली पहुंचा तो ट्रंप और ट्रंप ही हर जगह थे। दिल्ली व्यापार और विज्ञान में भारत और अमरीका के सहयोग के युग को देख रहा था। जब दुनिया के एक महान नेता भारत का दौरा कर रहे थे तो ऐसी हिंसा क्यों फैल गई? जब देश में विदेशी और प्रतिष्ठित आगंतुक हमारे घर में थे, तब पत्थरों का ऐसा मलबा हवा में क्यों उड़ रहा था, जब यह नागरिकों के लिए जरूरी था कि राष्ट्र के सम्मान और प्रतिष्ठा को बनाए रखना है। क्या देश की छवि को धूमिल करने के लिए यह जानबूझ कर की गई योजना थी? जब आग बुझ जाती है तब ये मुद्दे विचार करने लायक होते हैं। क्या आपको लगता है कि 200 गुस्तचरों की उपस्थिति वाले एक शक्तिशाली राष्ट्र को यह नहीं पता था कि राष्ट्रपति के स्वागत समारोह के बाहर क्या चल रहा है? इन सब के बावजूद ट्रंप ने भारत के साथ जो किया वह शायद समर्थन का सर्वोच्च खांचा है और उन्होंने उन सभी विवादास्पद मामलों को नजरअंदाज कर दिया जो उनके सामने प्रेस कांफ्रेंस में उठाए गए। इससे पहले कभी भी अमरीका के राष्ट्रपति ने भारत को भविष्य के संबंध में ऐसा समर्थन और आश्वासन नहीं दिया था जिससे भारत के प्रधानमंत्री को पाकिस्तान को आसानी से अलग-थलग करने में मदद मिली हो। जब देश की राजधानी दिल्ली में किसी शक्तिशाली विदेशी मेहमान की आवभगत हो रही थी, तो शाहीन बाग व कुछ अन्य क्षेत्र नरक बन रहे थे। शाहीन बाग मॉडल का सबसे बुरा नतीजा यह निकला कि भारत में मुसलमानों ने खुद को अलग-थलग कर लिया। नागरिकता कानून का भारतीय मुसलमानों से कोई लेना-देना नहीं है, फिर भी अवैध रूप से प्रवेश करने वालों को लाने के लिए हमने राजधानी की गलियों को तब जलाया, जब देश में दो शक्तियों की बड़ी एकजुटता देखी जा रही थी।

अमरीका भारत के साथ खड़ा होगा, लेकिन साथ ही वह पाकिस्तान के साथ जेहादी तत्त्वों को नियंत्रित करने के लिए संपर्क कर सकता है। भारत में सांप्रदायिक तत्त्वों को नियंत्रित करने पर भी इसका प्रभाव पड़ेगा। भारत में मुसलमानों के पास दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है और उन्हें राष्ट्र के बड़े हित में अपने हितों के सद्भावनापूर्ण विलय के लिए नए रास्ते खोजने होंगे। इस हिंसक झड़प में भावी हिंसात्मक परेशानियों की संभावना छिपी हुई है। ताहिर हुसैन, जो आम आदमी पार्टी के नेता हैं, के घर में इतनी बड़ी मात्रा में घातक हथियार और पत्थर मिले कि यह सुरक्षा बलों के साथ कुछ दिनों के युद्ध में सक्षम रह सकता था। यह पुलिस का अजीब आचरण था जो उसे पकड़ा नहीं जा सका और वह अभी भी फरार है। राष्ट्र और देश के सभी हितों पर चिंता से जुड़े मामलों में विपक्ष को भी अपनी भूमिका स्पष्ट करनी होगी। जब शाहीन बाग की समस्या चल रही थी तो कोई भी उनकी काउंसिलिंग करने नहीं गया और वे इतने अड़े थे कि सुप्रीम कोर्ट के वार्ताकारों को भी वस्तुतः महिलाओं द्वारा अलग कर दिया गया। यह जांच के लायक होगा कि किसने महिलाओं को सिखाया और प्रशिक्षित किया जिन्होंने सुरक्षा से संबंधित एक नया मसला खड़ा कर दिया और वे सार्वजनिक उपयोग के लिए बनी सड़क को निरंतर अवरुद्ध करती रहीं। मेरे विचार में सार्वजनिक उपयोग के लिए बनी सड़क को कड़े कदम उठाकर साफ करने के भी कई प्रभाव होने चाहिए। लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने भी स्पष्ट फैसला नहीं दिया। हमारा संविधान सरकार के किसी फैसले का विरोध करने का अधिकार देता है, लेकिन सार्वजनिक उपयोग के लिए बनी सड़क को अवरुद्ध करने या दूसरों के अधिकार में खलल डालने का अधिकार किसी को भी नहीं दिया गया है। भविष्य में इस तरह के मसलों से निपटने के लिए एक दृढ़ और स्पष्ट नीति की जरूरत है।

जिनके भीतर का जागरण हुआ, वे ही सत्कर्य में जुटे

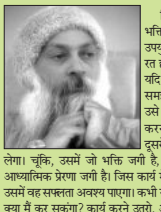

जिसके भीतर भक्ति जगी है, उसे उपयुक्त कार्य में रत होना ही होगा। यदि वह स्वयं नहीं समझ सके कि उसे क्या कार्य करना है, वह दूसरों से परामर्श लेगा। चूंकि, उसमें जो भक्ति जगी है, उसके अंदर आध्यात्मिक प्रेरणा जगी है। जिस कार्य में वह लगेगा, उसमें वह सफलता अवश्य पाएगा। कभी नहीं सोचो कि क्या मैं कर सकूंगा? कार्य करने उतरो, अवश्य सफल होगे। जब समाज के कार्य में लग जाओगे, तब समाज कभी अवहेलित नहीं रह सकता है। समाज अग्रगति से ही वह जीवन की परिपूर्णता पाएगा। जड़ जगत के आकर्षण से मानस जगत का आकर्षण अधिक शक्तिशाली है। आध्यात्मिक जगत का आकर्षण उससे भी अधिक शक्तिशाली है। मनुष्य यदि सोचे क्या मैं कर सकूंगा, मेरे द्वारा क्या कार्य हो पाएगा और इस तरह यदि वह कार्य करना आरंभ करें, उसके द्वारा कभी भी कार्य नहीं हो सकेगा। साहस के साथ लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित कर, आध्यात्मिक प्रेरणा से प्रेरित होकर यदि वह कार्य करे, तो सफलता अवश्य मिलेगी। मनुष्य सभी कार्यों से बड़ा है। केवल कार्य की सिद्धि और असिद्धि के ऊपर निर्भर कर पवित्रता अथवा अपवित्रता की भित्ति बना हमलोग मनुष्य के मान का निर्धारण करते हैं। मनुष्य के साथ कार्य का इतना संबंध है। मनुष्य जो कार्य करता है वह यदि सिद्ध हो, पवित्र हो, वृहत हो, तो हमलोग उसे महान मानकर स्वीकार करते हैं और सिद्ध मान लेते है। इसलिए किसी कार्य को करने से पहले विवेचक मन से जब सोच कर देखोगे कि कार्य सत् है, उसी समय यदि तुम कर्म के समुद्र में कूद पड़ोगे तो तुम्हारी जय अवश्य होनी है। साधारणतया मनुष्य जिस कार्य में लगता है, वह यह नहीं देखता है कि वह सिद्ध है या असिद्ध, पवित्र है या अपवित्र।

चाणक्य नीति

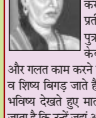

आचार्य चाणक्य माता-पिता के कर्तव्यों का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि लाड़-प्यार बच्चे में दोष ही उत्पन्न करता है और प्रताड़ना सुधार का प्रतीक है। जो माता-पिता अपने पुत्र को व गुरू अपने शिष्य को केवल लाड़-प्यार ही करते हैं और गलत काम करने पर दंडित नहीं करते, ऐसे बेटे व शिष्य बिगड़ जाते हैं। वह कहते हैं कि बच्चे का भविष्य देखते हुए माता-पिता का यह दायित्व बन जाता है कि उन्हें जहां अच्छा करने पर प्रोत्साहित करें, उन्हें स्नेह दें। वहीं गलत करने पर उन्हें प्रताड़ित करना ही आवश्यक है।

न्यूज़ ब्रीफ

कलेक्टोरेट स्पोर्ट्स ने खेल प्रशिक्षक स्व. चेतन परमार को दी श्रद्धांजलि

माही की गूंज, झाबुआ। कलेक्टोरेट स्पोर्ट्स झाबुआ के वरिष्ठ साथी, खेल प्रशिक्षक एवं खेलप्रेमी स्व. चेतन परमार का बीती 7 मार्च को सड़क दुर्घटना में आकस्मिक निधन हो जाने पर सीएसजे क्लब के सभी खिलाडियों, सहयोगी स्टॉफ, खेलप्रेमी, कलेक्टर झाबुआ प्रबल सिपाहा, सहायक आयुक्त, आदिवासी विकास विभाग प्रशांत आर्य, अपर कलेक्टर एसपीएस चौहान, एसडीएम मेघनगर पराग जैन, कलेक्टोरेट अधीक्षक नरेन्द्र परमार, क्लब के संरक्षक लाला कप्तान ,कलेक्टर स्टेनो जॉन भूरिया, मप्र कर्मचारी कांग्रेस के जिलाध्यक्ष भेरूसिंह सोलंकी, कलेक्टोरेट जिला नाजिर एजाज कुरैशी, शशिकांत शर्मा जिलाध्यक्ष मप्र लघुवेतन कर्मचारी संघ, तहसीलदार मेघनगर शक्ति सिंह चौहान, सीएसजे क्लब के अध्यक्ष नजरू मेड़ा, कोच नरेशराज पुरोहित, सचिव प्रदीप रामावत आदि द्वारा शोक संवेदना व्यक्त की गई।

सूखे रंगों से मनाया फागोत्सव

माही की गूंज, झाबुआ। महिला पतंजलि योग समिति झाबुआ द्वारा महिला दिवस के अवसर पर स्थानीय बहादूर सागर स्थित बडे हनुमान मंदिर पर सूखे रंगों से फगोत्सव धुमधाम से मनाया गया । इस अवसर पर महिलाओं ने भगवान हनुमानजी के समक्ष पूजा अर्चना करके भजनों की प्रस्तुति के साथ ही धार्मिक फाग गीतों-- मंदरिया मे उडे रे गुलाल पीलो रंग केसरियों जैसे गीतों पर नृत्य करके अपनी भक्ति भावना व्यक्त की ।

फर्जी कॉलोनी का खेल, शैतान की शैतानियत और रूपयों का मायाजाल

पिता के नक्शे कदम पर चल रहा पुत्र गौरव भी करने लगा झूठे कारनामें

माही की गूंज, झाबुआ/बामनिया।

बाप अगर नंबरी हो, तो बेटा दस नंबरी निकले तो कोई आश्चर्य की बात नहीं होती है। शैतान लोगों के साथ जालसाजी में महारत हासिल कर चुका और अपनी पत्नी-पुत्र को भी इसी जालसाजी की राह पर चलने हेतु प्रेरित करने लगा। परिणामस्वरूप फर्जी अग्रवाल कॉलोनी का खेल ऐसा खेला कि, झूठे एग्रीमेंट कर फर्जी रूप से अग्रवाल कॉलोनी के निर्माण की शुरुआत कर लोगों को गुमराह किया। साथ ही अधिकारियों को माया के जाल में फांसकर अपने पक्ष में अवैध कॉलोनी को वैध व पूर्ण सुविधायुक्त कॉलोनी का होना, जांच रिपोर्ट में अधिकारियों से दर्शाकर काले कारनामे किए। तो वहीं बताते हैं कि शैतान अपने इन काले कारनामों के साथ-साथ जुए-सट्टे का भी आशिक बन गया था और अपनी काली कमाई को सट्टे-जुएं में लगाकर बडी जीत-हार भी की गई। शैतान ने अपने पुत्र का नाम गौरव रखकर गौरव अब अपने पिता की राह पर चलकर फर्जीवाड़े एवं झूठ का सहारा लेकर शैतान की शैतानियत को शायद गौरवांवित कर रहा है। बता दें कि शैतान के पुत्र गौरव व पत्नी प्रेमलता के नाम से बामनिया में फर्जी अग्रवाल कॉलोनी बनाई गई और पटवारी एवं एसडीएम को बड़ी मात्रा में गुलाबी गांधी छाप देकर अपने अनुसार शासकीय एवं झुठी जांच का खेल खेला गया। शैतान एवं उसके पुत्र गौरव ने जैसा कहा वैसा ही एसडीएम व पटवारी ने कार्यवाही को किया।

पटवारी के झूठे पंचनामे के बाद पिता की राह पर चलकर गौरव ने शिकायतकर्ता को 16 जुलाई 2019 को वकील के माध्यम से दो लाख के मानहानि के दावे का नोटिस भेजा। नोटिस में पटवारी के झूठे पंचनामे को आधार बनाया और शिकायतकर्ता को लिखा कि, आपके द्वारा अनुविभागीय अधिकारी को झूठी शिकायत गौरव के विरुद्ध की गई, जो जांच के पश्चात शिकायत निराधार पाई गई है। जानबूझकर उक्त शिकायत गौरव के विरुद्ध की गई, जिससे गौरव की छवि ग्राम बामनिया के साथ समाज में धूमिल हुई है। पक्षकार गौरव को 2 लाख रुपए क्षतिपूर्ति प्राप्त करने का अधिकारी है। किसी कार्यवाही से बचना चाहते हैं तो अपनी झूठी शिकायत पर गलती मान कर लिखित माफीनामे के साथ 2 लाख रुपए क्षतिपुर्ति जमा कर दें, साथ ही नोटीस में शिकायतकर्ता को पत्रकार भी दर्शाया गया। परंतु शिकायतकर्ता किसी भी समाचार पत्र या किसी भी मीडिया का पत्रकार आज तक कभी नहीं रहा और उक्त फर्जी कॉलोनी एवं फर्जी पंचनामे को सही बताकर, अपने फर्जी कारनामों के साथ गौरव ने अपने पिता के नक्शे कदम पर चल कर शिकायतकर्ता पर फर्जी रूप से वकील के माध्यम से नोटिस भेजकर दबाव बनाने का कृत्य किया गया। वही अब चर्चा है कि जब पिता नंबरी है, तो बेटा दस नंबरी होगा ही।

शैतान की शैतानियत और रुपयों का मायाजाल...निरंतर..

मप्र अधिवक्ता परिषद ने आयोजित किया कार्यक्रम

माही की गूंज, झाबुआ। अधिवक्ता परिषद मध्यप्रदेश द्वारा जिला न्यायाधीश एम के शर्मा के मुख्य आतिथ्य में, दिनेश सक्सेना की अध्यक्षता और अभिभाषक संघ अध्यक्ष बी एल सोनी के विशेष आतिथ्य में मातृ शक्ति सम्मान कार्यक्रम आयोजित किया गया । यत्र नारियस्य पूज्यन्ते रमन्यते तत्र देवता की परम्परा अनुरूप सर्वप्रथम जिले की दो राष्ट्रीय स्तर की खिलाड़ी कु. निधि और कु. तनिष्का का सम्मान किया गया। तदुपरांत महिला भृत्य उसके पश्चात महिला लिपिक कर्मी और उसके पश्चात महिला लोक अभियोजन अधिकारीगण का विधिवत सम्मान किया। आगे बढ़ते हुये सम्मान समारोह में महिला न्यायाधीशगण का सम्मान श्रीफल के साथ सम्मान पत्र देकर किया । कार्यक्रम में विशेष तौर पर बाल कल्याण समिति की न्यायिक मजिस्ट्रेट शक्ति प्राप्त अध्यक्ष निवेदिता सक्सेना, ममता तिवारी और चेतना सकलेचा का भी सम्मान किया । नवनियुक्त शासकीय अभिभाषक आरिफ शेख और अतिरिक्त शासकीय अभिभाषक सत्यम भट्ट का भी अभिनंदन किया गया।कार्यक्रम का संचालन अधिवक्ता परिषद मध्यप्रदेश के प्रान्त मंत्री मूकुल सक्सेना ने किया।

जीवन संगिनी की श्रेष्ठ भूमिका निभाने पर किया सम्मान

माही की गूंज, झाबुआ।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की पूर्व संध्या पर भारतीय स्त्री संगठन द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली 21 महिलाओं को अपने मन की बात रखने के लिए मंच प्रदान किया गया।

इस अवसर पर अपने जीवन साथी को किडनी दान कर जीवन संगिनी की श्रेष्ठ भूमिका निभाने वाली श्रीमती सपना कोठारी एवं श्रीमती रागिनी सक्सेना का सम्मान किया गया। सपना कोठारी एक सफल शिक्षिका है एवं रागिनी सक्सेना एक सफल गृहिणी है। विभिन्न क्षेत्रों की कर्मठ महिलाओं में नगरपालिका उपाध्यक्ष रोशनी डोडियार, समाज-सेविका सुशीला भट्ट, स्वास्थ्य के क्षेत्र से डॉ. चारूलता दवे, मुक्ता त्रिवेदी, संगीता डामोर, डेनिफ्रिन निनामा, बैंकर्स से सीमा, इंजिनियिर शिल्पा सोलंकी, शिक्षा के क्षेत्र से सविता गुप्ता, डॉ. कंचन चौहान, प्रो. प्रीति त्रिपाठी, शैफाली व्यास, अभिभाषक अर्चना राठौर, ब्यूटिशियन निम्मो खुराना, गृहिणी चंदुलेखा जोशी, व्यवसायी उर्वशी पटेल, सेल टेक्स से सुषमा दुबे, रेवन्यू से संध्या कुलकर्णी, पुलिस विभाग से नलिनी बैरागी, वन विभाग से दीपिका बंधवार (राठौड़), कला के क्षेत्र से अन्नू भाबर एवं पत्रकारिता से मेघा क्षोत्रिय ने इस दौरान अपने अनुभव साझा किए।

आयोजन में भारतीय स्त्री संगठन का परिचय श्रीमती किरण शर्मा ने दिया। वक्ताओं का परिचय प्रवीणा माथुर ने दिया। संचालन वंदना जोशी ने किया एवं आभार अंजु शर्मा ने माना।

पालिताणा शत्रुंजय की छः गांव यात्रा सम्पन्न की

माही की गूंज, झाबुआ। अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद व तेरापंथ युवक परिषद् झकनावदा के युवाओं ने पालीताणा पुहॅच कर दादा आदिनाथ भगवान के दर्षन वंदन का लाभ लिया। व लाभ ले कर बड़े आनंद पूर्वक जयंत गिरी शत्रुंजय की छः गांव यात्रा सम्पन्न की ।यात्रा झकनावदा श्री केसरियानाथ भगवान के दर्शन से प्रारंभ कर मणीलक्ष्मी तीर्थ, अयोध्यापुरम्, अडाई तीर्थ पर भक्ति भावपूर्वक लाभ लिया। उक्त यात्रा में अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नव युवक परिषद् अध्यक्ष मनीष कुमट, श्रेणिक राठौर (लालु), तेरापंथ युवक परिषद् से अभय जैन, शुभम् कोटडिया व ओमप्रकाश अरोड़ा ने लाभ लिया व वापसी में गुजरात के प्रसिद्ध कष्ट भंजन हनुमानजी सालंगपुर के दर्शन सकुशल यात्रा सम्पन्न की।

शुभ मुहूर्त में हुआ होलिका दहन

माही की गूंज, झाबुआ। होलिका दहन आज शाम शुभ मुहूर्त में किया गया। जिला मुख्यालय पर 50 से भी अधिक जगह पर होलिका दहन किया गया है, कई जगह पर होली के दहन के लिए विशेष कंडों की व्यवस्था की गई, जिसको कई सामाजिक संस्थाएं व महिलाओं ने इस बार गोबर के बने कंडो से हो होलिका दहन किया गया। होली के दहन के पूर्व महिलाओं ने एक ड्रेस कोड में होली माता का पूजन अर्चन किया, वही होली के दहन के पश्चात महिला पुरुष व बच्चों ने होली माता की परिक्रमा भी लगाई, आज शाम आजाद चौक व राजवाड़ा चौक पर 7.30 बजे शुभ मुहूर्त में होली माता का दहन किया गया। जिसमें बड़ी संख्या में नगरवासी होली माता का आशीर्वाद और परिक्रमा करने पहुंचे।

धुलेंडी पर्व पर रंगों की बरसात

माही की गूंज, खवासा।

पारंपरिक रंगों का त्योहार होली उत्साह और उमंग के साथ मनाया गया। सुबह से ही छोटे बच्चे अपनी-अपनी टोली बनाकर गलियों में खेलते नजर आए। वहीं दोपहर तक युवा वर्ग भी रंग और गुलाल लेकर एक-दूसरे पर लगाकर होली की शुभकामनाएं देते नजर आए। इस वर्ष कोई सामूहिक गैर नहीं निकली। इसके बावजूद विभिन्न मोहल्लों में लोगों ने अपने-अपने ग्रुप बनाकर होली खेली। राजवाड़ा चौक पर युवा वर्ग ने इस मौके पर डीजे पर नाचते गाते होली की मस्ती में रंग और गुलाल उड़ाया, तो कुछ युवाओं ने डीजे के साथ गांव में नाचते हुए होली पर्व का आनंद लिया। विभिन्न मोहल्लों में महिला वर्ग ने भी एक दूसरे के घर जाकर गुलाल से होली खेली। इस वर्ष कोरोना वायरस के चलते सुखी होली खेलने का असर खवासा में नहीं हुआ और सभी ने रंग और गुलाल के साथ ही पानी के साथ भी होली खेली।

सिंधिया के कांग्रेस छोड़ने पर भाजपाई ने होली के साथ मनाई दीपावली

होली के मस्ती भरे माहौल के बीच सियासी उठापटक पर भी सभी की नजरें गढ़ी रही। एक और कांग्रेसी कार्यकर्ता जहां मायूस नजर आए, वही भाजपाई मन ही मन प्रसन्न हो रहे थे। धुलेंडी पर सभी रंगों से सरोबार हो रहे थे कि दोपहर साढे 12 बजे जैसे ही खबर आई कि, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कांग्रेस से त्यागपत्र दे दिया है। भाजपाई खुशी से झूम उठे और होली के साथ ही आतिशबाजी करके दीपावली का आनंद लेने लगे।

भाजपा के मंडल अध्यक्ष रमेश बारिया, प्रदीप सिसोदिया, शैतान लोहार, जीतू सेन आदि ने सिंधिया के इस कदम का स्वागत करते हुए उम्मीद जताई कि, कांग्रेस के कमलनाथ सरकार की विदाई के साथ ही प्रदेश में एक बार फिर भाजपा की सरकार का मार्ग प्रशस्त होगा।

धुलेटी पर रंगों को लेकर बच्चों में दिखा उत्साह

माही की गूंज, कुन्दनपुर। ग्राम में धुलेटी का पर्व धूमधाम से मनाया गया। डीजे पर नगर में निकाला जुलूस पर्व को लेकर सुबह से युवक टोलियां बनाकर एक-दूसरे को रंग लगाने व धुलेटी की शुभकामनाएं देने निकल गए थे। पर्व को लेकर छोटे बच्चों में भी खास उत्साह देखा गया। बच्चे भी सुबह से ही अपने दोस्तों को रंग लगाने के लिए हाथों म?ं गुलाल लेकर अपने घरों से निकल गए थे। वहीं इस दौरान अनेक नटखट बच्चों ने मासूमियत के साथ शरारत करते हुए गली मोहल्लों से निकलने वाले लोग पर गुलाल व रंग से भरे गुब्बारे फेंके व पिचकारियों से लोगों पर रंगों की बौछार की।

अन्तिम भगोरिया होने से रंभापुर में उमड़ा जन सैलाब

माही की गूंज, रंभापुर।

सोमवार को ग्रामीण अंचल का अन्तिम भगोरिया हाट ग्राम रंभापुर में लगा। इस भगोरिया हाट में हजारों की तदाद में ग्रामीणों ने शिरकत की। होली के एक दिन पहले ग्राम रंभापुर के दशहरा मैदान पर लगे भगोरिया हाट में पहुचे ग्रामीणों ने झुले -चकरी का आन्नद लिया। पैर रखने तक की जगह नहीं थी। ग्रामीणों ने झूलों का खूब आनंद लिया। ढोल-मांदल की थाप के बीच आदिवासी समाज के पर्व का जमकर रंग जमा। रंभापुर में सुबह से ही उल्लास छाया था। दोपहर तक यह परवान चढ़ गया। हजारों की संख्या में ग्रामीण उमड़े और मस्ती के त्योहार का आनंद लिया। मेला स्थल पर सुबह 11 बजे से ही भीड़ जुटने लगी थी। भगोरिया हाट में क्षेत्रीय विधायक वीर सिंह भूरिया एवं पूर्व विधायक कलसिंग भाबर सहित कई नेताओं एवं सरपंचों ने शिरकत की। वहीं ग्राम पंचायत खच्चरटोडी के सरपंच प्रतिनिधि प्रदीप गणावा अपनी पारंपरिक आदिवासी वेशभूषा मे भगोरिया हाट में पहुचकर ढोलमांदल की थाप पर जमकर थिरके।।जो आकर्षण का केन्द्र रहे। भगोरिया में सुरक्षा व्यवस्था की कमान एसडीओपी एमएस गवली, थाना प्रभारी कौशल्य चौहान, चौकी प्रभारी हरीसिंह चुंडावत ने संभाल रखी थी। ग्राम पंचायत रंभापुर एवं सेवाभारती द्वारा ग्रामीणों के लिये पेयजल की व्यवस्था की गई।

मन्नतधारी भी पहुंचे भगोरिया में

ग्राम रंभापुर के भगोरिया में आदिवासी समाज की परंपरा अनुसार गल देवता तथा चूल माता की मन्नत रखने वाले कई मन्नतधारी ग्रामीण शरीर पर हल्दी लगाकर व सिर पर लाल फेटा बांधकर भगोरिया हाट में पहुंचे। मन्नतधारी भगोरिया हाट मे मांदल की थाप पर जमकर थिरके। मन्नतधारीयो ने बताया की वे परिवार के सदस्यों को रोग मुक्त रखने तथा आगामी दिनों में अच्छी बरसात के लिए गल देवता की मन्नत ली है। धुलैंडी के दिन सूर्यास्त के पूर्व गल देवता पर लटक कर परिक्रमा के बाद मन्नत पूरी करते है ।

गुदवाए नाम और झूलों का लिया आनंद

ग्राम रंभापुर के भगोरिया हाट में महिलाओं व युवतियों ने सौंदर्य प्रसाधन सामग्री खरीदने के साथ ही हाथों में नाम गुदवाए और झूलों को आनंद लिया। वहीं बच्चों ने कुल्फी व आइसक्रीम का लुत्फउठाया। ग्रामीणों ने बताया भगोरिया में अब काफी अंतर आ गया है। बदलते दौर के साथ पहनावे में भी परिवर्तन आया है। इसके बाद भी उत्साह में कोई कमी नहीं आई है। आदिवासी ढोल मांदल की थाप पर ढलती शाम तक जमकर थिरके।

जहां नारियों की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते है- एसडीओपी बामनिया

माही की गूंज, पेटलावद। पीयूष पटवा

नारी ने हमेशा से परिवार संचालन का उत्तरदायित्व सम्भालते हुए समाज निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हमारे आदि ग्रंथों में नारी को गुरुतर मानते हुए हुए कहा गया है कि जहां नारियो की पूजा होती है वहा देवता निवास करते है। उक्त विचार प्रशासनिक अधिकारी एसडीओपी श्रीमती बबिता जी बामनिया ने अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल व कन्या मण्डल के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल व कन्या मण्डल पेटलावद द्वारा अंतराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में स्थानीय प्रेमसागर गार्डन में आयोजित एक समारोह में धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित बबीता बामनिया ने विश्व महिला दिवस पर नारीशक्ति को हार्दिक बधाई देते हुए कहा कि आज की महिला अबला नही सबला बन चुकी है।आज महिलाए अपनी प्रतिभा एवं जीवटता का सभी क्षेत्रो में सफ्लतापूर्वक प्रदर्शन कर अपना परचम लहरा रही है। महिला मंडल द्वारा आयोजित उक्त कार्यक्रम की अध्यक्षता तेरापंथ सभाध्यक्ष श्री झमकलाल भंडारी ने की। कार्यक्रम की शुरुआत महिला मंडल ने नमस्कार महामन्त्र एवं महाप्रज्ञ अष्टकृम से की। स्वागत भाषण तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती मनीषा पटवा ने दिया। कार्यक्रम में साध्वी प्रमुखा श्री कनकप्रभा जी के सन्देश का वाचन महिला मंडल की पूर्व अध्यक्षा श्रीमती मीना मेहता ने किया। इस अवसर पर महिला मंडल की ओर से श्रीमती मांगूदेवी मोन्नत, राजकुमारी निमजा, कांतादेवी पटवा, मनीषा पटवा, हेमलता कोठारी आदि ने समाज मे विशिष्ट सेवा प्रदान करने वाली सेवाभावी श्रीमती चंद्रकांता पीपाड़ा एवं सेवाभावी शिक्षिका श्रीमती संगीता झमकलालजी पटवा का प्रेरणा सम्मान से सम्मानित किया गया। प्रेरणा सम्मान का वाचन श्रीमती रेखा पालरेचा ने किया। उक्त गरिमामय कार्यक्रम में महिला मंडल व कन्या मण्डल द्वारा ष्बेटी बचाओष् व ष्बेटियों के जीवनष् पर बहुत ही रोचक प्रस्तुति दी गई ,इस अवसर पर ज्ञानशाला की नन्ही बालिका ष्कृति भंडारीष् का भी सम्मान किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित एसडीओपी श्रीमती बबिता बामनिया के अलावा विशेष रूप से आमन्त्रित अतिथियों का भी महिला मंडल द्वारा बेच लगाकर सम्मान किया गया। कार्यक्रम में वरिष्ठ पारसमल गादिया, निर्मला देवी पटवा, श्रीमती पुष्पा पालरेचा, श्रीमती मोना पंकज पटवा, मुदित पटवा आदि ने भी अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम के पूर्व महिला मंडल द्वारा स्थानीय तेरापंथ भवन से कार्यक्रम स्थल तक एक विशाल दुपहिया वाहन रैली का आयोजन भी किया गया।

रैली को स्थानीय तेरापंथ समाज की विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों ने हरी झंड़ी दिखाकर रवाना किया। उक्त कार्यक्रम में सभा मंत्री लोकेश भंडारी सहित नरेंद्र मोन्नत, अभातेयुप कार्यकारिणी सदस्य रूपम पटवा, तेयुप अध्यक्ष प्रमोद मेहता, मंत्री अनुराज भंडारी, पीयूष पटवा, संजय गादिया, दीपक मोन्नत, पंकज जे.पटवा आदि सहित बड़ी संख्या में महिला मंडल की महिलाए व कन्या मण्डल की सदस्या विशेष रूप से उपस्थित थी।कार्यक्रम में रोचक गेम के साथ साथ महिलाओ ने होली के रंग कार्यक्रम के तहत एक दूसरे को गुलाल लगाकर होली की शुभकामनाएं भी दी। कार्यक्रम का कुशल संचालन सोनू भंडारी व प्रीति पटवा ने संयुक्त रूप से किया। आभार तेरापंथ महिला मंडल की मंत्री हेमलता कोठारी ने माना।

कपास खरीद के नाम पर किसानों से हुई ठगी

करीब एक करोड का चूना लगाया किसानों को

माही की गूंज, झाबुआ।

झाबुआ में किसानों से कपास की कथित ऊंचे दामों पर खरीदी को लेकर की गई ठगी का मामला सामने आया है। इस गोरखधंधे में करीब एक करोड से अधिक की राशि की ठगी की बात चर्चा में बनी हुई है। इसे लेकर किसानों में काफी गुस्सा देखने को मिल रहा है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार सफेद सोने की खरीदी को लेकर मंडी परिसर में किसानों के साथ बडा गडबड झाला सामने आया है। जहां 100 से अधिक किसानों से कपास अजय एवं अभय पुरोहित द्वारा खरीद तो लिया गया, किन्तु उन्हें बार बार चक्कर लगवाने के बाद भी पिछले 2 महीनों से पैसों का भुगतान नहीं किया जा रहा है। और इस प्रकार एक करोड से अधिक की रकम की ठगी की बात चर्चा में बनी हुई है।

इसे लेकर कई किसानों ने अजीत और अजय नाम के व्यापारियों का जिक्र करते हुए कहा कि इन्होंने अभी तक पैसे नहीं दिए है। इसे लेकर किसानों ने अजीत और अजय को पुलिस थाने में भी सौंपा था तथा एसडीएम को भी यह बात संज्ञान में लाई गई थी, किन्तु पुलिस ने इन्हें छोड़ दिया है तथा एसडीएम साहब ने भी कोई कदम नहीं उठाया है। किसानों ने इसे लेकर पुलिस को भी गुहार लगाई है तथा थाने पर रिपोर्ट दर्ज कराने पहुंचे, तो पुलिस द्वारा भी उनकी रिपोर्ट नहीं लिखी जा रही है।

इस बारे में एसडीएम अभय खराडी का कहना है कि अजय एवं अभय पुरोहित के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने के लिए पुलिस थाना झाबुआ को लिखा गया है तथा इन व्यापारियों के विरुद्ध निश्चित ही कार्रवाई की जाएगी।

एचडीएफसी बैंक में मनाया गया महिला दिवस

माही की गूंज, झाबुआ। एचडीएफसी बैंक झाबुआ द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में झाबुआ की सम्मानीय नारीशक्ति का सम्मान किया गया । कार्यक्रम की थीम हेल्थ एवं फिटनेस थी जिसने महिलाओ को किस तरीके से अपनी हेल्थ का ध्यान रखना चाहिए इसकी जानकारी दी गई इसके लिए डॉ शीना भूरिया द्वारा कुछ महत्वपूर्ण बातें बताते हुए मानव शरीर के स्वास्थ्य के महत्व की जानकारी देते हुए कहा कि यदि हमे आरोग्यता को बनाये रखना है तो अपने शरीर के प्रति भी ध्यान रखना जरूरी है । खान पान के अलावा वातावरण एवं मानसिक रूप से स्वस्थ रहने के लिये नियमित दिनचर्या का होना आवश्यक है । डा. शीना भूरिया ने हेल्थ एवं फिटनेस को लेकर कई टिप्स भी दिये । कार्यक्रम मे मुख्य रूप से अतिथि कल्पना भूरिया, डॉ शीना भूरिया , किरण शर्मा, ज्योति रांका, सुषमा दुबे, निर्मला झरबड़े, दीप्ति सरन, अर्चना राठौर, निवेदिता सक्सेना मौजूद रहे । कार्यक्रम का संचालन उत्कर्ष शर्मा और निरंजन तोमर ने किया एवं आभार ब्रांच मैनेजर अभिषेक सक्सेना ओर विश्वप्रताप राठौर ने प्रकट किया।

हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी की महिलाओं ने मनाया फागोत्सव

माही की गूंज, झाबुआ । पुरानी हाऊसिंग बोर्ड कालोनी माँ जगदम्बे मंदिर पर सभी महिलाओं ने रविवार को फाग उत्सव धुमधाम से मनाया । इस अवसर पर महिलाओं ने ढोलक, मंजीरों की संगीत स्वर लहरियों में माता के भजन गाये और एक दुसर को गुलाल लगाकर बधाईया दी । माता रानी के दरबार में महिलाओं ने पूजा अर्चना के साथ ही कीर्तन भजनों का आयोजन किया '' कन्हैया तेरी बांसूरी की तान से बृज मंडल झुम उठा '' होली का त्यौहार है आया, झुम के खुशिया साथ में लाया , आज राधा की खैर नही है, रंग डालेगी बृज बिहारी '' जैसे भजनों से पूरा वातावरण फाल्गुनी बन गया । इस अवसर पर कालोनी की सभी महिलाओं ने कण्डे की होली जलाई। सभी महिलाओं ने महिला दिवस की परस्पर बधाईया भी दी ।

बलाई समाज का सामूहिक विवाह सम्मेलन होगा

माही की गूंज, बड़वाह। बलाई समाज महासंघ व सामाजिक विचार मंच की महत्वपूर्ण बैठक राजाजी इंटरप्राइजेस कार्यालय पर रविवार को संपन्न हुई। बैठक में निर्णय लिया गया कि होली फाग उत्सव रंगपंचमी 14 मार्च को मनाया जाएगा व भारत रत्न डॉ.भीमराव अंबेडकर जयंती 14 अप्रेल को हर्षोल्लास के साथ मनाई जाएगी। बलाई समाज सुधार समिति के द्वारा मुख्यमंत्री कन्यादान योजना अन्तर्गत बलाई समाज का निःशुल्क सामूहिक विवाह सम्मेलन 7 मई को होगा। इस अवसर पर बलाई समाज सुधार समिति अध्यक्ष महेश सीटोले, सामूहिक विवाह समिति अध्यक्ष जगदीश खांडे, अजा परिषद अध्यक्ष जगदीश खेडेकर, गोविंद भगवते, चुन्नीलाल प्रसाद, पीएल भालसे, शंकर सावले, एसआर भालेराव, रमेशचंद मंडलोई ,भारत खांडे, बछूकनाडे, टीआर मगरे, बीएल सावले, रेवाराम यादव, गोपाल कोचले सहित समाजजन मोजूद थे। बैठक का संचालन बीआर अवचरे ने किया व आभार सामाजिक विचार मंच संयोजक एनएस सोलंकी ने किया।

आदिवासी परंपरानुसार मनाया गल पर्व, मचान पर हवा में घूमें मन्नतधारी

माही की गूंज, झाबुआ।

भगोरिये पर्व के साथ ही आदिवासी ग्रामीणों में होली के पर्व को लेकर भी खाफी उत्साह देखने को मिलता है। जहां यह मान्यता है कि आदिवासी परम्परानुसार ग्रामीणों के द्वारा गल देवता से अपने एवं परिवार की खुशहाली के लिए मन्नत ली जाती है और मन्नत पूरी होने ही 30 फुट ऊंचे गल पर गल देवता की पूजा अर्चना कर उस पर खुद को बांधकर गल के चारो ओर उपर हवा में घुमाया जाता है। आदिवासी अंचलो में मान्यता है कि मन्नत पूरी होने पर गल देवता को बकरे की बलि के साथ ही गल के उपर मन्नतधारी को बांधकर गोल घुमाया जाता है। इसके साथ ही भगोरिये पर्व के दौरान से ही मन्नतधारी अपने शरीर में हल्दी लगाकर अपनी खुशी का इंजहार करना शुरू कर देते है। इन दिनों बाजारों में ग्रामीण मन्नतधारी अपने शरीर पर हल्दी लगाकर अपनी मन्नत को पूरा करने की खुशी जाहिर करते हुये दिखाई देते है। जिले भर में होलीका दहन के दूसरे दिन ग्रामीण जन मनाते है गल बाबजी का त्यौहार (गल पर्व) कालेज मैदान के निकट ग्रामीणों द्वारा गल का त्यौहार मनाया गया, यहाँ

आसपास के क्षेत्र के मन्नत धारी भी पहुचते है सभी अपनी मानता पूरी करने गल घूमते है।

यह है प्रथा

इसमें मन्नत धारी गल घूमता है जिसमे आसपास के गाँवो से अपने परिवारजन व गांव वालो के साथ मन्नत धारी मन्नत पूरी करने गल स्थल पहुचता है गल स्थल पर एक दिन का मेला लगता है जिसमे ग्रामीणजन नाच गाकर झूले चकरी इत्यादि का आनन्द उठाते है। मान्यता है की ग्रामीण यह त्यौहार मन्नत धारी की मानता पूरी करने के लिए मनाते है जिससे परिवार में सुख-समृद्धि आती है और स्वास्थ्य सम्बन्धी सारी परेशानियां दूर होती है।

हवा में झूलते हुए 5 से 7 परिक्रमा

मान्यता है कि मन्नत विवाहित व्यक्ति ही उतार सकता है, इसलिए बहुत से मन्नतधारियों के परिजन ने इस परंपरा का निर्वहन किया। तड़वी ने मन्नतधारियों को गल पर घुमाया।मन्नतधारी को कमर के बल रस्सी से बांधा जाता है। फिर मन्नत के अनुसार वह गल देवरा की जय करते हुए हवा में झूलते हुए 5 से 7 परिक्रमा करता है।

इस में एक रस्म में करीब 30 फीट ऊंचे गल (लकड़ी की चौकी पर) पर कमर के बल झूलते हुए देवता के नाम के नारे लगाए जाते हैं। धूलेंडी पर बिलीडोज गांव में गल पर्व के दौरान यह नजारा देखने को मिलेगा। दर्जनो ग्रामीण यहां अपनी मन्नतपूरी करने पहुंचेंगे। किसी के यहां गल देवता की मन्नत के बाद संतान हुई थी तो कोई बीमारी से ठीक हुआ था।

14 वर्षों से लगातार दूर दराज से आते हैं मन्नत उतारने मन्नतधारी

जिले के ग्राम झकनावदा में 14 वर्षों से जारी परम्परा अनुसार इस वर्ष भी झकनावदा श्रृंगेश्वर तीर्थ मार्ग पर स्थित गल बाबजी देव स्थान पर गल बाबा मन्नत उतारने का आयोजन आयोजित किया गया। जिसमे भूरीघाटी, नाडातोड, झकनावद, सेमलिया, बोरिया, खिंदाखो,गुलरीपाडा,केसरपुरा, बोरघाटा स्थित आसपास के क्षेत्र के ग्रामीणों ने पहुँच कर गल बाबजी के दर्शन किये तो वही मन्नत धारियों ने गल बाबजी की 5 परिक्रमा कर गल बाबजी की पूजन अर्चन कर परम्परानुसार गल के मचान पर पहुच कर विधि पूर्वक मन्नत उतारी। वही गल आयोजक समिति के मुख्य कार्यकर्ता धना भाभर झकनावदा ने बताया कि हमारे द्वारा करीब 14 वर्षो से गल का आयोजन किया जा रहा है जिसमे मन्नत धारी मन्नत लेते है और मन्नत पूरी होने में पंद्रात 5 वर्षो तक गल की मन्नत उतारते है और गल बाबजी के पास पहुच कर 5 परिक्रमा कर गल बाबजी की पूजन अर्चना कर अपनी मन्नत पूरी करते है। और साथ ही पौराणिक मान्यता है कि यदि निःशतान को मन्नत लेने से शन्तान की प्राप्ति होती है। साथ ही क्षेत्र से आस पास से बड़ी संख्या में मन्नतधारी ढ़ोल, मांदल की धाप पर नाचते गाते बड़े ही हर्षोल्लास के साथ आते है और मन्नत उतारते है। उक्त आयोजन में कालू भाभर,मयाराम निनामा,गुड्डू गरवाल,शंकर गरवाल,मोहन भुरिया,बंटू भाभर की मुख्य भूमिका रहती है।

साथ ही गल बाबजी की यात्रा एक मेले के रूप में लगती है यहां बर्फ गोला, चाय काफी, अंगूर, संतरा, सेव मिठाई, खेल खिलोने की दुकानें भी लगती है। साथ ही यहां मेले जैसा माहौल रहा। पूरे मेले की सुरक्षा कमान चौकी प्रभारी रज्जन सिंह गणावा,ए एस आई बिलवाल,प्रधान आरक्षक उमेश पुरोहित,प्रधान आरक्षक भूपेंद्र भाटी, आरक्षक भूपेंद्र जाट, हरिराम चौहान, आरक्षक लक्ष्मण मेड़ा, आरक्षक राकेश मौर्य के साथ समस्त क्षेत्रीय कोटवारों ने सम्पाली।

ग्राम डुण्ड्का में गल घूमकर मन्नतधारियों ने उतारी मन्नत

माही की गूंज, खरगोन।

आदिवासी अंचल मे होलीका दहन के दूसरे दिन ग्रामीण मनाते है गल देवता का त्योहार। ग्राम डुण्ड्का में भी ग्रामीणों द्वारा गल का त्योहार मनाया गया। यहां आसपास के क्षेत्र के मन्नतधारी भी पहुंचते है। सभी अपनी मन्नत पूरी करने गल घूमते है। इस वर्ष 8 मन्नतधारियों ने ग्राम डुण्ड्का में गल घूमकर मन्नत उतारी। मन्नतधारी परिवार के सदस्यों को रोग मुक्त तथा आगामी दिनों में अच्छी बरसात के लिए गल देवता की मन्नत लेते है। मन्नतधारी धुलेंडी के दिन सूर्यास्त के पूर्व गल देवता पर लटक कर परिक्रमा के बाद मन्नत पूरी करते है। मन्नतधारी करीबन 25 फीट ऊंचे गल पर कमर के बल झूलते हुए गल देवता का नाम लेते हुए अपनी मन्नत उतारता है। इस दौरान बलि भी दी जाती है। यह परंपरा दशकों से निभाई जा रही है। इस गल पर्व मे आसपास के ग्रामीण शिरकत करते है। किसी भी अप्रिय स्थिति से बचने के लिए पुलिसकर्मी तैनात रहे। इस अवसर पर डुण्ड्का सरपंच प्रतिनिधि प्रताप ताहेड, जनपद सदस्य प्रतिनिधि रस्या पारगी, खच्चरटोडी सरपंच प्रतिनिधि प्रदीप गणावा, उपसरपंच अमरसिहं साबलिया, प्रशान्त टगरिया, यतिक खतेडिया, मिलन खतेडिया आदि उपस्थित थे।

यह है प्रथा

इसमें मन्नतधारी गल घुमता है। जिसमें अपने परिवारजन एवं गांववालों के साथ मन्नत धारी मन्नत पूरी करने गल स्थल पहुंचता है। गल स्थल पर एक दिन का मेला लगता है। जिसमें ग्रामीणजन नाच गाकर झूले चकरी इत्यादि का आनन्द उठाते है। मान्यता है कि ग्रामीण यह त्योहार मन्नतधारी की मन्नत पूरी करने के लिए मनाते है। जिससे परिवार में सुख समृद्धि आती है। और स्वास्थ्य सम्बन्धी सारी परेशानियां दूर होती है। इसमें मन्नत धारी गल पर झुलते हुए दो से तीन परिक्रमा करते है। मान्यता है कि मन्नत विवाहित व्यक्ति ही उतार सकता है। अधिकाशतः तड़वी मन्नतधारी को गल पर घुमाता है।

पोषण जागरूकता के लिए हाट-बाजार में निकाली गई रैली

माही की गूंज, बड़वानी।

महिला एवं बाल विकास विभाग के जिला कार्यक्रम अधिकारी सुनील सोलंकी के निर्देश व ब्लॉक परियोजना अधिकारी निरंजन डोडवे के मार्गदर्शन में सेक्टर जुलवानिया में साप्ताहिक हाट के दिन सोमवार को नगर मे पोषण जागरूकता व्यंजन प्रदर्शनी व रैली का आयोजन किया गया। जिसमें आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओ ने बैनर, पोस्टर लेकर पोषण जागरूकता के नारे लगाए।

स्वास्थ्य एवं पोषण पिरामल फाउंडेशन (नीति आयोग) के ब्लॉक परिवर्तन अधिकारी संतोष सावनेर ने बताया की पोषण पखवाड़ा का उद्देश्य 0 से 6 वर्ष के बच्चों, गर्भवती महिलाओं व धात्री माताओं के पोषण स्तर में सुधार लाना तथा नवजात शिशुओं के कम वजन, बच्चों में ठिगनापन, कुपोषण तथा महिलाओं, बच्चों व किशोरी बालिकाओं में एनिमिया के स्तर में कमी लाकर कुपोषण को दूर करना है ।

इस दौरान सेक्टर पर्यवेक्षक कामिनी सोनाने ने बताया कि आज की थीम ऊपरी आहार एवं वृद्धि निगरानी एवं पोषण जागरूकता, इसी क्रम में पोषण पखवाड़ा के पोषण के प्रति जागरूकता लाने के लिए आँगनवाड़ी केंद्रों पर प्रतिदिन गतिविधि आयोजित कर गर्भवती महिलाओं व नवजात शिशुओं की माताओं तथा किशोरी बालिकाओं को स्वच्छता के साथ भोजन मे उचित व पोषणयुक्त आहार के बारे मे जानकारी दी जानी है। पर्यवेक्षक कोमल सूर्यवंशी ने बताया कि गर्भावस्था से ही पोषण की शुरुआत, इसमें शुरू के 1000 दिवस का महत्व समझाया, किशोरी शिक्षा, पोषण शिक्षा का अधिकार, सही उम्र में विवाह की समझाईश दी जाएगी।

मेडिकल ऑफिसर डॉ.मनोज कदम ने बताया कि गर्भवती महिलाओं का शीघ्र पंजीयन करना आवश्यक है साथ ही समय अनुसार उनकी जांच सुनिश्चित करना है तथा हाय रिस्क में आने वाली गर्भवती महिलाओं को स्वास्थ्य सेवा देने हेतु रेफर करना है। इस अवसर पर सेक्टर की समस्त आँगनवाड़ी कार्यकर्ता, सहायिकाओं सहित किशोरी बालिकाएं, धात्री माताएं तथा गर्भवती महिलाएं मौजूद थी।

बोर्ड परीक्षाओं में पृथकतावादी कांग्रेसी मानसिकता का अक्षम्य प्रदर्शन : शर्मा

माही की गूंज, झाबुआ । वर्तमान में चल रही माध्यमिक शिक्षा मण्डल म0 प्र0 की दसवीं बोर्ड की परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्नों से भी पृथकतावादी कांग्रेसी मानसिकता झलक रही है। कांग्रेस देश के अभिन्न अंग कश्मीर को आज भी आजाद कश्मीर मानती है और इसे निहायत ही बेषर्मी के साथ आज संपन्न हुए सामाजिक अध्ययन के प्रश्नपत्र मे कश्मीर को आजाद कश्मीर संबोधित कर प्रश्न पुछ दर्शाती है। शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के मध्य भारत क्षेत्र के सह संयोजक ओमप्रकाष शर्मा ने मांग की है की इस अक्षम्य अपराध के लिए जवाबदारी को स्वीकार कर षिक्षा मंत्री को तुरंत अपने पद से त्यागपत्र देना चाहिए। इस जानबुझकर की गई त्रुटि के लिए माध्यमिक षिक्षा मण्डल मप्र के अध्यक्ष, सचिव, परीक्षा नियंत्रक, प्रश्नपत्र निर्माणकर्ता सहित समस्त जवाबदारों के खिलाफआपराधिक प्रकरण दर्ज कर कठोरतम कार्यवाही की जाना चाहिए।

अगस्त 1947 में अंगेजो ने भारत को स्वाधिनता देते समय छलपूर्वक भारत का विभाजन किया और उस समय की रियासतो को अपनी मर्जी से किसी एक देष भारत या पाकिस्तान में सम्मिलित होने की आजादी दी। कश्मीर के तत्कालीन राजा हरीसिंह ने भारत के साथ विलय स्वीकार किया। अक्टूबर 1947 में ही कबाइलियों ने हमला किया जिसके पश्चात तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरु अपनी अपरिपक्वता या वैचारिक पूर्वाग्रह के चलते इस मामले को युएनओ मे ले गए। प्रधनमंत्री नरसिंहराव के प्रधानमत्रित्वकाल में संसद ने सर्वसम्मति से निर्णय पारीत कर कश्मीर को भारत का अभिन्न अंग स्वीकार किया था।

आज भी जम्मु कश्मीर की विधनसभा में कुछ स्थान उन कश्मीरीयों के लिए निर्धारित है जो अनधिकृत रुप से पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में निवास करते है। केन्द्र सरकार द्वारा इस राज्य को विषेष दर्जा देने वाली धारा 370 हटाने के समय केन्द्रिय गृहमंत्री ने संसद में स्पष्ट रुप से कहा की पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर भी भारत का अभिन्न अंग है और उसे भारत में मिलाने के लिये यदि जान की बाजी भी लगाना पडी तो हम तैयार है। मुख्यमंत्री कमलनाथ को इस प्रकरण पर तुरंत अपने विचार बताना चाहिए कि क्या वे स्वयं भी अब भी कश्मीर को आजाद मानते है।

शोक संतृप्त परिजनों संग मनाई होली

माही की गूंज, बड़वाह। हिन्दू संस्कृति में त्योहारों का अपना अलग महत्व है होली के रंगों में छिपी होती है कुछेक सामाजिक रीति रिवाज और संस्कृति उसी के तहत जिन भी परिवारों के परिजन होली के पूर्व स्वागवासी हो जाते है उस दुखद परिजनों के त्योहारों की शुरुवात होली के रंगों से होती है। परिजनों के रिश्तेदार समाजजन होली धुलेंडी के दिन आते है, परिवार वालों को जहा होली दहन होता है, वहा ले जाते है होली को रंगभरा पानी चढ़ाते है और फिर उन्हें रंग लगाया जाता है। यह संस्कृति सदियों से चल रही है। इस तारतम्य में आज सामाजिक विचार मंच के संयोजक डॉ. एनएस सोलंकी, पीएन कांदीडे, अनिल सावले, गोपाल कोचले, एनके कोचले, पीएल भालसे, अनिल सावले, विजय बडीदे, बीएल सावले व साथीगण दुखद परिजन ओमप्रकाश रावल, राजेश गांगले, अशोक भालसे, पुष्पेंद्र रावल, सुदर्शन पाटोदे, अशोक अहीरवाल, ओंकारलाल खांडे के घर जाकर सामाजिक रीति-रिवाज अनुसार रंग लगाकर उन्हें होली की बधाई दी।

फूलों की होली के साथ मनाया महिला दिवस

माही की गूंज, खंडवा। किशोर नगर स्थित श्री सिद्धि विनायक गणेश मंदिर में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर सिद्धि विनायक महिला मंडल की बहनों द्वारा भजनों एवं फाग गीतों के साथ फूलों की होली मनाई गई। यह जानकारी देते हुए ज्योति मंगवानी ने बताया कि आयोजन के दौरान मंडल की बहनों द्वारा रिद्धि-सिद्धि के दाता पधारो श्री गणेश जी..., भागे रे भागा नंदलाला राधा ने पकड़ा रंग डाला..., मेरा श्याम बड़ा अलबेला मेरी मटकी को मार गया ढेला...,श्री कृष्ण के हाथ पिचकारी आज बज में होली रे रसिया... आदि सहित अनेकों मधुर संगीतमय गीतों के साथ फाग गीत गाते हुए रंग लगाया गया। गीतों पर बहनों ने जमकर नृत्य किया। सारा वातावरण कृष्णमय हो गया। इस मौके पर बहनों द्वारा फूलों की होली मनाई जाकर एक दूसरे को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की बधाइयां दी गई। आरती पश्चात मिठाई का वितरण किया गया। इस मौके पर बड़ी संख्या में मंडल की बहनें उपस्थित थी।

महिला दिवस पर हुआ कार्यक्रम

माही की गूंज, खरगोन। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर गत रविवार को शहर के मोतीपुरा में महिला सभा संस्था द्वारा महिलाओं के लिए कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अंजली खोड़े ने अपने उद्बोधन में नारी सशक्तिकरण के संदर्भ में महिलाओं को प्रेरणासूत्र दिए। उन्होंने कहा कि महिला दिवस का औचित्य तक तक प्रमाणित नहीं होता, जब तक कि सच्चे अर्थों में महिलाओं की दशा नहीं सुधरती। राजकुमारी कुमरावत द्वारा उपस्थित सदस्यों का परिचय व अभिवादन किया। इस अवसर पर संस्था अध्यक्ष सुधा मोयदे, उपाध्यक्ष राजकुमारी कुमरावत, कोषाध्यक्ष प्रीति जैन, काउंसलर पूजा परसाई सहित अन्य महिलाएं उपस्थित रहीं।

अधिकारियों ने एक दूसरे को तिलक लगाकर मनाया होली मिलन समारोह

माही की गूंज, बड़वानी। सोमवार को आयोजित समय - सीमा बैठक के पश्चात् कलेक्टर एवं समस्त अधिकारियों ने एक दूसरे को सूखा गुलाल का टीका लगाकर एवं मुह मीठा करवाँकर होली मिलन कार्यक्रम मनाया। इस दौरान कलेक्टर अमित तोमर, जिला पंचायत सीईओ मनोज सरियाम, अपर कलेक्टर रेखा राठौर, संयुक्त कलेक्टर अभयसिंह ओहरिया, एसडीएम बड़वानी अंशु जावला सहित समस्त विभागो के जिला अधिकारी उपस्थित थी।

सियासी घमासान से झाबुआ जिले की राजनीति पर भी पड़ रहा प्रभाव

भविष्य में ऊंट किस करवट पर बैठेगा, यह कहना भी जल्दबाजी होगा

माही की गूंज, झाबुआ।

होली के अवसर पर जिले में जहां भगोरिया पर्व का समापन होलिका दहन के साथ पूरे अंचल में परम्परागत संस्कृति के साथ संपन्न होने की ओर अग्रसर था। वहीं भोपाल में कमलनाथ सरकार को वैशाख माह की इस पूर्णिमा को लगे ज्योतिरादित्य सिंधिया के ग्रहण से जिले की राजनीति में भी भूचाल ला दिया। सत्ताधारी कांग्रेस पार्टी के नेतागण जो चौडी छाती करके निकलते थे। अचानक उन्हें दुबकते हुए देखा गया और निर्वाचित जनप्रतिनिधि विधायकगण भी भगोरिया पर्व की मस्ती एवं अपने जनसंपर्क के दौरान आई थकान को मिटाने की बजाय उन्हें भोपाल तलब किए जाने से उल्टे पांव राजधानी में भागना पडा। राजनीति में जिन विधायकों ने कमलनाथ की सरकार में मंत्रीपद मिलने की आस संजोये रखी थी, उनके दिल के अरमानों पर पानी फिर गया। पूर्व केन्द्रीय मंत्री एवं वर्तमान में झाबुआ विधायक कांतिलाल भूरिया की ही बात करें तो संकेत मिले थे कि होली दहन के बाद मुख्यमंत्री कमलनाथ द्वारा किये जाने वाले मंत्रिमंडल के विस्तार में उन्हें सम्मानजनक मंत्री पद मिलेगा, किन्तु इसी बीच सिंधिया के कांग्रेस पार्टी से त्यागपत्र देने के साथ ही उनके समर्थक डेढ दर्जन से अधिक विधायकों द्वारा बेंगलुरू से एक साथ भेजे गये त्यागपत्रों ने ऐसा बवाल मचा दिया कि कमलनाथ सरकार अचानक अल्पमत में आ गई।

कांग्रेस की सरकार बनने के साथ ही 15 साल से सत्ता से विमुख रहने वाले कांग्रेस के दिग्गजों, नेताओं की तूती पूरी ताकत के साथ बजने लगी थी। पूरा प्रशासन ही इन कांग्रेसी नेताओं के इशारों पर नाचने का मजबूर था। कथित तौर पर भूमाफियों पर कार्रवाई की आड़ में विरोधी लोगों से बदला निकाले जाने का सिलसिला भी शुरू हो चुका था तथा जिले में चहूं ओर इस तरह के कदमों को लेकर लोग मुखर होकर विरोध करने भी उतर गए। जहां तक प्रशासन की बात करें पूरा प्रशासन ही एक तरह से कांग्रेस की गोद में ही बैठ गया था तथा जैसे जैसे ईशारे मिलते गए प्रशासन में बैठे अधिकारियों ने उन्हें खुश करने के लिए वह सब कुछ किया जो उन्हें नहीं करना चाहिये था। नियम, कानून कायदों की धज्जियां भी कथित तौर पर दादागिरी के साथ उडाई जाने लगी। जैसे ही प्रदेश में कांग्रेस की कमलनाथ सरकार के संकट की खबरें चली, इसके साथ ही वे अधिकारीगण जो आज तक कांग्रेसी नेताओं के ईशारों पर सब कुछ करने के लिए एक पांव पर खडे रहते थे, उन्हे अचानक ऐसा झटका लगा कि एक ही दिन में उनके सूर भी बदल गए और बातचीत करने का तरीका भी बडा सौम्य और सद्भावना वाला बन गया। और यह सब कुछ बदलाव सत्ता की चाबी जो अभी तक अन्तरित नहीं हुई है, केवल संभावनाओं पर जो कयास लग रहे है। इसके चलते प्रशासन में बैठे लोगों भी हडबडाहट साफ-साफ दिखाई देने लगी है।

दशामाता पर्व के पहले ही भाजपा की दशा सुधारने के अंदाज लगाये जा रहे है। और सिंधिया की एंट्री के बाद भाजपा प्रदेश में फिर से सरकार बनाने की तैयारी कर रही है। ऐसे में इस आदिवासी अंचल में कांग्रेस की राजनीति जो एक छत्र बन चुकी थी, वह दरकती हुई दिखाई देने लगी है। इस बदलाव को लेकर कोई भी नेता कुछ बोलने के लिये आगे नहीं आ रहा है। झाबुआ-आलीराजपुर के पांचों विधायक कांतिलाल भूरिया, वीरसिंह भूरिया, वालसिंह मैडा, कलावती भूरिया एवं मुकेश पटेल धुलेंडी के दिन ही कमलनाथ के फरमान पर भोपाल पहुंच चुके हैं। जिन्हे बुधवार को प्रदेश के 90 से अधिक सत्ताधारी विधायकों के साथ जयपुर में भेज दिया गया है ताकि और तोडफाड नहीं हो। ऐसे में जिले की राजनीति जानने वाले यह भी कहते देखे गए है कि सिंधिया खेमें से झाबुआ के पूर्व विधायक जेवियर मेडा को लेकर चर्चाओं का बाजार गर्म है कि क्या जेवियर एवं सिंधिया समर्थक जितने भी कांग्रेस के कार्यकर्ता है, क्या वे भी सिंधिया के पद चिन्हों पर चलते हुए कांग्रेस पार्टी से किनारा करेंगें। अभी इसे लेकर कोई भी कुछ कहने को तैयार नहीं है तथा फिलहाल तो राजनीति से जुडे कांग्रेसी कांग्रेस के साथ ही रहने की बात कर रहे है। तथा बडे-बडे नेता अभी यहां उपलब्ध नहीं है। यदि कमलनाथ सरकार फ्लोर टेस्ट में अपना बहुमत साबित नहीं कर पाती है, तो तय है कि यहां भाजपा की सरकार सवा साल के अंदर ही फिर से आएगी। ऐसे में प्रशासन में बैठे अधिकारियों में भी भय का माहौल अभी से दिखाई देने लगा है। बदले घटनाक्रम एवं परिदृश्य के बाद भी झाबुआ जिले की कांग्रेस की राजनीति पर कोई असर अभी तो नजर नहीं आ रहा है।

कांग्रेस सरकार स्थिर है

मध्यप्रदेश में कांग्रेस की सरकार पूरी तरह स्थिर है और झाबुआ जिला कांग्रेस का ही गढ है। ज्योतिरादित्य सिंधिया जब तक कांग्रेस पार्टी में थे, वे हमारे नेता थे। उनका कांग्रेस पार्टी से त्यागपत्र देकर जाना उनका व्यक्तिगत निर्णय है। झाबुआ सहित पूरे प्रदेश के कांग्रेसजनों के नेता कमलनाथ है और उनके नेतृत्व में ही प्रदेश में कांग्रेस की सरकार आगे भी काम करती रहेगी।

जेवियर मेडा, पूर्व विधायक झाबुआ

जिले में नहीं पड़ेगा असर

सिंधियाजी के पार्टी छोड कर जाने का कुछ भी असर झाबुआ जिले में नहीं पड़ेगा। यहां कांग्रेस पूरी तरह एकजूट होकर ताकत के साथ खड़ी हुई है। जिले से कोई भी कांग्रेस कार्यकर्ता पार्टी छोड़ कर नहीं जा रहा है। सभी लोग कांग्रेस के साथ है। यहां किसी भी प्रकार की पेशकश नहीं हुई है।

निर्मल मेहता, जिलाध्यक्ष कांग्रेस, झाबुआ

भाजपा संगठन मजबूत होगा

सिंधिया के भाजपा की सदस्यता लेने के बाद हमारा संगठन और अधिक मजबूत बनेगा। सिंधिया के आने के बाद भाजपा संगठन के प्रति लोगों का रूझान तेजी से बढेगा तथा उनका यह कदम निश्चित ही सराहनीय है। अब अन्य जगहों की तरह ही झाबुआ जिले में भी कांग्रेस छोड कर भाजपा में आने वालों का सिलसिला शुरू होगा। प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा भी मुझे बधाइयां भेजी जा रही है। प्रदेश में अब भाजपा की सरकार शीघ्र ही बनने वाली है।

ओम प्रकाश शर्मा, जिलाध्यक्ष भाजपा

सिंधिया के निर्देश का पालन करेंगे

सिंधियाजी जन-जन के नेता एवं आस्था के प्रतीक है। सिंधिया फैंस क्लब के लोग सिंधियाजी के मार्गदर्शन में ही काम करते है। हम सभी सिंधियाजी के साथ ही और उनके निर्देशों का पालन करेंगे।

विश्वनाथ सोनी, जिलाध्यक्ष सिंधिया फैंस क्लब, झाबुआ

पर्यावरण सहेजने की दिशा में इको फ्रेंडली होलीका दहन नवाचारः जैन

माही की गूंज, मेघनगर। होली के मौके पर हरे-भरे पेड़ों को बचाने और शहर के वातावरण को स्वच्छ बनाने के लिए रोटरी क्लब अपना की पहल पर मेघनगर बड़ा गणपति कान्हा ग्रुप ने इको फ्रेंडली कण्डे की होलिका दहन करके पर्यावरण सहेजने की दिशा में नवाचार का संदेश दिया। मेघनगर शहर की हृदय स्थली दशहरा मैदान पर इको फ्रेंडली होलिका का दहन किया गया। जिसमें गाय के गोबर से तैयार गौ-काष्ठ और कंडों का इस्तेमाल किया गया। पर्यावरण शुद्धि की दिशा में होलिका दहन की पूजा में कई परिवारों ने लोंग इलाइची एवं कपूर लेकर भी इको-फ्रैंडली तरीके से होलिका दहन आयोजन में जुटे हैं। एक होलिका दहन में कम से कम 6 से 10 क्विंटल लकड़ी स्वाहा हो जाती है.. इस बार इको फ्रेंडली होलिका दहन की अनूठी पहल में कंडे का इस्तेमाल किया गया। जिससे प्रत्येक एक होली में एक पेड़ को बचाने की कवायद की गई। होलिका दहन एवं इको फ्रेंडली होली को देखने के लिए दूर-दूर से कई महिलाएं एवं पुरुष भी शामिल हुए। महिलाओं ने भी होली के चारों ओर परिक्रमा कर अपनी बुराइयों को होलीका में दहन किया। इको फ्रेंडली होलिका दहन करने के लिए विशेष रूप से प्रादेशिक समाजसेवी सुरेश चंद पूरणमल जेन दशहरा मैदान पहुंचे।जहां उन्होंने पूर्ण विधि-विधान से होलिका का दहन किया एवं इस दौरान रोटरी क्लब अपना पप्पू भैया मित्र मंडल कान्हा ग्रुप द्वारा एक दूसरे को रंग गुलाल लगाकर होली की शुभकामना दी गई। इस दौरान थाना प्रभारी मेघनगर कौशल्या चौहान, शौर्य भारती महिला संस्था से आरती भानपुरिया रोटेरियन माया शर्मा, योग्यता प्रजापत, श्रीमती सिंघल द्वारा इको फ्रेंडली होली का दहन के लिए कान्हा ग्रुप को रोटरी अलंकरण से सम्मानित किया गया। होलिका दहन कार्यक्रम में समाजसेवी सुरेश चंद पूरणमल जैन, रोटरी क्लब अपना के असिस्टेंट गवर्नर भरत मिस्त्री, उद्योगपति जयंत सिंघल, रोटरी क्लब अपना अध्यक्ष महेश प्रजापति, राजेश भंडारी, हितेश पडियार, कवि निसार पठान, पार्षद आनंदीलाल पडियार, बड़े गजानंद कान्हा ग्रुप नरेश बारोट, ललन डामोर, अर्जुन डामोर सहित नगर के गणमान्य नागरिक माता बहने श्रद्धालु एवं मीडिया पत्रकार साथी उपस्थित रहे। इस इको फ्रेंडली होली आयोजन की सराहना जगह-जगह की जा रही है।

इको फ्रेंडली कंडे से बनी होलीका दहन के फायदे

होली दहन में 6 से 10 क्विंटल लकड़ी लगती है। जिससे एक पेड़ को स्वाहा हो जाता है। उस पेड़ को बचाना की कवायद। इको फ्रेंडली होली में कंडे की वजह से वातावरण की शुद्धि होती है क्योंकि कंडों में पूजा की सामग्री एवं गोमूत्र के गोबर का इस्तेमाल होता है जो हिंदू संस्कृति के लिए पवित्र माना गया है।इस पहल को देखने के लिए कई परिवार एकत्रित होंगे जिसको पर्यावरण सहेजने की दिशा में विशेष मैसेज जाएगा। एवं सामूहिक होली दहन में रंग गुलाल लगाकर होली आयोजित होगी। वायु प्रदूषण से मुक्ति,होलिका दहन में कम खर्च में बेहतर उत्सव।होलिका दहन के दौरान कपुर व छोटी ईयची होली डाली जाती है जिससे रोग मुक्त वातावरण बना रहता है।

भगोरिया हाट एवं त्योहारिया बाजार में जमकर बिकी माजम-गुजरी

माही की गूंज, झाबुआ।

शहर में रविवार को लगे भगोरिया हाट के साथ सोमवार को लगे त्यौहारिया हाट में माजम-गुजरी की बिक्री जमकर हुई। होटलों के साथ ठेलगाड़ियों पर भी माजम-गुजरी आवाज लगाकर व्यवसाईयों ने बेची, जहां पहुंचकर ग्रामीणों ने अपनी प्रिय मिठाई की खरीदी की।

ज्ञातव्य रहे कि भगोरिया हाट में ग्रामीणजन, जिसमें बड़े, बच्चों और बुजुर्गो के साथ युवा भी माजम-गुजरी की खरीदी कर इसका जमकर लुत्फउठाते है। यह मिठाई जहां ग्रामीण शोकियां तौर पर खाते है वहीं धुलेंडी एवं गल पर्व में भी इस मिठाई को पूजन सामग्री के रूप में उपयोग में लिया जाता है। होटल व्यवसायी जिले में लगने वाले भगोरिया हाटों में इन्हें बेचने के लिए बड़ी मात्रा में होटल पर बनाकर थोक एवं रिटेल में भी बेचने का काम करते है। माजम जहां चाष्नी एवं शक्कर से होटलों पर ही बनाई जाती है वहीं गुजरी रेडिमेड तैयार बाहर से मंगवाई जाती है।

माजम 60 एवं गुजरी 70 रू. किलो

शहर के बाबेल चौराहे पर माजम-गुजरी बेच रहे रिंकू रूनवाल एवं प्रदीप राजपुरोहित ने बताया कि वह हर वर्ष भगोरिया हाट एवं त्यौहारिया हाट में ठेलगाड़ी लगाकर माजम-गुजरी बेचते है। इस दौरान 3-4 क्विंटल माजम एवं 4-5 क्विंटल गुजरी का उठाव हो जाता है। इससे अच्छी आय प्राप्त हो जाती है। माजम इस बार 60 रू. किलो एवं गुजरी 70 रू. किलो के भाव से बेच रहे है। पिछले वर्ष की तुलना इस बार भाव में कोई वृद्धि नहीं हुई है। झाबुआ में रविवार को लगे भगोरिया हाट बाद सोमवार को त्यौहारिया बाजार में भी दोनो व्यवसाईयों ने बाबेल चौराहे पर दुकान लगाकर करीब 8-10 क्विंटल माजम और गुजरी बेचने का कार्य किया।

जिम में जमकर पसीना बहाती हैं सनी लियोनी

बॉलीवुड एक्ट्रेस सनी लियोनी भले ही बॉलीवुड फिल्मों में कम नजर आती हो पर लाइमलाइट में रहना उन्हें खूब आता है। सनी सोशल मीडिया पर भी काफी एक्टिव रहती है। अपने अपडेट्स में सनी प्रोफेशनल लाइफ से लेकर पर्सनल लाइफ की खास बातें भी फैंस के साथ शेयर करती रहती है। सनी लियोनी अपनी फिटनेस को लेकर काफी सजग रहती है और आये दिन अपनी जिम और वर्कआउट की तस्वीरें - वीडियोस सोशल मीडिया पर शेयर करती रहती है। हाल ही में उनका एक वीडियो सोशल मीडिया पर खूब वायरल हो रहा है। इस वीडियो में सनी ने अपनी एनर्जी दिखाने की कोशिश की हैं। सनी ने पहली बार ईएमएस कसरत करते हुए दिखाई दे रही है। सनी ने अपने वीडियो के कैप्शन में लिखा है कि उन्हें इस एक्सरसाइज को करते हुए काफी दिक्कत आयी पर वो जल्द बेहतर हो जाएंगी। वर्क फ्रंट की बात की जाए तो सनी लियोनी जल्द अपनी आने वाली हॉरर फिल्म कोका कोला में नजर आएंगी। इस फिल्म के लिए सनी ने मेहनत की है और देहाती भाषा भी सीखी है। बॉलीवुड में सनी लियोनी ने ज्यादा फिल्में नहीं की है पर वो हमेशा लाइमलाइट में रहती है। उनके आइटम नंबर जबरदस्त हिट रहे है। सोशल मीडिया पर उनकी शानदार फैन फॉलोविंग है और इंस्टाग्राम पर उनके करीब 32 मिलियन से ज्यादा फॉलोवर है।

टाइगर के जबरदस्त एक्शन से सजी बाघी - 3 को मिली बंपर ओपनिंग

बॉक्स ऑफिस पर टाइगर श्रॉफ - श्रद्धा कपूर स्टारर फिल्म बाघी - 3 रिलीज़ हुई। फिल्म को शुरूआती रिव्यु में कमजोर कहा जा रहा था पर बॉक्स ऑफिस कलेक्शन के मामले में फिल्म ने बम्पर ओपनिंग मिली है। कहना गलत नहीं होगा कि एक्शन से भरपूर बाघी सीरीज की तीसरी कड़ी दर्शकों को सिनेमाघरों में खींचने में कामयाब रही।

फिल्म ने पहले दिन शानदार कलेक्शन बटोरते हुए करीब 20 से 22 करोड़ का कलेक्शन किया। हालांकि फिल्म बागी 2 के मुकाबले थोड़ा पीछे रह गयी , जिसने पहले दिन 25 करोड़ का कलेक्शन किया था। वीकेंड के दौरान फिल्म के कलेक्शन में उछाल देखने को मिल सकता है। इस वीकेंड होली के त्यौहारी सीजन के चलते छुट्टियों का फायदा भी फिल्म को मिलने वाला है। उम्मीद की जा रही है कि फिल्म शनिवार और रविवार को बम्पर कलेक्शन खींच सकती है। फिल्म में टाइगर श्रॉफ एक बार फिर जबरदस्त एक्शन करते दिखाई दे रहे है। फिल्म में टाइगर के अलावा श्रद्धा कपूर और रितेश देशमुख भी मुख्य भूमिकाओं में है। फिल्म को देशभर में करीब 4400 स्कीन्स पर रिलीज़ किया गया है। फिल्म को ओवरसीज में भी 1100 स्कीन्स पर रिलीज किया गया। अहमद खान के निर्देशन में बनी इस फिल्म के सामने अभी कोई बड़ी फिल्म नहीं है जिस वजह से दर्शकों के लिए इससे बेहतर विकल्प नहीं है। 70 करोड़ के कुल बजट में बनी इस फिल्म को शुरूआती कलेक्शन के आधार पर हिट माना जा रहा है। इससे पहले बीते साल टाइगर श्रॉफ , ऋतिक रोशन के साथ फिल्म वॉर में नजर आये थे। फिल्म वॉर साल 2019 की सबसे कमाऊ फिल्म साबित हुई थी। अब देखना होगा टाइगर के एक्शन का दम फिल्म बाघी - 3 के कलेक्शन को कहां तक ले जा पाता है।

12 साल पहले एक कमरे के मकान में किराए पर रहता था नेहा का परिवार

नेहा कक्कड़ इंडस्ट्री की नामचीन बॉलीवुड सिंगर्स में शुमार की जाती है और आज वो शोहरत के जिस मुकाम पर है, यहां तक पहुंचने के लिए उन्होंने बेहद कड़ा संघर्ष किया है। नेहा कक्कड़ सोशल मीडिया पर भी काफी एक्टिव रहती है और हाल ही में उनका एक पोस्ट काफी वायरल हो रहा है। नेहा कक्कड़ भले ही आज कामयाबी और शोहरत के शिखर पर है पर वो अपने संघर्ष को दिनों को कभी नहीं भूलती। हाल ही में उन्होंने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक तस्वीर शेयर की है। इस तस्वीर में नेहा ने अपने पुराने और नए घर की तस्वीरें एक कोलाज में शेयर की है। इस तस्वीर के साथ नेहा ने एक बहुत प्रेरणादायक कहानी भी शेयर की है, जो उनके 12 साल के संघर्ष की कहानी बयां करती है। नेहा की तस्वीरों में एक ऋषिकेश का उनका वो घर है जिसमे वो 12 साल पहले किराए पर रहा करती थी। दूसरी तस्वीर में नेहा के वर्तमान आलिशान बंगला नजर आ रहा है। बता दें, बॉलीवुड में आने से पहले नेहा कक्कड़ ऋषिकेश में अपने परिवार के साथ एक कमरे के घर में रहा करती थी। इसी घर में नेहा कक्कड़ का जन्म हुआ था। नेहा कक्कड़ और उनका परिवार जगरातों में भजन गाय करता था और इसी गायकी ने उन्हें इंडियन आइडल के मंच पर बतौर कंटेस्टेंट पहुंचाया था। नेहा कक्कड़ ने अपने नए और पुराने घर की तस्वीर शेयर करते हुए कैप्शन में लिखा , ये वो बंगला है जो अभी हमारा है और दूसरा घर ऋषिकेश जहां मैं पैदा हुई थी। तब हमारी पूरी फैमिली के ही एक कमरे में रहते थे। वो घर भी नहीं था बल्कि हम किराए पर रहते थे। मेरी मां ने एक मेज रखकर किचन बनाया हुआ था। जब मैं भी इसी शहर में अपने बंगले को देखती हूं तो हमेशा भावुक हो जाती हूं। नेहा ने पोस्ट में अपने माता पिता और परिवार का भी शुक्रिया किया है और माता रानी को भी आशीर्वाद के लिए आभार जताया है। नेहा के फैंस उनके इस पोस्ट की खूब तारीफ कर रहे है और कमेंट्स में अपनी प्रतिक्रियाएं दे रहे है।

महिलाओं पर बनी हैं ये फिल्में

बॉलीवुड भी है महिलाओं के धैर्य-शौर्य का कायल

घर, समाज, देश और दुनिया बिना महिलाओं की कल्पना भी नहीं की जा सकती है

घर, समाज, देश और दुनिया बिना महिलाओं के कल्पना भी नहीं की जा सकती है। आज महिलाएं ना सिर्फ घर के कामों में पारंगत हैं बल्कि ऑफिस से लेकर पॉलिटिक्स और स्पोर्ट्स में भी परचम लहरा रही हैं। देश और दुनिया की सभी महिलाओं के त्याग और सम्मान में हर साल 8 मार्च को इंटरनेशल वुमेंस डे के रूप में सेलिब्रेट किया जाता है।बात करें अगर एक्टिंग की दुनिया और बॉलीवुड की तो सिनेमा जगत में कुछ ऐसी फिल्में बनी हैं जो पूरी तरह से महिलाओं के लिए और महिलाओं पर आधारित है। आज वुमेंस डे पर बात कुछ ऐसी ही फिल्मों की जिन्होंने ना सिर्फ बॉक्स ऑफिस पर धमाल मचाया बल्कि महिलाओं के अस्तित्व को भी दिखाया।

मदर इंडिया (1957)

ऐसा नहीं है कि बॉलीवुड में महिलाओं पर आधारित फिल्में हाल ही में बनना शुरू हुई हैं। दशकों पहले से ही महिलाओं के ऊपर फिल्म बना करती थीं। जिसमें सबसे खूबसूरत फिल्म है मदर इंडिया। इंडियन सिनेमा की कुछ दिग्गज और मील का पत्थर फिल्म कही जा सकती है। नरगिस की ये फिल्म किस्मत और एक अकेली महिला की हिम्मत की कहानी है।

मिर्च मसाला (1987)

केतन मेहता की इस फिल्म की कहानी गांव की एक साधारण महिला की कहानी है जो अपने हक के लिए ना सिर्फ लड़ती है बल्कि पावरफुल अर्थारिटी को ना करने का जिम्मा उठाती है। इस फिल्म में स्मिता पाटिल के साथ नसीरुद्दीन शाह दिखाई दिए हैं।

अस्तित्व (2000)

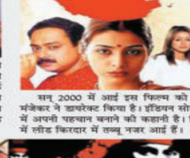

सन् 2000 में आई इस फिल्म को महेश मंजेकर ने डायरेक्ट किया है। इंडियन सोसाइटी में अपनी पहचान बनाने की कहानी है। फिल्म में लीड किरदार में तब्बू नजर आई हैं।

बैंडिट क्वीन (1994)

चंबल के बीहड़ो में रहने वाली डाकू फूलन देवी की जिंदगी को बयां करने वाली इस कहानी को आज भी लोग उसी स्ट्रॉन्गनेस से देखते हैं। सीमा बिस्वास की एक्टिंग और उनके लुक को आज भी तारीफ होती है।

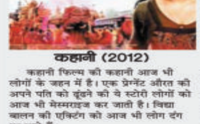

कहानी (2012)

कहानी फिल्म की कहानी आज भी लोगों के जहन में है। एक प्रेग्नेंट औरत को अपने पति को ढूंढने की ये स्टोरी लोगों को आज भी मेस्मराइज कर जाती है। विद्या बालन की एक्टिंग को आज भी लोग दंग रह जाते हैं।

इंग्लिश-विंग्लिश (2012)

लेट श्रीदेवी ने इसी फिल्म से बॉलीवुड में कमबैक किया था। एक हाउस वाइफ इस टेक्नोलॉजी भरे समाज में खुद को अपने बच्चों से और समाज से कितना दूर फील करती है। और सब के साथ कदम से कदम मिलाने के लिए वो कैसे इंग्लिश सीखती है इस जर्नी को दिखाती है इंग्लिश-विंग्लिश।

नव-चेतना के संवाहक संतश्री कमलकिशोरजी नागर

माही की गूंज, खवासा। हेमन्त चौपड़ा, वरिष्ठ पत्रकार

जिस तरह पवन (हवा) को किसी देश, जाति, वर्ग, समाज की सीमा में नहीं बांधा जा सकता है, उसी तरह संत को भी किसी देश, जाति, वर्ग, समाज आदि से जोड़कर नहीं देखा जा सकता है। पर यह विडंबना है कि हम ऐसा नहीं कर पाते है और उन्हें किसी सीमा विशेष के दायरे में बांधने की धृष्टता या गलतियां करते आ रहे हैं। यह असीम को सीम में बांधने जैसा ही है। वास्तव में एक संत किसी वर्ग विशेष का नहीं अपितु समग्र समाज की धरोहर होता हैं। ऐसे ही एक संत श्री कमलकिशोरजी नागर है, जिन्हें हम एक धर्म विशेष की सीमा में नहीं बांध सकते है। उन्हें सिर्फ एक धर्म विशेष से जोड़कर देखना हमारी कूपमंडूकता ही होगी।

प्रबुद्ध चिंतक-विचारक, रूढ़ि मुक्त समाज के हिमायती है संतश्री

वे एक कथाकार से कहीं ज्यादा एक प्रबुद्ध चिंतक, बेबाक विचारक व समाज-सुधारक है। उनके विचारों में व्यक्ति, परिवार, समाज व राष्ट्र हित की जो भावनाएं प्रस्फुटित होती है, वो बेमिसाल है। वे रूढ़ि, व्यसन मुक्त समाज निर्माण के हिमायती है। कहीं-कहीं तो उनकी विचारधारा लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की मान्यता को आगे बढ़ाती प्रतीत होती है।

राष्ट्रीयता से ओतप्रोत

वे देश की रक्षा में तैनात सैनिकों की सलामती की कामना हेतु स्वयं नित्य प्रार्थना करते है व श्रोताओं को भी इस हेतु प्रेरित करते है। राष्ट्रसंत का तमगा प्राप्त संत ऐसा करते है या नहीं? यह तो मालूम नहीं पर जिस उच्च स्तर की राष्ट्रीयता से वे ओतप्रोत है, वो अत्यंत प्रशंसनीय है। ऐसे संतों को राष्ट्रसंत जैसी प्रतिष्ठा देकर राष्ट्र स्वयं को गौरवान्वित अनुभूत कर सकता है। वे अपनी कथाओं में अक्सर राष्ट्रीयता की भावना भरते रहते है।

शेर-ए-आर्यभूमि के रूप में प्रतिष्ठित

कुरीतियों, सामाजिक रूढ़ियों, बेतुकी वर्जनाओं, विडम्बनाओं के विरुद्ध जिस मुखरता व साहस से प्रतिकार करते है, तो लगता है कोई सिंह-शावक ही ऐसा उद्घोष कर सकता है। तभी तो वे अपने अनुयायियों में शेर-ए-आर्यभूमि के रूप में प्रतिष्ठित हो गए है।

धर्मान्तरण के विरुद्ध शंखनाद

संतश्री कमलकिशोर जी नागर

धर्मान्तरण जैसे अत्यंत ही संवेदनशील मामले का भी वे बड़ी ही साफगोई व साहस के साथ विरोध करते हैं, तब लगता है यह मामूली प्रतिकार नहीं जबरदस्त सिंहनाद है। उनके उद्घोष को सभा में जो समर्थन मिलता है, वो देखते ही बनता हैं। वास्तव में वे इस अंचल में नव चेतना का संचार कर रहे है। वे लोगों को समाज की मुख्य धारा से जोड़ रहे है।

198 गौशाला का संचालन

गौ-पालन से जुड़े व्यक्ति को पूछिए कि आज के समय में एक गाय का पालन करना कितना कठिन है। वैसे कालखंड में आपकी प्रेरणा से 198 गौशालाओं का सफल संचालन किसी आश्चर्य से कम नहीं है। इस आदिवासी बाहुल्य जिले के भूरा डाबरा माछलिया में एक विशाल गौशाला का संचालन कोई मामूली बात नहीं है।

व्यसन मुक्ति

आपकी प्रेरणा से लोग तेजी से शराब, मांसाहार, व्यसनों से मुक्त हो रहे है। इस अंचल से उन्हें लगाव हो गया, तो इस अंचल ने भी उन्हें सर-आंखों पर ले रखा है। यही कारण है कि, एक के बाद एक कई कथाएं हो चुकी है, और सिलसिला निरन्तर जारी है।

सामाजिक समरसता के दर्शन

उनकी सभाओं में सभी जाति-समाज वर्ग के लोगों के अलावा सभी राजनीतिक दलों के जनप्रतिनिधियों को देखा जा सकता है। कई दफे तो एक-दूसरे के धुर्र विरोधी भी साथ-साथ कथा सुनते देखे गए है। जिसका उदाहरण झाबुआ विधायक -पूर्व केंद्रीय मंत्री कांतिलाल भूरिया व क्षेत्रीय सांसद गुमानसिंह डामोर को देखा जा सकता है।

खर्चीले आयोजनों के खिलाफ

वे खर्चीले धार्मिक, सामाजिक व विवाह आयोजन का भी पुरजोर विरोध करते हैं। वे विवाह समारोह के रात्रि में आयोजन के खिलाफ है। रात्रि में विवाह आयोजन एक मुगलकालीन मजबूरी थीं।

जबरदस्त प्रतिसाद व अनुशासन

आज लोगों को इकट्ठा करने के लिए कई उपक्रम किए जाते है व धार्मिक आयोजनों से तो वैसे ही कन्नी काटते हैं, ऐसे में उनकी कथाओं में बीस-पच्चीस हजार की उपस्थिति के बहुत मायने है। सभा में भी गजब का अनुशासन। कम से कम तीन घंटे उनकी कथा चलती है पर कोई कोलाहल नहीं।

मितव्ययिता के पक्षधर

उनकी कथा में कोई भंडारा जैसा नहीं होता है। व्यवस्था से जुड़े व चंद अन्य लोगों को छोड़कर, कथा के दौरान जो रात्रि में वहीं विश्राम करते है, वे ही लोग भोजन करते हैं। बहुसंख्य तो कथा-श्रवण कर ही चले जाते है। भोजन में तीन-चार आयटम से ज्यादा नहीं होते है। उनका मानना है कि आयटम की संख्या कम होने से धार्मिक आयोजनों को मितव्ययी बनाया जा सकता है। अपने आपको जो बहुत प्रगतिशील समाज का मानते है उनके लिए यह एक बहुत बड़ा संदेश है।

राष्ट्रीय स्तर पर आंकलन की जरूरत

स्थापित पूर्वाग्रहों को छोड़कर, धर्म-पंथ की बाड़ेबन्दी से ऊपर उठकर यदि हम उनका आंकलन करते है, तो भारत भूमि को निहाल करने वाला मामूली दिखाई पड़ने वाला पर एक महान विलक्षण विचारक, चिंतक, समाज सुधारक है। जिसका राष्ट्रवासियों ने तो सही मूल्यांकन कर लिया है, पर राष्ट्र का शीर्ष नेतृत्व सही मायने में आंकलन नहीं कर पाया, क्योंकि किसी की जी-हजूरी उनकी फितरत में नहीं है। हालांकि न तो वे, न उनका अनुयायी वर्ग किसी पद-पदवी या अलंकरण का आंकाक्षी या मोहताज नहीं है। पर उनकी काबिलियत, योग्यता व ऊंचाई की नजरअंदाजी शीर्ष नेतृत्व की नादानी को ही इंगित करेंगी। ऐसी विचारशील शख्सियतों के विचारों का राष्ट्रीय स्तर पर उपयोग किया जाना चाहिए। ठेठ देशी जीवन शैली को जीने वाले,अनुयायियों में नवचेतना के संवाहक बन चुके, इस महर्षि को इस अंचल की राम-राम।

एक-दो दिन में हो सकता है हत्या का मामला दर्ज

मामलाः बोलासा घाट में मिली महिला-पुरूष की लाश का

माही की गूंज ,पेटलावद/रायपुरिया। गत मंगलवार की सुबह रायपुरिया थाना क्षेत्र के बोलासा घाट में संदिग्ध अवस्था में मिली महिला व पुरुष की लाश के मामले में एक-दो दिन में हत्या का मामला दर्ज हो सकता है। पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार शवों की पोस्टमॉर्टम रिर्पोट में दोनों की हत्या की पुष्टि हो रही है। पुलिस फिलहाल मामले की जांच कर सभी संदिग्धों से पूछताछ कर रही है। ज्ञात हो कि जिस दशा में पुलिस ने लाश बराबद की थी, उसके बाद से ही दोनों की हत्या के कयास लगाये जा रहे थे। लेकिन पुलिस कुछ भी कहने बच रही थी और पोस्टमार्टम रिर्पोट आने का इंतजार कर रही हैं। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार दोनों महिला पुरूष को गला दबाकर और वाहन के पीछे बांध कर खसीट कर मारा गया है। मामला प्रेम प्रसंग और अवैध संबंधों से जुड़ा हो सकता है। जिसके परिणाम स्वरूप घटना को अंजाम दिया गया है। पुलिस दोनों मृतकों के परिवार सहित संदिग्धों से पूछताछ कर रही है। जल्द ही पुलिस मामले में प्रकरण दर्ज कर पूरे घटनाक्रम का खुलासा कर सकती है। पुलिस अधीक्षक विनीत जैन का कहना है कि जैसे मामले में सफलता मिलेगी, जानकारी दी जाएगी।

अतिथि शिक्षकों की सेवाएं 30 अप्रैल तक लेने के निर्देश

माही की गूंज, झाबुआ। अतिथि शिक्षकों की सेवाएं 30 अप्रैल तक लेने के निर्देश लोक शिक्षण की आयुक्त जयश्री कियावत ने समस्त जिला शिक्षा अधिकारी, समस्त विकासखंड शिक्षा अधिकारी एवं समस्त संकुल प्राचार्यो को दिए है। उन्होंने कहा कि विद्यालयों में शिक्षकों की रिक्ति, अवकाश पर जाने से शाला में सत्र 2019-20 में अतिथि शिक्षकों को रखा गया था। मार्च माह में स्थानीय परीक्षा, मूल्यांकन तथा परीक्षाफल तैयार कर परीक्षा परिणाम की घोषणा इत्यादि महत्वपूर्ण कार्य संपादित होने तक आगामी नवीन सत्र 2020-21 में 1 से 30 अप्रैल तक कक्षाओं के अध्यापन कार्य की दृष्टि से कार्य कर रहे अतिथि शिक्षकों की सेवाएं को 30 अप्रैल तक ली जाए।

दो मंजिला मकान को छुपाकर शासकीय भूमि हड़पने का किया प्रयास, नहीं हटा अतिक्रमण

पटवारी की रिर्पोट में पक्के मकान का उल्लेख, फिर भी प्रशासन नही जागा

माही की गूंज, पेटलावद। राकेश गेहलोत

तहसील न्यायालय से अतिक्रमण हटाने के आदेश के बाद भी अतिक्रमणकर्ता द्वारा अतिक्रमण नहीं हटाये जाने और प्रशासन द्वारा अपने ही आदेश के पालन से संबंध में कार्यवाही नहीं करने के कारण शिकायतकर्ता बुर्जुग को कार्यवाही के लिए परेशान होने और अधिकारियों के चक्कर लगाने के मामले में पिछले अंक में समाचार प्रकाशित किया था । मामले में जानकारी की प्रमाणित प्रति मिलने पर पाया कि पूरे मामले में अतिक्रमणकर्ता राजमल राठौड द्वारा तहसील न्यायालय को गुमराह करते हुए झूठा जवाब पेश किया। जिसमें अतिक्रमणकर्ता द्वारा किसी प्रकार से शासकीय भूमि पर कब्जा नहीं होना बता कर केवल अपने पशु बांधने की बात कही गई। साथ ही बताया कि उसी से उसका रोजगार और घर चलता है, जबकि पटवारी हल्का नंबर 45 ग्राम खोरिया के पटवारी द्वारा मामले में जांच के बाद प्रस्तुत जवाब में बताया गया कि राजमल पिता कन्हैयालाल राठौर द्वारा सर्वे नंबर 148‹2 मद ना.का.का. रकबा 1.00 हैक्टर की भूमि पर लगभग 250वर्ग मीटर भूमि पर अर्द्ध पक्का मकान जिसकी छत पतरे की बनी है। उस पर कब्जा कर रखा है। उक्त अतिक्रमित भूमि के सामने ही अतिक्रमणकर्ता को शासकीय पट्टा प्राप्त है। जिस पर पक्का दो मंजिला मकान बना होकर परिवार निवासरत है। मामले में अतिक्रमणकर्ता द्वारा न्यायालय को गुमराह कर स्वयं को गरीब और मजदूर बताकर उक्त शासकीय भूमि को हथियाने और मामले को रफा-दफा करने का प्रयास किया गया। न्यायालय के अतिक्रमण हटाने के आदेश के बाद भी अतिक्रमणकर्ता राजमल राठौर ने अतिक्रमण नहीं हटाया और न ही प्रशासन ने इस ओर कोई प्रयास किए। जबकि अतिक्रमणकर्ता द्वारा अतिक्रमण स्वीकार कर न्यायलय द्वारा 500 रूपए का अर्थदंड जमा करवा दिया गया। शिकायतकर्ता रामलाल पिता गणपत सोंलकी ने बताया कि विपक्षी असल में भू-माफिया की श्रेणी में आता है। राजमल द्वारा एक नहीं बल्कि दो तीन शासकीय भूमि पर कब्जा कर रखा है और जिस भूमि पर शासन द्वारा पट्टा दिया जाना बताया जा रहा है उस पर अधिक निर्माण कर आसपास खाली पडी शासकीय भूमि पर कब्जा कर लिया है। शिकायतकर्ता का आरोप है कि अतिक्रमणकर्ता द्वारा न्यायालय में झूठा जवाब प्रस्तुत किया गया। जिसमें उसके द्वारा जगह नहीं होने का कहा जबकि स्वयं के पास ग्राम पंचायत खोरिया में ही दो मंजिला मकान है। जिसमें अतिक्रमणकर्ता परिवार सहित निवासरत है। वहीं नगर पेटलावद में अतिक्रमणकर्ता की पत्नि नंदीबाई पति राजमल राठौर के नाम से सर्वे नंबर 2042‹3ध्मिन-4 पर मकान बना हुआ है, जो विपक्षी द्वारा किराये पर चढा रखा हैं। शिकायतकर्ता रामलाल सोंलकी तहसील न्यायालय के निर्णय के बाद से शासकीय भूमि से अवैध अतिक्रमण हटावने के लिए चक्कर लगा रहा है। मामले की शिकायत सीएम हेल्प लाइन और जन सुनवाई में कलेक्टर के समक्ष की जा चुकी है। जन सुनवाई क्रमांक 49696 में दर्ज शिकायत में जिला कलेक्टर द्वारा तहसीलदार पेटलावद को अपने आदेश के क्रियान्वन कर सुचित करने के निर्देश भेजे गये, लेकिन तहसील न्यायालय की ओर से अब तक किसी प्रकार कार्यवाही नहीं हो पाई है ।

राजमल राठौड़ द्वारा अतिक्रमण की गई शासकीय भूमि जिस हटाने के आदेश हो चुके हैं ।

अतिक्रमण की गई भूमि के ठीक सामने अतिक्रमण कर्ता के दो मंजिला पक्का मकान।

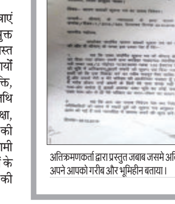

अतिक्रमणकर्ता द्वारा प्रस्तुत जबाब जसमे अतिक्रमणकर्ता ने अपने आपको गरीब और भूमिहीन बताया।

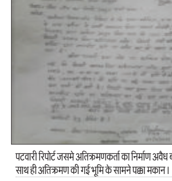

पटवारी रिपोर्ट जसमे अतिक्रमणकर्ता का निर्माण अवैध बताया साथ ही अतिक्रमण की गई भूमि के सामने पक्का मकान।

सड़क किनारे बने शौचालय बता रहे भ्रष्टाचार की कहानी

स्वच्छ भारत के नाम पर किया जा रहा घोटाला

माही की गूंज, बामनिया। गौरव भण्डारी

स्वच्छ भारत अभियान में ग्राम पंचायतों के माध्यम से बनाये जाने शौचालयों में जमकर भ्रष्टाचार किया जा रहा है। आलम ये है कि ग्राम पंचायत के माध्यम से रोड किनारे किए गए घटिया शौचालय निर्माण कार्य को देखने के बाद भी किसी प्रकार की कार्यवाही नहीं हो रही हैं। मामला ग्राम पंचायत बामनिया का है, जहां ग्राम के चित्तौडीरूडी फलिया जो कि रतलाम-झाबुआ मुख्य रोड पर बसा हुआ है। ग्राम पंचायत बामनिया द्वारा बनाए गए स्वच्छ भारत अभियान के शौचालय पूरी तरह से टुट-फुट चुके हैं। शौचालय उपयोग में नहीं आ रहे हैं और निर्माण की शासन की द्वारा जारी गाईड लाइन से नहीं किया गया। ईटों की जगह ब्लॉक से शौचालय का निर्माण किया गया। जिससे शौचालय उपयोग में आने से पहले ही टूट गए। बताया जा रहा है कि उक्त शौचालयों ग्राम पंचायत ने सेटिंग कर ठेकेदार के माध्यम से बनाए गए। शासन की ओर से शौचालय निर्माण के लिए हितग्राही को बारह हजार रूपए दिए गए है। जिस प्रकार का निर्माण ग्राम पंचायत द्वारा कराए गए, उसमें लगभग पांच हजार रूपए तक भी खर्च नहीं किए जा रहे हैं। वार्ड के पंच तक के शौचालय की स्थिति गंभीर है। पंच गुमानसिंह डामर ने बताया कि ग्राम पंचायत द्वारा ठेकेदार द्वारा शौचालय का निर्माण कराया गया। ग्राम पंचायत द्वारा कराए जा रहे घटिया शौचालय के कारण शासन की स्वच्छ भारत योजना पर भी पानी फिरता जा रहा है। ग्रामीणों को आज भी खुले में शौच पर मजूबर होना पड़ रहा हैं।

शैक्षणिक सत्र 2020-21 के लिए शिक्षण संस्थाओं में अवकाश घोषित

माही की गूंज, झाबुआ।

प्रदेश की समस्त शिक्षण संस्थाओं में 01 अप्रैल 2020 से प्रारंभ होने वाले शैक्षणिक सत्र 2020-21 के लिए स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा अवकाश घोषित किए गए हैं। जारी आदेश के तहत विद्यार्थियों के लिए ग्रीष्मकालीन अवकाश 01 मई से 16 जून 2020 तक एवं शिक्षकों के लिए ग्रीष्मकालीन अवकाश 01 मई से 09 जून 2020 तक घोषित किए गए हैं।

इसी प्रकार विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के लिए दशहरा अवकाश 24 अक्टूबर से 27 अक्टूबर 2020 तक, दीपावली अवकाश 12 नवम्बर से 17 नवम्बर 2020 तक एवं शीतकालीन अवकाश 25 दिसम्बर से 31 दिसम्बर 2020 तक घोषित किए गए हैं। दिनांक 10 जून से 15 जून 2020 के दौरान शिक्षक स्कूलों की स्वच्छता योजना, प्रयोगशालाओं की तैयारियां, माहवार शिक्षण, शैक्षणेत्तर गतिविधियों के आयोजन की समय सारणी, लेसन प्लान, पालक शिक्षक संघ से अधिकाधिक नामांकन तथा ठहराव दर के लिए भेंटध्बैठके, फीडिंग, मिडिल स्कूल से कक्षा 9 में प्रवेश के लिए सम्पर्क, ब्रिज कोर्स तथा रिमेडियल टीचिंग आदि गतिविधियां संचालित करेंगे।

राजनैतिक संसार में अस्त होता सिंधिया सूर्य?

माही की गूंज, झाबुआ।

मध्यप्रदेश में 15 वर्ष तक वनवास भोग चुकी कांग्रेस के लिए पिछला वर्ष सुखद था, किंतु चुनावी नतीजे पूर्णतः कांग्रेस के पक्ष में नही थे। सरकार बनते ही विपक्षियों का दावा तो यह था कि यह सरकार 8 माह भी नहीं चलेगी, परंतु कमलनाथ का नेतृत्व सरकार को डेढ़ वर्ष तक ले गया। अंर्तकलह कांग्रेस में शनि बनकर उभरा और नतीजा सबके सामने है। सिंधिया समर्थकों का आरोप रहा है कि कांग्रेस ने हमेशा उन्हें उपेक्षित किया है। परिस्थितियों से भी सब परिचित है। चुनाव के पूर्व कांग्रेस के स्टार प्रचारक रहे ज्योतिरादित्य सिंधिया सरकार बनते ही प्रदेश की राजनीति से गायब हो गए। स्वयं सिंधिया ने कई बार मंचों से सरकार पर सवाल साधे है, तो सरकार में दिग्विजयसिंह को आवश्यकता से अधिक सम्मान भी दिया गया। फिर चाहे प्रदेश की जनता उन्हें पसंद करती हो या न हो। यह वहीं दिग्विजयसिंह है जिनके सामने गोवा में भाजपा ने गठबंधन की सरकार बनाई थी, जबकि विधायक कांग्रेस के हिस्से में ज्यादा थे। कुल मिलाकर बूढ़ी हो चुकी खटारा बसों में सवार कांग्रेस को सिंधिया समान मर्सिडीज की सवारी रास नहीं आई। इस चुनावी दंगल में भाजपा ने कोई आश्चर्यचकित करने वाला कार्य नहीं किया, सिर्फ भाग्य ही भाजपा के पक्ष में था। उपेक्षित सिंधिया को पनाह देकर भाजपा ने अपने भाग्य को भुनाया नतीजन कांग्रेस अपनी सरकार गंवा बैठेगी।

सोमवार देर शाम से मंगलवार तक ज्योतिरादित्य सिंधिया की मुलाकातें भाजपा हाईकमानों के साथ होती रही। ज्योतिरादित्य सिंधिया बुधवार को भाजपा में शामिल भी हो गए है। ज्योतिरादित्य ने कांग्रेस की राष्ट्रीय अध्यक्ष सोनिया गांधी को प्राथमिक सदस्यता से दिए इस्तीफे में उल्लेख यह भी किया कि कांग्रेस में रहकर जनता की सेवा करना मुश्किल होने लगा था। फिर भी ज्योतिरादित्य की यह लड़ाई कुर्सी की है अथवा विचारधारा की, यह स्पष्ट नहीं। प्रचारित तो विचारधारा की लड़ाई किया जा रहा है, किंतु भाजपा में शामिल होकर विचारधारा को नई उर्जा मिलेगी इसमें संदेह है। भाजपा वही पार्टी है तो सिंधिया घराने को अंग्रेजों के साथ मिले होने तथा रानी लक्ष्मीबाई का साथ नहीं देने का आरोप लगाती रही है। कयास लगाए जा रहे है ज्योतिरादित्य को केन्द्रीय मंत्री बनाया जाएगा किंतु मंत्रालय कौन सा होगा, यह स्पष्ट नही है। ज्योतिरादित्य को भाजपा यदि केन्द्रीय मंत्री बनाती भी है तो प्रदेश में हुआ यह ड्रामा कुर्सी की लड़ाई परिभाषित होगा और सिंधिया की व्यक्तिगत छवि खराब होने की पूर्ण संभावना है जो पुनः बनना भी मुश्किल है। कांग्रेस ने पहले की सिंधिया को प्रदेश की राजनीति से दूर रखा था। हालांकि कांग्रेस के पास फिलहाल प्रदेश स्तरीय राजनीति ही बची थी, फिर भी भाजपा सिंधिया को प्रदेश में सम्मानजनक स्थान देगी, इस पर संदेह है। कारण यही है कि भाजपा के पास ऐसे पूर्व मंत्रियों और नेताओं की लंबी लाईन लगी है, जो प्रदेश स्तरीय राजनीति में बड़ी दावेदारी करने में सक्षम है। भाजपा तो ऐन चुनाव से पूर्व शिवराजसिंह चौहान से भी उबने लगी थी, जिनकी झलक चुनाव पूर्व स्वयं शिवराजसिंह चौहान की सभाओं और भाषणों में दिखने लगी थी। कैलाश विजयवर्गीय और शिवराजसिंह चौहान के मध्य मतभेदों को भी राजनीतिक पंडित अच्छी तरह से समझते है। भाजपा में पूर्व से ही माहौल रस्साकशी का है, ऐसे में सिंधिया को भाजपा उचित स्थान देगी अथवा सिंधिया विचारधारा पर कार्य करेंगे, दोनों पर यकीन नहीं होता। स्थितियां कोई भी हो नुकसान सिंधिया का ही है और कांग्रेस में रहकर फायदा भी नही था। आश्चर्य नहीं कि राजनीतिक संसार के भविष्य में सिंधिया नामक सूर्य हो अस्त हो जाए।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, अलका भटेवरा द्वारा काम्पेक प्रिन्टर्स प्रायवेट लिमिटेड, 3/54, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 499, बाजना मार्ग, गणेश मंदिर के सामने, खवासा, तहसील थांदला, जिला-झाबुआ (म.प्र.) से प्रकाशित। प्रधान संपादक- संजय भटेवरा, संपादक- धर्मेन्द्र पंचाल । मोबाइल नं. -95898-82798 (सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र झाबुआ रहेगा) आरएनआई नंबर- एमपीएचआईएन/2018/76422